पलाश

भाग 3

पलाश

भाग 3

(द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए हिंदी की तृतीय पुस्तक)

इंद्रसेन शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मई 1995
ज्येष्ठ 1917
PD 5T ML

प्रकाशन सहयोग

यू. प्रभाकर राव *अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग*

पूरन मल *मुख्य संपादक*
दिनेश सक्सेना *संपादक*
एम. लाल *सम्पादन सहायक*

शिव कुमार *उत्पादन अधिकारी*
अरुन चितकारा *सहायक उत्पादन अधिकारी*
सुबोध श्रीवास्तव *उत्पादन सहायक*
चंद्र प्रकाश टंडन *कला अधिकारी*

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110016	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस चितलापक्कम, क्रोमपेट मद्रास 600064	नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380014	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस 32, बी.टी. रोड, सुखचर 24 परगना 743179

रु. 17.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन कम्पोज़र्स, 92-बी, गली नं. 4, कृष्णा नगर, सफदरजंग इन्क्लेव, नई दिल्ली 110029 द्वारा लेज़र कंपोज होकर अलेजा प्रिंटर्स, सी-11, सेक्टर-10, नोएडा, उ.प्र. द्वारा मुद्रित।

आमुख

विद्यालय स्तर पर भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में त्रिभाषा-सूत्र लागू किए जाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस दृष्टि से हिंदी भाषा के अध्ययन-अध्यापन की तीन स्थितियाँ हो जाती हैं:

1. प्रथम भाषा के रूप में, जहाँ पहली कक्षा से हिंदी पढ़ाई जाती है,
2. द्वितीय भाषा के रूप में, जहाँ छठी कक्षा से हिंदी पढ़ाई जाती है, और
3. तृतीय भाषा के रूप में, जहाँ हिंदी भाषा सातवीं कक्षा से पढ़ाई जाती है।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के पठन-पाठन की अपनी विशिष्ट अपेक्षाएं होती हैं, इसीलिए अखिल भारतीय स्तर पर विद्यार्थियों के परिवेशगत वैविध्य के अनुरूप एक भिन्न पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के पाठ्यक्रम और पाठ्यसामग्री के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत निश्चित करने के लिए जनवरी 1990 में हैदराबाद में एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी में इस क्षेत्र में काम करने वाले देश के प्रमुख शिक्षाविदों, भाषाविदों, प्रशिक्षकों और शिक्षकों ने भाग लिया। इस गोष्ठी में सुझाए गए सिद्धांतों को ध्यान में रखकर परिषद् ने द्वितीय भाषा हिंदी का एक पाठ्यक्रम तैयार किया और तदनुरूप पाठ्यपुस्तकों और पाठ्य-सामग्री के निर्माण का कार्य आरंभ किया। इसी कड़ी के अंतर्गत प्रस्तुत पुस्तक ''पलाश'' भाग-3 द्वितीय भाषा के रूप में आठवीं कक्षा के लिए हिन्दी की पाठ्यपुस्तक है।

इस पुस्तक के निर्माण में कुछ विशिष्ट बातों का ध्यान रखा गया है जिससे यह विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके। वे इस प्रकार हैं:

1. रचनाएँ विद्यार्थियों के स्तर और उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी जाएँ।
2. रचनाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उल्लिखित दिशा-निर्देशक तत्वों का समावेश किया जाए।
3. रचनाओं में भारत की सामाजिक संस्कृति और जीवन मूल्यों का समावेश हो।

4. रचनाएँ सरल, बोधगम्य और संक्षिप्त हों तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त हों।
5. पाठ हिंदी की विशिष्ट वाक्य-संरचनाओं को ऐसी विधि से प्रस्तुत करें जो विद्यार्थियों के लिए रोचक और ग्राह्य हों।

इस कार्य से संबंधित मार्गदर्शक सिद्धांतों के निर्धारण के लिए हैदराबाद में आयोजित विचार-गोष्ठी में भाग लेने वाले सभी भाषाविदों, शिक्षाविदों और विशेषज्ञों का मैं आभारी हूँ। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की अकादमिक शाखा के तत्कालीन निदेशक डा० कृष्णदेव शर्मा और हिंदी की पाठ्यक्रम समिति के तत्कालीन अध्यक्ष स्वर्गीय प्रोफेसर रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भी मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। पुस्तक को साकार रूप देने में सहयोग करने वाले विषय-विशेषज्ञों, अधिकारी विद्वानों तथा अनुभवी शिक्षकों के प्रति भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

पाठ्यसामग्री के संयोजन और संपादन के लिए परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग में अपने सहयोगी डा. इंद्रसेन शर्मा के प्रति मैं अपना धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

आशा है, यह पुस्तक द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों के भाषा-ज्ञान का विकास करने में मदद करेगी। पुस्तक में संशोधन एवं परिष्कार के लिए सुधी विद्वानों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के सुझावों का स्वागत है।

अशोक कुमार शर्मा

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

भूमिका

भारत के बहुभाषिक स्वरूप को ध्यान में रखते हुए हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में "त्रिभाषा-सूत्र" के प्रभावी कार्यान्वयन पर विशेष बल दिया गया है। इसके अनुसार भारतीय विद्यालयी शिक्षा में पठन-पाठन की दृष्टि से हिंदी की तीन भूमिकाएँ मानी गई हैं :

1. प्रथम भाषा के रूप में दस वर्ष (पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक)
2. द्वितीय भाषा के रूप में कम-से-कम पाँच वर्ष (छठी कक्षा से दसवीं कक्षा तक)
3. तृतीय भाषा के रूप में कम-से-कम चार वर्ष (सातवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक)

उपर्युक्त भूमिकाओं को देखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की आवश्यकता अनुभव की। आठवीं कक्षा के लिए तैयार की गई प्रस्तुत पुस्तक "पलाश" भाग-3 उसी दिशा में एक कदम है। इससे पूर्व परिषद् द्वारा छठी तथा सातवीं कक्षाओं के लिए क्रमशः "पलाश" भाग-1 तथा "पलाश" भाग-2 पुस्तकें तैयार की जा चुकी हैं।

द्वितीय भाषा के रूप में भाषा-शिक्षण के उद्देश्य प्रथम भाषा के शिक्षण उद्देश्यों से भिन्न होते हैं। द्वितीय भाषा के अध्ययन-अध्यापन में भाषा के प्रयोजनमूलक पक्ष पर अधिक बल दिया जाता है क्योंकि इसका लक्ष्य शिक्षार्थी के भाषिक व्यवहार में कुशलता उत्पन्न करना होता है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पाठ्य-पुस्तक की शिक्षण-सामग्री का निर्माण किया गया है। निम्नांकित विवेचन से उपर्युक्त दृष्टिकोण और भी अधिक स्पष्ट हो जाएगा :

1. इस पुस्तक में कुल तीस पाठ हैं। इनमें से आठ कविता-पाठ हैं तथा शेष गद्य-पाठ। कविताएँ किशोर-मन को सहज आकृष्ट करती हैं, चाहे वे प्रथम भाषा की हों अथवा द्वितीय भाषा की। वे छात्रों की रागात्मक वृत्ति को जगाकर उनमें निहित सौंदर्य-बोध को उजागर करती हैं। इतना ही नहीं अपनी लयात्मकता, गेयता एवं ध्वन्यात्मकता के कारण वे द्वितीय भाषा के अधिगम को रोचक और सरस भी बनाती हैं। प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक में कविताओं का चयन इसी उद्देश्य से किया गया है।
2. अधिकांश गद्य-पाठ व्याकरणिक संरचनाओं पर आधारित हैं। पाठ के आरंभ में ही "संरचना-संकेत" शीर्षक के अंतर्गत संबंधित संरचनाओं का उल्लेख कर दिया गया है जिससे कि कक्षा-शिक्षण के समय अध्यापक उनके अभ्यास की ओर सचेत रहें। पाठ-लेखन में यह भी प्रयत्न किया गया है

कि संबंधित संरचनाएँ पाठ में सहज रूप में आई हुई प्रतीत हों। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि द्वितीय भाषा की पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य शिक्षार्थी को मात्र लक्ष्य-भाषा की विभिन्न संरचनाओं का अभ्यास कराना अथवा भाषा-कौशलों पर समुचित अधिकार प्राप्त कराना ही नहीं अपितु उक्त भाषा के प्रति सौन्दर्य-बोध उत्पन्न कराना भी है। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि निर्धारित पाठ्यपुस्तक में ऐसी पाठ्यसामग्री रखी जाए जो छात्रों की संवेगात्मक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके और भाषा-लक्ष्य के प्रति उनमें सहज अनुराग जगा सके। किशोर-मन महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंगों से प्रेरणा प्राप्त करता है। वह देश-विदेश के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है और करुणा, दया, प्रेम, सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्यों को सराहता है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में कहानी (लोक-कथा), संवाद, एकांकी, जीवनी, संस्मरण आदि विधाओं के माध्यम से छात्रों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था उत्पन्न करने का प्रयास किया गया है। महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों तथा उदात्त कार्यों, सेवा, त्याग, आत्म-बलिदान आदि की दृष्टि से "स्वामी विवेकानंद" तथा "आज़ादी की कहानी" पाठ अवलोकनीय हैं।

कठिनाइयों तथा बाधाओं के बावजूद आगे बढ़ने की भावना "चलना हमारा काम" कविता में देखने को मिलती है। यही भाव "आज़ादी की कहानी" में भी परिलक्षित होता है। देश-विदेश के संबंध में सामान्य ज्ञान की दृष्टि से "बदरीनाथ की ओर", "यात्रा पूर्वांचल की", "हमारा पड़ोसी देश नेपाल" और "हमारे अपने मेहमान" आदि पाठ उल्लेखनीय हैं। ये पाठ यात्रा के संबंध में छात्रों का ज्ञान-वर्धन ही नहीं करते अपितु देश-विदेश के प्राकृतिक सौंदर्य तथा भारत की विविधता में एकता का बोध भी कराते हैं। "लालच बुरी बला" पाठ में जहाँ एक ओर लालच की भावना पर कटाक्ष किया गया है वहीं दूसरी ओर बुद्धि-चातुर्य का प्रभाव भी दर्शाया गया है। "मखमल की जूती" में बुद्धि की महिमा को बड़े रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। स्नेह, प्रेम, धर्म-सहिष्णुता, करुणा, दया, सहानुभूति जैसे मानवीय मूल्यों के महत्व को "कुछ सुनहरी यादें", "वे आँखें", "परीक्षा", "ऐसा था दारा" तथा "पूर्ण प्रकाश नहीं मानूँगा" पाठों में उभारा गया है। पाठों के चयन और निर्माण में यह भी प्रयास किया गया है कि समुचित पाठ्यसामग्री आज के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से भी प्रस्तुत की जाए। इस दृष्टि से "बाल-सभा", "गणतंत्र-दिवस" पाठ दृष्टव्य हैं। "चिड़ियाघर की सैर" और "वनदेवी" जैसे पाठ प्रकृति-प्रेम के महत्व तथा पर्यावरण के प्रति सजगता का बोध कराते हैं। "विशाखा का सपना" जीवन में स्वच्छता के महत्व को प्रतिपादित करता है। "दूर-संचार के साधन" तथा "अस्पताल" जैसे पाठ वैज्ञानिक प्रगति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को उजागर करते हैं। "अंतिम प्रयास" में अहिंसा एवं शांति के महत्त्व को उभारा गया है। "महासेतु का निर्माण" कविता "आज के बच्चे

कल के निर्माता'' उक्ति को चरितार्थ करती है। ''आप से मिलिए'' पाठ शिष्टाचार की आवश्यकता पर बल देता है।

''हमारे अपने मेहमान'' पाठ हमें भारत की भौगोलिक सीमाओं को लांघकर लघु-भारत के दर्शन कराता है। मॉरीशस, फिजी आदि देशों में बसे प्रवासी भारतीयों में भावात्मक एकता की दृष्टि से प्रस्तुत पाठ दृष्टव्य है।

3. प्रश्न-अभ्यासों की रचना में यह चेष्टा की गई है कि वे पाठ्यपुस्तक को समझने-समझाने में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों की सहायता तो करें ही, साथ ही शिक्षार्थी को स्व-अधिगम की ओर भी प्रवृत्त करें। इस दृष्टि से अभ्यासों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया हैं :

1. पढ़ो और बोलो 2. पढ़ो और समझो 3. संरचना-अभ्यास
4. पढ़ो और बताओ 5. पढ़ो और लिखो तथा 6. योग्यता-विस्तार

1. पढ़ो और बोलो

इस अभ्यास को दो भागों में बाँटा गया है :

(क) ''क'' भाग के अंतर्गत पाठ में आए उन शब्दों को रखा गया है जिनके उच्चारण में शिक्षार्थियों को कठिनाई अनुभव हो सकती है। शिक्षार्थी इन शब्दों के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास करें।

(ख) ''ख'' भाग में उदाहरण के रूप में कुछ वाक्य दिए गए हैं जिन्हें सही अनुतान, उचित लहजे तथा यथास्थान बल देकर पढ़ना आवश्यक है। इससे निहित भाव या आशय स्पष्ट हो जाएगा और अर्थ का अनर्थ होने की संभावना समाप्त हो सकेगी। लिखित सामग्री में सामान्यतः प्रश्न-सूचक चिह्न, विस्मयादिबोधक-चिह्न के प्रयोग द्वारा वाक्य में निहित भाव या आशय का बोध कराया जाना आवश्यक है किंतु कई बार विधान-वाचक (सरल) वाक्य के भाव अथवा आशय के बोध के लिए उसमें आए शब्दों पर यथास्थान बल देकर पढ़ना भी आवश्यक होता है। इस दृष्टि से पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पाठों में आए निम्नलिखित वाक्य उदाहरणार्थ प्रस्तुत हैं :

1. सोने के महल में रहने का सुख भोग लिया? (वन देवी)
2. बढ़िया प्रबंध? जब प्रबंध ही नहीं तो क्या बढ़िया क्या घटिया। (बाल-सभा)
3. कहीं तरह-तरह के कबूतर थे, तो कहीं रंग-बिरंगे तोते (चिड़ियाघर की सैर)
4. उसके मन में पुनः आशा जागती, किंतु व्यर्थ! (वे आँखें)

उपर्युक्त उद्धरणों में पहला वाक्य यदि प्रश्नसूचक चिह्न पर ध्यान दिए बिना पढ़ा जाएगा तो उसका अर्थ ही बदल जाएगा। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में ''बढ़िया प्रबंध'' के बाद प्रयुक्त

प्रश्नसूचक-चिह्न को ध्यान में रखकर न पढ़ा जाए तो वक्ता के कथन का भाव ही व्यक्त नहीं हो पाएगा। तीसरे वाक्य में अल्पविराम का ध्यान रखना है और चौथे वाक्य में ''किंतु व्यर्थ'' को क्षीण स्वर में तथा निराशा के भाव के साथ पढ़ना है।

विभिन्न पाठों में आए इसी प्रकार के वाक्यों को छाँटकर अनुतान संबंधी अभ्यास दिए गए हैं।

2. पढ़ो और समझो

शिक्षार्थी की सक्रिय शब्दावली के विस्तार की दृष्टि से विभिन्न अभ्यास देना ही इस शीर्षक का उद्देश्य है। इस दृष्टि से एक ओर तो शब्द-भंडार में वृद्धि के लिए समानार्थी, विलोम, पर्याय, व्याख्या आदि युक्तियों का प्रयोग किया गया है और दूसरी ओर उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास आदि द्वारा शब्द-निर्माण की प्रक्रिया से अवगत कराया गया है। साथ ही पाठ में आए मुहावरों, विशिष्ट भाषा-प्रयोगों तथा वाक्य में शब्दों के स्थान-परिवर्तन से उत्पन्न प्रभाव की ओर भी ध्यान आकर्षित किया गया है। उदाहरणार्थ–''स्वामी विवेकानंद'' पाठ में स्वामीजी का कथन–"ब्रह्म राक्षस हो तो आओ मेरे सामने!" और "ब्रह्म राक्षस हो तो मेरे सामने आओ'' के रूप में रखकर एक ही वाक्य को दो ढंग से प्रस्तुत किए जा सकने की ओर संकेत किया गया है।

इस प्रकार के अभ्यास-कार्य पर बल देने से छात्र भाषा में शैली के महत्त्व और बात कहने के विभिन्न तरीकों को सीख सकेंगे।

3. संरचना-अभ्यास

''संरचना-संकेत'' के अंतर्गत दिए गए व्याकरणिक बिंदुओं को संरचना-अभ्यास के अंतर्गत विस्तार से लिया गया है। संरचना-अभ्यास के लिए विविध अवसर प्रदान करने की दृष्टि से वाक्य-रूपांतरण तथा वाक्य-परिवर्तन के उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। साथ ही इन अभ्यास-कार्यों द्वारा छठी-सातवीं कक्षाओं में आई संरचनाओं के पुनर्बलन को भी ध्यान में रखा गया है।

4. पढ़ो और बताओ

''पढ़ो और बताओ'' के अंतर्गत दिए गए अभ्यास-कार्यों का उद्देश्य शिक्षार्थी की बोधन क्षमता का मूल्यांकन करना है। इस दृष्टि से वस्तुनिष्ठ, बहुविकल्पीय, अनुरूपण (मिलान), रिक्त-स्थान की पूर्ति, लघूत्तरीय, निबंधात्मक आदि प्रश्नों के प्रकारों का समावेश किया गया है। इससे छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को समझने और प्रश्न की आवश्यकता के अनुसार उत्तर देने का अभ्यास हो सकेगा।

5. पढ़ो और लिखो

इस शीर्षक के अंतर्गत पाठ में आए कठिन वर्तनी वाले शब्दों तथा उपयुक्त विराम-चिह्न-सहित लेखन पर बल दिया गया है। इस प्रकार का अभ्यास शुद्ध भाषा-लेखन के साथ-साथ सुलेख के विकास में

भी उपयोगी सिद्ध होगा। कुछ ऐसे अभ्यास-कार्य भी दिए गए हैं जो पाठ में आए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करने तथा स्वतंत्र लेखन की क्षमता को विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकेंगे।

6. योग्यता-विस्तार

भाषा के सभी पाठ भाषा-अधिगम के साधन भी हैं और साध्य भी। इस संबंध में हमारा यह प्रयत्न रहा है कि शिक्षार्थी पाठ्यपुस्तक में आए पाठों को आधार बनाकर अपनी भाषा-योग्यता का विस्तार कर सकें। इसके लिए वे सुझावों के अनुसार पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य जन-संचार-माध्यमों का सहारा लेकर अपनी सृजनात्मक शक्ति का विकास कर सकेंगे।

प्रश्न-अभ्यास के संबंध में यह ध्यातव्य है कि वे अपने-आप में पूर्णता का मापदंड नहीं हैं। अध्यापक शिक्षार्थियों के परिवेश, अनुभव और उपलब्ध साधनों के अनुसार उनमें यथावश्यक परिवर्तन और परिवर्द्धन कर सकते हैं। भाषा-शिक्षण-प्रक्रिया में शिक्षक तथा शिक्षार्थी की सक्रिय प्रतिभागिता आवश्यक है। द्वितीय भाषा-शिक्षण और अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। पाठ्यपुस्तक शिक्षक एवं शिक्षार्थी को जोड़ने का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है किंतु यह उपकरण तभी सार्थक हो सकता है जब शिक्षक शिक्षार्थी की क्षमता, परिवेश एवं अनुभव-जगत को पाठ्यपुस्तक के साथ जोड़ते हुए चलें।

आशा है, प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को राष्ट्र की सामासिक संस्कृति की संवाहिका "हिंदी" से सार्थक रूप में जोड़ने में सफल होगी।

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आतमा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

विषय-सूची

पाठ 1

भारतमाता की जय

हुआ हिमालय के आँगन में मंगलमय अरुणोदय।
नव प्रभात में गूँज उठी है, भारत माता की जय।।

मेघों के घूँघट से मेघालय में उतरी किरणें।
बर्फीले शिखरों पर निखरी इंद्रधनुष-सी किरणें।
घाटी जाग गई सुनकर झरने की झर-झर-झर लय।
नव प्रभात में गूँज उठी है भारत माता की जय।।

मैदानों में निकल पड़ी हैं, कल-कल करती नदियाँ।
गंगा-गोदावरी तटों पर बीतीं कितनी सदियाँ।
वन-कुंजों में शुरू हो गया मोर-नृत्य का अभिनय।
नव प्रभात में गूँज उठी है भारत माता की जय।।

लगे सतपुड़ा के जंगल में लोक-नृत्य के मेले।
वन-उपवन में प्रकृति-नटी ने खेल मनोरम खेले।
कण-कण में जन-मन की आशा फलित हुई है निर्भय।
नव प्रभात में गूँज उठी है भारत माता की जय ॥

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

(क)

हिमालय	प्रभात	शिखरों
आँगन	घूँघट	इंद्रधनुष
मंगलमय	मेघालय	कुंजों
अरुणोदय	बर्फीले	नृत्य
अभिनय	प्रकृति	मनोरम
फलित	निर्भय	आशा

(ख) 1. घाटी जाग गई सुनकर झरने की झर-झर-झर लय।
2. मैदानों में निकल पड़ी हैं कल-कल करती नदियाँ।
3. वन-उपवन में प्रकृति-नटी ने खेल मनोरम खेले।

II. पढ़ो और समझो

मंगलमय = शुभ, कल्याणकारी
मेघालय = भारत के एक राज्य का नाम,
(मेघ+आलय) = (बादलों का घर)
बर्फीला = बर्फ जैसा ठंडा
शिखर = चोटी

सदी = शताब्दी (सौ-वर्ष)
कुंज = झुरमुट
नटी = नाटक करने वाली, अभिनेत्री
मनोरम = सुंदर
आशा फलित = आशा पूरी होना
अरुणोदय = सूर्योदय

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

1. मेघालय के घूँघट से .... ।
2. गंगा-गोदावरी तटों पर .... ।
3. कण-कण में जन-मन की .... ।

IV. पढ़ो और बताओ

1. बर्फीले शिखरों पर सूर्य की किरणें कैसी लग रही हैं ?
2. घाटी किसकी आवाज़ सुनकर जाग गई ?
3. सुबह-सुबह वन-कुंजों में क्या शुरू हुआ ?
4. हिमालय के आँगन से क्या अभिप्राय है ? सही उत्तर चुनो–
   क. भारत देश ख. हिमालय की तराई
   ग. नेपाल घ. गंगा-यमुना का मैदान
5. प्रकृति-नटी के मनोरम खेल से क्या आशय है? सही उत्तर चुनो–
   क. विविध प्रकार के मौसम ख. घने वन-उपवन
   ग. प्रकृति के तरह-तरह के रंग-रूप घ. पशु-पक्षियों की क्रीड़ाएँ

V. योग्यता-विस्तार

देश-प्रेम पर रचित कविताओं का संकलन करके भित्ति-पत्रिका तैयार करो।

पाठ 2

लालच बुरी बला

संरचना-संकेत

संयुक्त क्रिया (ले)
कहीं
शायद ही
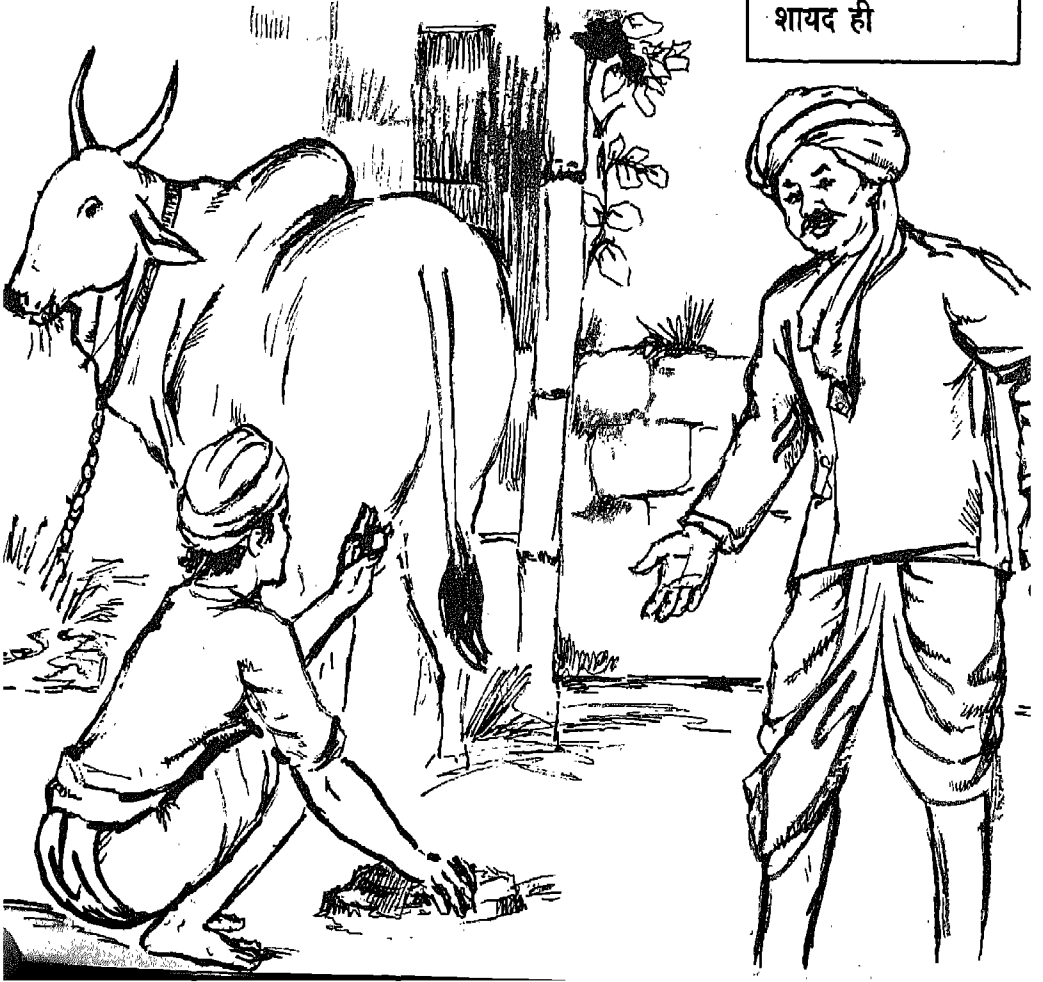
उस गाँव का साहूकार बहुत बेईमान था। लोगों को धोखा देकर उसने काफ़ी धन जमा कर लिया था। गाँव में शायद ही कोई ऐसा आदमी हो जो उसकी लूट का शिकार न बना हो।

रामू एक गरीब किसान था। रामू की माँ ने उसे बताया था कि उसके पिता धनी किसान थे। लेकिन साहूकार की चालबाज़ियों के कारण उन्हें अपनी बहुत-सी ज़मीन से हाथ धोना पड़ा। कर्ज़ चुकाते-चुकाते उनकी जान ही चली गई। यह सुनकर रामू को बहुत दुख हुआ और साहूकार से बदला लेने की आग उसके मन में भड़क उठी। वह साहूकार को सबक सिखाने की तरकीब सोचता रहता। रामू ने एक बैल खरीदा और उसके बारे में मशहूर कर दिया कि बैल के गोबर में प्रतिदिन चाँदी का एक सिक्का निकलता है।

यह बात धीरे-धीरे साहूकार के कानों तक पहुँची। पहले तो उसे विश्वास नहीं हुआ, पर उसका लालची मन नहीं माना। मौका पाकर वह रामू के घर पहुँच गया। साहूकार के सामने ही बैल ने गोबर किया। उसमें से चाँदी का एक सिक्का निकला। तब साहूकार रामू से बोला– "बेटे, यह बैल मुझे दे दो। इसकी मुँहमाँगी कीमत ले लो।"

रामू ने बैल देने में आनाकानी की और बोला– "देखिए, यह बैल पहले दो सिक्के रोज़ दिया करता था, अब पता नहीं क्यों एक ही दे रहा है।" साहूकार ने सोचा कि यह बहाने बना रहा है। वह बोला– "कोई बात नहीं। मुझे यह बैल ज़रूर चाहिए, भले ही इसके बदले में तुम बगीचे वाले खेत का आधा हिस्सा ले लो।"

अब रामू बहुत खुश था। उसे बगीचे वाले अपने खेत का आधा हिस्सा मिल गया था। यह खेत साहूकार ने बहुत साल पहले रामू के बाप से हड़प लिया था।

उधर साहूकार बैल को अपने घर ले गया। अगले दिन वह चाँदी के सिक्के का इंतज़ार करने लगा। सुबह से शाम हो गई। इस बीच बैल कई बार गोबर भी कर चुका था, पर सिक्का उसमें कहीं नहीं दिखाई दिया। झुँझलाहट में उसने बैल की पिटाई भी कर दी। मार खाते-खाते बैल बेहोश हो गया। उसने सोचा कि रामू ने अवश्य कोई चालाकी की है। गुस्से से लाल होकर वह रामू के घर गया। रामू घर पर नहीं था। साहूकार उसे ढूंढ़ते हुए खेत पर पहुँचा। इससे पहले कि साहूकार कुछ बोले रामू ने अपने पास बँधे खरगोश से कहा– "जाओ भूरा, घर जाकर अपनी माँ से कह देना कि आज साहूकार जी हमारे घर पर ही खाना खाएँगे। खीर, पूरी और अच्छे-अच्छे पकवान बनवाना। हम थोड़ी देर बाद घर आएँगे। तुम वहीं रहना। सब बातें ठीक से समझा देना"। उसने खरगोश को खोल दिया। वह उछलता हुआ चला गया।

साहूकार का गुस्सा कुछ शांत हुआ। वह सोचने लगा कि यह रामू तो अजीब आदमी है। कहीं खरगोशों से भी काम लिया जा सकता है ! आज देखता हूँ कि यह कैसे मुझे मूर्ख बनाता है। उसने कहा– "रामू, तुमने तो कहा था कि बैल रोज़ एक चाँदी का सिक्का देता है। यह बात तो सच नहीं है। तुम्हारे बैल ने तो गोबर के अलावा कुछ दिया ही नहीं।"

रामू बोला– "महाराज, मैंने पहले ही बतलाया था कि बैल को कुछ हो गया है, लेकिन ये बातें बाद में पहले घर चलकर खाना खा लीजिए।" वे दोनों घर के लिए चल दिए।

रामू को पता था कि जब असली बात का पता चलेगा तो साहूकार बैल वापस करने की बात अवश्य करेगा। इसलिए रामू दो खरगोश ले आया था जो बिल्कुल एक-जैसे थे। उनमें से एक को घर बाँध आया था और दूसरे को अपने साथ खेत पर ले गया था। पत्नी से वह अच्छे-अच्छे पकवान बनाने के

लिए कह गया था। उसने जिस खरगोश को घर जाने के लिए खोला था, वह तो कूदता-फाँदता कहीं गायब हो गया था।

घर पहुँचकर साहूकार ने देखा कि रामू की पत्नी ने ठीक वही पकवान बनाए थे, जिनके लिए खरगोश से कहा गया था। खरगोश वहाँ चुपचाप बैठा घास कुतर रहा था। साहूकार को बहुत आश्चर्य हुआ। वह मन ही मन खरगोश के काम पर बहुत खुश था। वह रामू से बोला– "रामू, चलो छोड़ो बैल वाली बात उसे मैं स्वयं सँभाल लूँगा। अब, तुम यह खरगोश मुझे दे दो।

मेरे घर छोटा-मोटा काम कर दिया करेगा। तुम बगीचे वाला बाकी खेत भी ले लो और खरगोश मुझे दे दो।"

रामू बहुत खुश हुआ। उसने देखा कि साहूकार पर उसका जादू चल चुका है। उसने ज़मीन के बदले खरगोश साहूकार को दे दिया।

साहूकार खरगोश को अपने घर ले आया लेकिन जब उसने खरगोश से काम लेना चाहा तो वह कहीं जंगल में भाग गया, घर नहीं पहुँचा। साहूकार क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने फैसला किया कि इस बार मैं इस रामू के बच्चे को ठिकाने लगा दूँगा। उसने मुझे खूब मूर्ख बनाया है। अब तो मैं इसे मारकर नदी में बहा दूँगा। इसकी सारी संपत्ति पर कब्ज़ा कर लूँगा। ऐसा सोचकर वह रामू के घर चल दिया। साहूकार ने अपने नौकरों की सहायता से रामू को पकड़ा और एक बोरे में बंद कर दिया। बैलगाड़ी में बोरा रखकर साहूकार उसे नदी में डुबोने चल दिया।

रास्ते में साहूकार को भूख-प्यास लगी। वह खाना खाकर थोड़ी देर के लिए सो गया। वहीं पास में एक ग्वाला गाय चरा रहा था। उत्सुकतावश वह गाड़ी के समीप आया। आहट पाकर अंदर से रामू बुदबुदाया– "मुझे नहीं करनी शादी। मैं शादी नहीं करूँगा।"

"अरे इस बोरे में कौन है?" ग्वाला चौंककर बोला। बोरे से आवाज़ आई–"हाँ, भई, देखो कैसा अन्याय है? यह साहूकार जबरदस्ती मेरी दूसरी शादी कराना चाहता है।"

ग्वाला अविवाहित था। उम्र बढ़ती जा रही थी। उसने सोचा कि शादी करवाने का यह अच्छा मौका है। क्यों न मैं इसकी जगह चला जाऊँ?

उसने रामू को बोरे से निकाला और खुद उसकी जगह घुस गया। रामू उसकी गायें लेकर खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पड़ा। उधर साहूकार उठा और जल्दी-जल्दी गाड़ी हाँककर नदी के किनारे पहुँचा। उसने अपने नौकरों से वह बोरा नदी में डलवा दिया।

गाँव वापस आकर साहूकार को पता लगा कि रामू न केवल जिंदा लौट आया है बल्कि बहुत-सी गायें भी ले आया है। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह तुरंत रामू के घर पहुँचा। उसने रामू को वहीं पाया। रामू अपनी गायों का दूध निकालने में व्यस्त था। साहूकार जल-भुनकर रह गया। कुछ झेंप के साथ उसने रामू से पूछा "अरे, तुम बच कैसे गए? तुम्हें ये गायें कहाँ से मिलीं?"

"सब आपकी कृपा है सेठ जी। यदि आप मुझे और गहरे पानी में डालते तो मैं और अधिक गायें लाता। वैसे मेरे लिए इतनी ही काफी हैं", रामू ने लापरवाही से जवाब देते हुए कहा।

साहूकार रामू की बात पर विश्वास कर बैठा। लालच ने उसकी बुद्धि पर परदा डाल दिया था। वह तुरंत नदी के किनारे पहुँचा और पानी में उतर गया। वह तैरना नहीं जानता था फिर भी उसने नदी के बीच गहरे जल में डुबकी लगा दी और अपनी जान से हाथ धो बैठा। किसी ने सच ही कहा है– "लालच बुरी बला है।"

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

भड़कना	विश्वास	सिक्का
हिस्सा	हड़पना	इंतज़ार
झुँझलाहट	गुस्सा	खरगोश
उछलना	फाँदना	आश्चर्य
सँभालना	संपत्ति	उत्सुकतावश
अविवाहित	हाँकना	बुद्धि

II. पढ़ो और समझो

क.

सबक	=	पाठ
तरकीब	=	उपाय
मशहूर	=	प्रसिद्ध
प्रतिदिन	=	रोज़
हड़पना	=	गलत तरीके से किसी की वस्तु ले लेना/हथिया लेना
कब्ज़ा करना	=	हथिया लेना
शिकार करना	=	चाल में फँसाना
गुस्से से लाल होना	=	बहुत नाराज़ होना
जादू चलना	=	बात का असर होना
आग बबूला होना	=	गुस्से से लाल हो जाना
आश्चर्य का ठिकाना न रहना	=	बहुत हैरानी होना
बुद्धि पर परदा पड़ना	=	कुछ समझ में न आना

ख.

बेईमान	×	ईमानदार
गरीब	×	अमीर
खरीदना	×	बेचना
मूर्ख	×	बुद्धिमान
न्याय	×	अन्याय
गहरा	×	उथला

ग. चुकाते-चुकाते
मुँह-माँगी

अच्छे-अच्छे

छोटा-मोटा

आग-बबूला

भूखा-प्यासा

खुशी-खुशी

जल्दी-जल्दी

जल-भुनकर

घ. साहूकार ---> साहूकारी

दुख ---> दुखी

लालच ---> लालची

तैयार ---> तैयारी

बेहोश ---> बेहोशी

मूर्ख ---> मूर्खता

समीप ---> समीपता

लापरवाह ---> लापरवाही

ङ. 1. ⇒ उसने काफ़ी **धन जमा कर लिया था**।

वह काफ़ी **अमीर बन गया था**।

2. ⇒ गाँव में **शायद ही कोई ऐसा** आदमी हो जो उसकी **लूट का शिकार न बना हो**।

गाँव में कोई ही ऐसा होगा जिसे उसने **न लूटा हो**।

3. ⇒ उन्हें अपनी बहुत-सी ज़मीन से **हाथ धोना पड़ा**।

उन्हें अपनी बहुत-सी ज़मीन **गँवानी पड़ी**।

4. ⇒ यह खेत साहूकार ने रामू के बाप **से हड़प लिया**।
उसने उसका सारा माल **हथिया लिया**।

5. ⇒ वह कूदता-फाँदता **कहीं गायब हो गया**।
वह कूदता-फाँदता कहीं **चला गया**।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> साहूकार बेईमानी से बहुत धन जमा कर चुका था।
> → साहूकार ने बेईमानी से बहुत धन जमा कर लिया था।

1. सेठ काफी धन जमा कर चुका था।
....
2. रामू खेत का आधा हिस्सा ले चुका था।
....
3. रामू की पत्नी खाना बना चुकी थी।
....
4. मज़दूर मकान बना चुके थे।
....

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> खरगोश से काम नहीं लिया जा सकता
> → **कहीं** खरगोश से काम लिया जा सकता है!

1. पैसों से ज्ञान नहीं खरीदा जा सकता।
....

2. बच्चों से काम नहीं कराया जा सकता।

....

3. ऐसी बात सबको नहीं बताई जा सकती।

....

4. ऐसा खाना मेहमानों को नहीं खिलाया जा सकता।

....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> साहूकार ने कभी सच **नहीं बोला**
> → साहूकार ने **शायद ही** कभी सच बोला **हो**।

1. ब्राह्मण ने कभी बेईमानी नहीं की।

....

2. मोहन ने उसे कभी धोखा नहीं दिया।

....

3. शंकर ने कभी चापलूसी नहीं की।

....

4. हमारे बच्चों ने कभी झगड़ा नहीं किया।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. गाँव का साहूकार किस प्रकार का व्यक्ति था?
2. रामू कौन था?
3. रामू साहूकार से क्या लेना चाहता था?
4. साहूकार ने बैल के बदले रामू को क्या दिया?

5. रामू ने खरगोश से क्या कहा?
6. साहूकार ने रामू को सज़ा देने के लिए क्या उपाय सोचा?
7. साहूकार अपनी जान से हाथ क्यों धो बैठा?

ख. सही ज़वाब के आगे सही (√) का निशान लगाओ :

(अ) 1. मार खाते-खाते रामू बेहोश हो गया।
2. मार खाते-खाते साहूकार बेहोश हो गया।
3. मार खाते-खाते खरगोश बेहोश हो गया।
4. मार खाते-खाते बैल बेहोश हो गया।

(ब) 1. साहूकार लोगों को धोखा देकर उनकी ज़मीन हड़प लेता था।
2. रामू लोगों को धोखा देकर उनकी ज़मीन हड़प लेता था।
3. रामू का पिता लोगों को धोखा देकर उनकी ज़मीन हड़प लेता था।
4. ग्वाला लोगों को धोखा देकर उनकी ज़मीन हड़प लेता था।

(स) 1. कर्ज़ चुकाते-चुकाते रामू की जान चली गई।
2. कर्ज़ चुकाते-चुकाते ग्वाले की जान चली गयी।
3. कर्ज़ चुकाते-चुकाते साहूकार की जान चली गयी।
4. कर्ज़ चुकाते-चुकाते रामू के पिता की जान चली गयी।

(द) 1. बोरे में रामू बंद था।
2. बोरे में साहूकार बंद था।
3. बोरे में रामू के पिता बंद थे।
4. बोरे में खरगोश बंद था।

ग. उदाहरण के अनुसार मिलान करो :

(क)	(ख)
1. साहूकार	एक गरीब किसान था।
2. रामू की पत्नी	बहुत बेईमान व्यक्ति था।
3. बैल	अविवाहित था।
4. ग्वाला	के गोबर से हर रोज़ एक सोने का सिक्का निकलता था।
5. रामू	ने अच्छे-अच्छे पकवान बनाए।

घ. रिक्त-स्थानों की पूर्ति सही शब्द चुनकर करो :

बदला, किसान, सबक, भड़क, बेईमान, खाते-खाते, झुँझलाहट

1. उस गाँव का साहूकार बहुत .... था।
2. रामू एक गरीब .... था।
3. रामू के मन में साहूकार से .... लेने की आग .... उठी।
4. रामू ने साहूकार को .... सिखाने की तरकीब सोची।
5. साहूकार ने .... में बैल की पिटाई भी की।
6. मार .... बैल बेहोश हो गया।

V. पढ़ो और लिखो

साहूकार रामू की बात पर विश्वास कर बैठा। लालच ने उसकी बुद्धि पर परदा डाल दिया था। वह तुरंत नदी के किनारे पहुँचा और पानी में उतर गया। वह तैरना नहीं जानता था, फिर भी उसने नदी के बीच गहरे जल में डुबकी लगा दी और अपनी जान से हाथ धो बैठा। किसी ने सच ही कहा है– "लालच बुरी बला है।"

VI. योग्यता-विस्तार

क. इसी तरह की कोई अन्य कहानी ढूँढ़कर अपने साथियों को सुनाओ।

ख. कक्षा में कुछ ऐसे अनुभव सुनाओ, जहाँ लालच करने से नुकसान हुआ हो।

पाठ 3

स्वामी विवेकानंद

संरचना-संकेत

कर देना
तैर कर
संयुक्त क्रियाएँ
ना हुआ
बिना

विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 को कलकत्ता में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेंद्र था। वे शुरू से ही बड़े निर्भीक और साहसी थे। उनकी निडरता के कई किस्से मिलते हैं। उन्होंने किसी से सुना कि हनुमान जी केले के वन में रहते हैं तो वे रात-भर केलों के वन में अकेले घूमते रहे। किसी पड़ोसी ने डराया— "चंपा के पेड़ पर ब्रह्मराक्षस रहता है।" नरेंद्र तुरंत चंपा के पेड़ पर चढ़कर बोले— "ब्रह्मराक्षस हो तो आओ मेरे सामने !" वे जब छह वर्ष के थे तब उन्होंने एक बच्चे को घोड़ा-गाड़ी के नीचे आने से बचाया था। जब उनकी माँ ने यह सुना तो आशीर्वाद दिया— "भगवान करे, तेरे हाथों मानव-जाति का कल्याण हो।"

व्यायाम और खेलकूद में नरेंद्र की गहरी रुचि थी। ऊँचा कद, चौड़े कंधे, भरा हुआ सीना, दमकता चेहरा, सुडौल और शक्तिशाली भुजाएँ— यह रूप उनके नियमित व्यायाम का परिणाम था। एक बार जो इस मोहक आकृति को

देख लेता, वह उसके जादू से बच नहीं पाता। कॉलेज में वे अपनी प्रतिभा से सबके चहेते बन गए थे। उन्होंने गणित, दर्शन, इतिहास, ज्योतिष आदि विषय पढ़े। संगीत सीखा और अनेक भारतीय तथा यूरोपीय भाषाओं का अध्ययन भी किया।

जब तक नरेंद्र किसी बात को तर्क की कसौटी पर कस नहीं लेते थे तब तक वे उस पर विश्वास नहीं कर पाते थे। वे ईश्वर पर विश्वास नहीं करते थे। वे सोचते, यदि ईश्वर दयालु है तो लोग दुखी क्यों हैं? मुट्ठी-भर अन्न के बिना लोग भूखे क्यों मर रहे हैं? इन्हीं दिनों वे स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आए। परमहंस ने इस हठी किशोर में छिपी क्षमताओं को पहली ही भेंट में पहचान लिया। उन्होंने धीरे-धीरे नरेंद्र की सारी शंकाएँ दूर कर दीं और वे उनके सबसे प्रिय शिष्य बन गए। बाद में रामकृष्ण परमहंस ने अपने इस प्रिय शिष्य का नाम 'विवेकानंद' रखा।

रामकृष्ण परमहंस के देहांत के बाद विवेकानंद ने सारे भारत का भ्रमण किया। देश-भ्रमण करते समय उन्होंने देशवासियों के अज्ञान और गरीबी को निकट से देखा। वे दीन-दुखियों के बीच उठे-बैठे और उन्होंने उनका दुख-दर्द सुना-समझा। उन्होंने देशवासियों को अज्ञान और गरीबी से छुटकारा दिलाने का संकल्प लिया। उनका कहना था– "जब हमारे देशवासी रोटी-कपड़े को तरस रहे हैं, तो हम अपने मुँह में ग्रास रखते लज्जित क्यों नहीं होते? जब तक इन दीन-दुखी भारतीयों का उत्थान नहीं होगा, तब तक भारत माता का उद्धार नहीं होगा।

भारत भ्रमण करते-करते विवेकानंद कन्याकुमारी पहुँचे। वहाँ उन्होंने कन्याकुमारी के दर्शन किए और देखा– तीन सागरों का संगम! सागर में विशाल लहरें उठ रही थीं। विवेकानंद के मन में भी ऐसी ही हलचल थी। वे सागर-तट पर कुछ-देर खड़े-खड़े सोचते रहे। उन्होंने सागर में स्थित 'श्रीपाद

पारे' (मातृचरण-शिला) को देखा और अचानक सागर में कूद पड़े। तैरते-तैरते वे उस शिला पर जा पहुँचे। वहाँ से उन्होंने मातृभूमि को प्रणाम किया और ध्यान-मग्न हो गए। काफी देर के बाद उनकी समाधि टूटी। चेतना लौटने पर उन्होंने अपने आपको असीम आत्म-विश्वास से भरा हुआ पाया।

सोमवार, 11 सितंबर सन् 1893 की बात है। अमेरिका के शिकागो नगर में विश्व-धर्म-सम्मेलन हो रहा था। विश्व-भर से अनेक धर्मों के विद्वान वक्ता वहाँ आए हुए थे। अपने दृढ़ निश्चय के बल पर विवेकानंद भी वहाँ जा

पहुँचे। वहाँ प्रत्येक वक्ता ने अपने धर्म और अपने संप्रदाय को श्रेष्ठ सिद्ध करते हुए भाषण दिया। जब सभा उखड़ने लगी तब विवेकानंद को बोलने का अवसर मिला। इस विचित्र वेशभूषा वाले अनजान भारतीय से श्रोताओं को विशेष आशा न थी। अचानक उन्हें सुनाई दिया– "मेरे अमरीकी भाइयो और बहनो !" विवेकानंद के इस सरल संबोधन को सुनकर उपस्थित श्रोता चौंक पड़े। जाते हुए लोग वहीं ठहर गए और मंत्र-मुग्ध होकर उनका भाषण सुनने लगे। अगले दिन संपूर्ण अमेरिका में उनके भाषण की धूम मच गई।

अमेरिका और यूरोप के अनेक देशों में भारतीय धर्म और संस्कृति का संदेश देकर विवेकानंद भारत लौटे। वे अपने देश में फैली अशिक्षा, रोग और गरीबी के कारण बहुत चिंतित थे। अपने देशवासियों को इनसे छुटकारा दिलाने के लिए उन्होंने अपने साथियों और शिष्यों के सहयोग से "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की। आज भी इसकी शाखाएँ देश-विदेश में सेवा-कार्य कर रही हैं।

दीन-दुखियों की सेवा में आजीवन अपने को समर्पित करने वाले इस महापुरुष का निधन 4 जुलाई, 1902 को हुआ। विवेकानंद यद्यपि आज हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी उनके विचार और कार्य अब भी हज़ारों लोगों को मानव-सेवा के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

(क)

निर्भीक	किस्सा	ब्रह्मराक्षस
आशीर्वाद	कल्याण	व्यायाम
शक्तिशाली	परिणाम	अध्ययन

प्रतिभा	क्षमता	भ्रमण
शिष्य	समाधि	ध्यानमग्न
सम्मेलन	श्रोता	समर्पित

(ख) सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. ब्रह्मराक्षस हो तो आओ मेरे सामने !
2. भगवान करे, तेरे हाथों मानव-जाति का कल्याण हो !
3. यदि ईश्वर दयालु है तो लोग दुखी क्यों हैं?
4. मुट्ठी-भर अन्न के बिना लोग भूखे क्यों मर रहे हैं?
5. जब तक इन दीन-दुखी भारतीयों का उत्थान नहीं होगा तब तक भारत-माता का उद्धार नहीं होगा।

II. पढ़ो और समझो

(क)
निर्भीक = जिसे भय न हो, निडर
साहसी = हिम्मत रखने वाला, दिलेर
ब्रह्मराक्षस = वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु के कारण राक्षस या प्रेत हो गया हो।
किस्सा = कहानी, कथा
क्षमता = सामर्थ्य, आंतरिक शक्ति
उत्थान = ऊँचा उठना, उन्नति
समाधि = ध्यान में मग्न होने की क्रिया
आजीवन = जीवन-भर
कद = शरीर की लंबाई

(ख) साहस → साहसी
पड़ोस → पड़ोसी

शक्ति → शक्तिशाली
प्रतिभा → प्रतिभावान, प्रतिभाशाली
भारत → भारतीय

(ग) घोड़ागाड़ी – घोड़े द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी
देशवासी – देश में रहने वाले लोग
भारत-भ्रमण – भारत का भ्रमण
ध्यानमग्न – ध्यान में मग्न
सेवाकार्य – सेवा का कार्य
मानवसेवा – मानव की सेवा

(घ) दुख-दर्द – दुख और दर्द
रोटी-कपड़े – रोटी और कपड़े
दीन-दुखी – दीन और दुखी

(ङ) 1. ब्रह्मराक्षस हो तो **आओ मेरे सामने**!
ब्रह्मराक्षस हो तो **मेरे सामने आओ**।

2. वहाँ उन्होंने कन्याकुमारी के दर्शन किए और **देखा- तीन समुद्रों का संगम!**
उन्होंने वहाँ कन्याकुमारी के दर्शन किए और **तीन समुद्रों का संगम देखा**।

III. संरचना-अभ्यास

(क) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
लोग चल रहे थे। लोग रुक गए
→ चलते हुए लोग रुक गए।

1. गाड़ी चल रही थी। गाड़ी रुक गई।
2. कोयल बोल रही थी। कोयल चुप हो गई।
3. पंखा चल रहा था। पंखा रुक गया।
4. बेबी सो रही थी। बेबी चौंक गई।
5. लोग भाषण सुन रहे थे। लोग ऊब गए।
6. बच्चा दौड़ रहा था। बच्चा गिर गया।

(ख) **उदाहरण :**

वे तैरते-तैरते उस शिला पर पहुँचे

→ वे तैरकर उस शिला पर पहुँचे।

1. वह चलते-चलते पहाड़ पर पहुँच गया।

   ....

2. वे कष्टों को सहते-सहते साहसी बन गए।

   ....

3. वह दौड़ते-दौड़ते सीढ़ियाँ चढ़ गया।

   ....

4. वे दीन-दुखियों की सेवा करते-करते महान् बन गए।

   ....

(ग) **उदाहरण :**

पिताजी जब तक चाय नहीं पी लेते, काम नहीं कर पाते

→ पिताजी बिना चाय पिए काम नहीं कर पाते।

1. वह जब तक अखबार नहीं पढ़ लेता, सो नहीं पाता।
2. बच्चे जब तक शोर नहीं मचा लेते, रह नहीं पाते।

3. वे जब तक झूठ नहीं बोल लेते, रह नहीं पाते।
4. मैं जब तक चश्मा नहीं लगा लेता, देख नहीं पाता।

(घ) **उदाहरण :**

उन्होंने नरेंद्र की शंकाएँ दूर कीं
→ उन्होंने नरेंद्र की शंकाएँ दूर कर दीं।

1. मोहन ने सोहन का दुख दूर किया।

....

2. अध्यापक ने रमेश को परीक्षा में पास किया।

....

3. मैंने मित्र का कार्य पूरा किया।

....

4. ईश्वर ने हमारी चिंताएँ दूर कीं।

....

(ङ) उदाहरण के अनुसार कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के सही रूपों से वाक्य पूरे करो :

उदाहरण :

बिना .... कोई भी बात नहीं करनी चाहिए
(सोचना-समझना)
→ बिना सोचे-समझे कोई भी बात नहीं करनी चाहिए।

(1) बिना .... काम पूरा करना मुश्किल है। (खाना-पीना)
(2) बिना .... परीक्षा में पास नहीं हो सकते। (पढ़ना-लिखना)
(3) बिना .... किसी बात पर विश्वास मत करो। (देखना-सुनना)
(4) बिना .... बच्चे नहीं रह सकते। (खेलना-कूदना)

IV. पढ़ो और बताओ

(क) बचपन में विवेकानंद का क्या नाम था?
(ख) विवेकानंद की माताजी ने उन्हें क्या आशीर्वाद दिया?
(ग) विवेकानंद नाम किसने रखा था?
(घ) समाधि टूटने पर विवेकानंद ने क्या अनुभव किया?
(ङ) रामकृष्ण-मिशन की स्थापना क्यों की गई?

V. पढ़ो और लिखो

व्यायाम और खेलकूद में नरेंद्र की गहरी रुचि थी। ऊँचा कद, चौड़े कंधे, भरा हुआ सीना, दमकता चेहरा, सुडौल और शक्तिशाली भुजाएँ—यह रूप उनके नियमित व्यायाम का परिणाम था। एक बार जो इस मोहक आकृति को देख लेता, वह उसके जादू से बच नहीं पाता था।

VI. योग्यता-विस्तार

(क) पता करो कि 'रामकृष्ण मिशन' क्या-क्या काम करता है?
(ख) स्वामी विवेकानंद के बारे में कुछ और जानकारी प्राप्त करो।

पाठ 4

चिड़ियाघर की सैर

संरचना-संकेत

ही नहीं .... भी
करने पर .... भी
हालाँकि .... फिर भी
कहीं .... तो कहीं

मैं अपनी कक्षा के छात्रों के साथ दिल्ली का चिड़ियाघर देखने गया था। हालाँकि मुझे हल्का सा बुखार था, फिर भी मैं चला गया। हमने टिकट खरीदे और चिड़ियाघर में प्रवेश किया। यह देखकर अचरज हुआ कि बच्चे ही नहीं, बड़े-बूढ़े भी चिड़ियाघर देखने आए हुए थे।

चिड़ियाघर लंबे-चौड़े क्षेत्र में फैला हुआ है। अंदर पहुँचने पर ऐसा लगा जैसे पशु-पक्षियों से भरे किसी जंगल में आ गए हों। गाइड ने बताया– "यह चिड़ियाघर कई भागों में बँटा हुआ है।" हमने तय किया कि सबसे पहले पक्षियों को देखेंगे।

थोड़ी दूर जाने पर पक्षियों के बाड़े नज़र आने लगे। कहीं तरह-तरह के कबूतर थे तो कहीं रंग-बिरंगे तोते। लाल कलगी वाला तोता बाड़े की जाली से उल्टा लटका हुआ था। लोग उसे हरी मिर्च खिला रहे थे। पास ही पेड़ों पर हार्नबिल पक्षी थे। ये भारत, अफ्रीका और इंडोनेशिया में पाए जाते हैं। इनकी
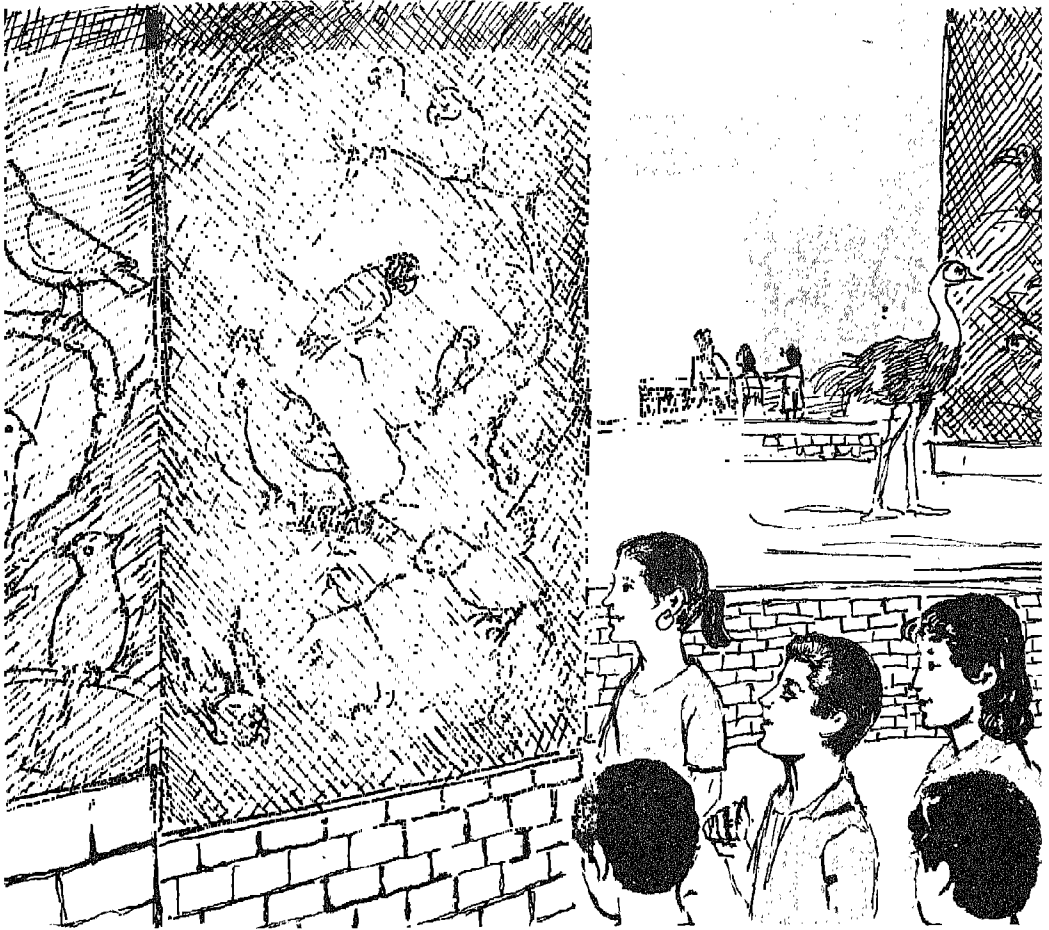
चोंच सख्त और लंबी होती है। वे इसकी सहायता से कीड़े-मकोड़े आसानी से पकड़ लेते हैं।

अब हम शुतुरमुर्ग के बाड़ के सामने खड़े थे। यद्यपि गाइड उनके बारे में उपयोगी जानकारी दे रहा था फिर भी हमारा ध्यान उस ओर नहीं था। हम सबकी नज़र तो शुतुरमुर्ग के विशाल अंडों पर थी। इतने बड़े अंडे हमने पहली बार देखे थे। कुछ ही दूरी पर हमें मोर दिखाई दिए। एक मोर अपने पंख

फैलाकर मस्ती में नाच रहा था। उसके पंखों को देखकर ऐसा लगा जैसे किसी चित्रकार ने बेहतरीन रंगों से इन्हें सजा दिया है।

पास ही एक बहुत-बड़ा तालाब था, जिसमें सैकड़ों पक्षी किलोलें कर रहे थे। उन्हें देखकर हमने गाइड से पूछा– "क्या ये पक्षी हमेशा यहीं रहते हैं?" गाइड ने कहा– "नहीं, ये पक्षी जाड़ों में बहुत दूर से यहाँ आते हैं। इनमें से कुछ बर्फ़ीले प्रदेशों से आते हैं और कुछ साइबेरिया के मैदानों से। यहाँ ये अंडे देते हैं। जब बच्चे बड़े होने लगते हैं और गर्मी शुरू हो जाती है, तब इनका काफिला लौट जाता है। इसी कारण इन्हें "माइग्रेटिंग बर्ड्स" या प्रवासी पक्षी कहते हैं।

अब हम पहुँचे उस स्थान पर जहाँ कंगारू और ज़िर्राफ थे। कंगारू आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। इसके पेट पर एक थैली होती है जिसमें उसका बच्चा सुरक्षित रहता है। पास ही ज़िर्राफ भी घूम रहा था। उसकी लंबी गर्दन देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ। कहते हैं कि ज़िर्राफ गूँगा होता है।

थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर तरह-तरह के बंदर दिखाई पड़े। वहाँ एक हुक्कू बंदर था। वह पेड़ की डाल से लटका हुआ अपनी बाजीगरी दिखा रहा था। वह हुक्कू-हुक्कू चिल्लाए जा रहा था। वह ज्यों ही चुप होता, बच्चे उसे -"हुक्कू-हुक्कू" कहकर छेड़ने लगते और फिर शुरू हो जाता उसका वही पुराना राग।

भाँति-भाँति के पशु-पक्षियों को देखने में हमें बड़ा मज़ा आ रहा था। सामने ही बाघों का बाड़ा था। उसमें लंबे-चौड़े डील-डौल वाले पाँच बाघ थे। नर-मादा के दो जोड़े थे और एक था-अकेला। गाइड ने बताया– "इस बाघ की मादा बीमार पड़ गई थी। यद्यपि उसके उपचार में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी गयी तो भी वह बच नहीं सकी। तभी से यह अकेला पड़ गया है और उदास रहने लगा है।

सहसा हमें एक दहाड़ सुनाई पड़ी। हम रुक गए। दहाड़ सुनकर गाइड हमें एक बहुत-बड़े खुले बाड़े के सामने ले गया। इसमें झाड़ियाँ थीं, छोटा-सा पोखर था और चट्टानों के बीच बनी थीं-कुछ गुफाएँ। यहाँ सिंहनी धूप सेक रही थी। हमारी इच्छा थी कि हमें जंगल के राजा के दर्शन हों, पर सिंह को हमारी परवाह कहाँ? वह तो खा-पीकर दूर चट्टानों की गुफा के बीच आँखें मूँदे सो रहा था।

इससे आगे बढ़ने पर हमें तालाब में एक चिकनी और बादामी रंग की

चितकबरी हाथी जैसी पीठ दिखाई दी। नज़दीक जाकर देखा तो पता चला कि यह तो दरियाई घोड़ा है, जो अब पानी से थोड़ा बाहर आ चुका था। कुछ देर बाद वह पुनः पानी में डुबकियाँ लगाने लगा।

आगे एक बाड़े में ज़ेबरा घूम रहा था। उसकी पीठ पर बनी रेखाएँ बहुत आकर्षक लग रही थीं। पास ही सर्पशाला थी जिसमें तरह-तरह के साँप थे। वहाँ विशालकाय अजगर को देखकर बड़ा डर लगा। कितना बड़ा था वह ! इसी तरह ढेर-सारे मगर और घड़ियाल देखकर हम आश्चर्यचकित रह गए।

चार घंटे तक हम लगातार घूमते रहे। सभी लोग थककर चूर-चूर हो गए थे। भूख भी लग आई थी। अतः हम सब हरी घास पर बैठ गए। फिर शुरू हुआ खाने-पीने, नाचने-गाने, खेलने-कूदने का दौर। बड़ी देर तक हमने खूब मौज-मस्ती की।

अब लौटने का समय हो गया था। हम सब बस में बैठे और घर लौट आए। 'एक पंथ दो काज' सैर की सैर और जानकारी की जानकारी।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. चिड़ियाघर — शुतुरमुर्ग — कंगारू

आश्चर्य — बिशालकाय — सर्पशाला

रंग-बिरंगे — काफ़िला — चट्टान

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. कहीं तरह-तरह के कबूतर थे तो कहीं रंग-बिरंगे तोते।
2. क्या ये पक्षी हमेशा यहीं रहते हैं?

3. अब हम पहुँचे उस स्थान पर, जहाँ कंगारू थे।
4. फिर शुरू हो जाता उसका वही पुराना राग।
5. यहाँ चट्टानों के बीच बनी थीं– कुछ गुफाएँ।
6. पर सिंह को हमारी परवाह कहाँ?

II. पढ़ो और समझो

क.

चिड़ियाघर	=	पशु-पक्षियों को रखने का स्थान, जंतुशाला
सैर	=	मन बहलाने के लिए किया जाने वाला भ्रमण
बाड़ा	=	पशु-पक्षियों को रखने के लिए बनाया गया घेरा
बेहतरीन	=	बहुत अच्छा, सुन्दर
किलोल करना	=	आवाज़ करते हुए पक्षियों का खेलना
प्रवासी	=	कुछ समय के लिए दूसरे देश जाकर रहने वाला
बाजीगरी	=	जादू-सा लगने वाला खेल
दहाड़	=	सिंह की गर्जना
डील-डौल	=	शरीर का आकार
पोखर	=	पानी से भरा गड्ढा
चितकबरा	=	रंग-बिरंगा
उत्सुकता	=	प्रबल इच्छा, बेचैनी
आकर्षक	=	मन को अपनी ओर खींचने वाला
एक पंथ दो काज (मुहावरा)	=	एक समय में ही दो काम पूरे हो जाना, (दोहरा लाभ)

ख.

बर्फ	→	बर्फीला
उपयोग	→	उपयोगी

बेहतर → बेहतरीन
बाजीगर → बाजीगरी
सिंह → सिंहनी

ग. बड़े-बूढ़े
लम्बे-चौड़े
मौज-मस्ती
डील-डौल
कोर-कसर
नर-मादा
नाचना-गाना
खेलना-कूदना

घ.

लंबी चोंच	हरी मिर्च
उपयोगी	जानकारी
बड़ा	तालाब
खुला	बाड़ा
विशाल	अंडा

ङ 1. उपचार में कोई **कोर-कसर** नहीं रखी।
उपचार में कोई **कमी** नहीं रखी।

2. हम **थककर-चूर** हो गए थे।
हम बहुत **थक गए** थे।

3. हमने **टिकट खरीदा** और चिड़ियाघर में प्रवेश किया।
हमने **टिकट लेकर** चिड़ियाघर में प्रवेश किया।

4. उसे हरी **मिर्च खाने में बड़ा मजा आ रहा था**।
वह **बड़े मजे से** हरी **मिर्च खा रहा था**।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार एक वाक्य में बदलो :

> **उदाहरण :**
> मुझे हल्का बुखार था। मैं चला गया।
> → हालाँकि मुझे हल्का बुखार था, फिर भी मैं चला गया।

1. मुझे पेट में दर्द था। मुझे जाने को कहा गया।
....

2. उसे सिर में पीड़ा थी। उसे पढ़ने को कहा गया।
....

3. मोहित को चक्कर आ रहे थे। वह विद्यालय चला गया।
....

4. मुझे घरेलू परेशानी थी। मैं मित्र से मिलने चला गया।
....

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> वहाँ बच्चे **ही नहीं,** बड़े-बूढ़े भी थे।
> → वहाँ बच्चे भी थे और बड़े बूढ़े **भी**।

1. वहाँ कबूतर ही नहीं, रंग-बिरंगे तोते **भी** थे।
....

2. घर में रिश्तेदार ही नहीं, पड़ोसी **भी** थे।
....

3. जंगल में शेर ही नहीं, जंगली हाथी **भी** थे।

....

4. पहाड़ पर गुफाएँ ही नहीं, साधु **भी** थे।

....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :

मेरे बुलाने **पर भी** वह नहीं आया।

→ मैंने बुलाया था **तो भी** वह नहीं आया।

1. उसके बुलाने **पर भी** वह दावत में नहीं आया।

....

2. माँ के कहने **पर भी** राजू खेलने नहीं गया।

....

3. हमारे समझाने **पर भी** वह सिनेमा देखने नहीं गया।

....

4. तुम्हारे कहने **पर भी** वह शादी के लिए तैयार नहीं हुआ।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. बताओ, ये कथन किसके बारे में हैं?

1. हमारी नजर उसके विशाल अंड़ों पर थी।
2. चित्रकार ने बेहतरीन रंगों से सजा दिया है।
3. लोग उसे ह़री मिर्च खिला रहे थे।
4. और फिर शुरू हो जाता उसका वही पुराना राग।

ख. 1. कुछ पक्षियों को प्रवासी पक्षी क्यों कहते हैं?
2. शुतुरमुर्ग की क्या विशेषता है?
3. कंगारू अपने पेट पर बनी थैली का क्या उपयोग करता है?
4. दरियाई घोड़ा कहाँ रहता है?
5. "हार्नबिल" पक्षी कहाँ-कहाँ पाए जाते हैं?

V. पढ़ो और लिखो

क निम्नलिखित कथन किसके बारे में हैं :
1. पंख फैलाकर मस्ती में नाच रहा था ....
2. पीठ पर बनी रेखाएँ बहुत आकर्षक लग रही थीं ....
3. वह जाड़े की धूप सेक रही थी ....
4. पेड़ की डाल से लटक कर बाज़ीगरी दिखा रहा था ....
5. उसकी चोंच सख्त और लंबी होती है ....

ख. शुतुरमुर्ग के बारे में दो वाक्य लिखो।

VI. योग्यता-विस्तार

1. अपने निकट के चिड़ियाघर की सैर करो।
2. आपके आस-पास जो पशु-पक्षी मिलते हैं, उनके रूप-रंग तथा आदतों का वर्णन करो।

पाठ 5

चलना हमारा काम है

यह राह फूलों से भरी
वह राह काँटों से घिरी
इससे हमें क्या वास्ता
अच्छा-बुरा क्या रास्ता

दिन-रात, संध्या-सुबह, चलना हमें अविराम है।
चलना हमारा काम है, हमको कहाँ विश्राम है।।

साथी मिले कुछ राह में
मिल बढ़ चले उत्साह में
कुछ बीच में ही रुक गए
अवरोध पाकर झुक गए

कुछ ने कहा– 'सब भाग्य है', कुछ ने, 'विधाता वाम है'।
हमने कहा, "आओ चलो, अब गौण फल परिणाम है"।।

गिरि तुंग ने रोका हमें
तूफ़ान ने टोका हमें
पाथेय सारा चुक गया
पथ पर अँधेरा झुक गया

यह जान कर अच्छी तरह जोखिम-भरा परिणाम है।
मझधार में हम बढ़ चले, रक्षक हमारा राम है।।

चलना हमारा काम है, हमको कहाँ विश्राम है।।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. संध्या | अविराम | विश्राम
उत्साह | अवरोध | विधाता
गौण | परिणाम | गिरि
तुंग | तूफान | पाथेय
जोखिम | मझधार | रक्षक

ख. 1. इससे हमें क्या वास्ता,
अच्छा-बुरा क्या रास्ता।

2. कुछ ने कहा, 'सब भाग्य है',
   कुछ ने 'विधाता वाम है'।
3. हमने कहा, आओ चलो,
   अब गौण फल परिणाम है।
4. चलना हमारा काम है,
   हम को कहाँ विश्राम है।

II. पढ़ो और समझो

क. संध्या = शाम
अविराम = बिना रुके
अवरोध = बाधा
गौण = कम महत्त्व का
गिरि = पर्वत
तुंग = ऊँचा
पाथेय = सफ़र में खाने-पीने की सामग्री
चुकना = समाप्त होना
जोखिम = ख़तरा
मझधार = धारा के बीच में

ख. वास्ता होना = संबंध होना
विधाता वाम होना = भाग्य विपरीत होना
मझधार में बढ़ना = खतरों के बीच बढ़ना

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. 1. इससे हमें क्या वास्ता
....

2. ....
   मिल बढ़ चले उत्साह में
3. गिरि तुंग ने रोका हमें,
   ....
4. ....
   रक्षक हमारा राम है।

ख. उदाहरण के अनुसार कविता-पंक्ति को गद्य में बदलो :

उदाहरण :
दिन-रात हो संध्या-सुबह चलना हमें अविराम है। दिन-रात हो या संध्या-सुबह, हमें अविराम चलना है।

1. साथी मिले कुछ राह में,
   मिल बढ़ चले उत्साह में।
2. गिरि तुंग ने रोका हमें,
   तूफान ने टोका हमें।
3. पाथेय सारा चुक गया
   पथ पर अंधेरा झुक गया।

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. विघ्न-बाधाओं के होते हुए भी हमें क्या करते रहना है?
   2. मार्ग पर चलते हुए हमें किस-किस प्रकार के साथी मिलते हैं?
   3. साहसी व्यक्ति मझधार में भी आगे क्यों बढ़ते हैं?

ख. 1. कविता में किस विचार की प्रधानता है? सही उत्तर छाँटो :
   क. वीरता

ख. उत्साह

ग. बलिदान

घ. लापरवाही

2. फूल और काँटों से क्या अभिप्राय है? सही उत्तर चुनो :

क. हर्ष और शोक

ख. सुख और दुख

ग. अच्छाई और बुराई

घ. सुविधाएँ और बाधाएँ

V. योग्यता-विस्तार

कविता को याद करके इसका सस्वर-वाचन करो।

पाठ 6

कुछ सुनहरी यादें

संरचना-संकेत

सीखना - सिखाना
- या होगा-
जाता था → जाता
फटा हुआ
ताकि

कई दिनों की लगातार बारिश के बाद उस रोज तेज़ धूप निकली। आसमान में कालें बादल छा जाने के कारण मन उदास हो रहा था। उस दिन का सवेरा खुला-खुला-सा बहुत प्यारा लग रहा था। मन उल्लास से झूम रहा था। कुछ ही समय पहले सामने की सड़क से एक युवक मस्ती से सावन का गीत गाते हुए निकल गया था।

"नौकरी मिलेगी बाबू!" अचानक एक आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। सामने देखा– एक अधेड़ उम्र का, दुबला और लंबा-सा आदमी अपने दोनों हाथ-जोड़े खड़ा था। शरीर पर एक मैला-सा कुरता था, जो कंधे और बगलों से फटा हुआ था। वह आदमी घुटनों तक मटमैले रंग की धोती पहने हुए था। उसकी गरीबी बहुत-कुछ उसके कपड़ों से ही प्रकट हो रही थी। सिर पर बाल थे,

और भाल चंदन से पुता हुआ था। उसकी आँखों में आशा-निराशा के भाव **दिखाई दे रहे थे।**

उसने फिर दुहराया—"बाबूजी ! मालिक, नौकरी मिलेगी"?

"तुम क्या काम कर सकते हो? खाना बना सकते हो?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं, बाबू जी? मैं सब काम कर सकता हूँ। मुझसे कोई भी काम आप करवा सकते हैं। मालिक मुझ पर दया कीजिए।"

मुझे ऐसे ही 'पीर, बाबरची, भिश्ती खर' जैसे आदमी की आवश्यकता थी। मैंने ज़्यादा पूछताछ किए बिना ही उसे रख लिया।

वह रोज़ सवेरे उठता था, नदी पर नहाने जाता था और लौटकर अपने काम में लग जाता था। दोनों वक्त खाना बनाता था, झाड़ू लगाता था और घर का सारा काम करता था। उससे किसी काम के लिए कहना नहीं पड़ता था। उसकी बनाई रसोई बहुत स्वादिष्ट होती थी। जो चाहो उससे बनवा लो। सारा काम वह अपने-आप करता था। बच्चों को खिलाने और उनके साथ खेलने में उसे बड़ा मज़ा आता था। मेरी छोटी बच्ची को तो वह बहुत चाहता था। बच्ची के प्रति उसकी ममता इस सीमा तक पहुँच गई थी कि वह उसके बिना एक मिनट भी नहीं रह पाता था। उसकी हर बात पूरी करने की कोशिश करता था।

कहता था– "चार साल हो गए घर छोड़े। मेरी बिटिया भी इतनी ही बड़ी हो गई होगी। तब वह छह महीने की थी, जब मैंने घर छोड़ा था। मैं उसे सीने पर बिठाकर खिलाता था। वह खिलखिलाकर हँसती थी। अब पता नहीं वह कैसे रह रही होगी।" "तो तुम कब जाओगे शंकर, अपनी बच्ची के पास? उसकी याद बहुत सताती होगी? कभी चिट्ठी वगैरह डालते हो घर? तुम्हारी बच्ची की माँ ने कभी चिट्ठी लिखवाई है? क्या हाल है उन दोनों का, कभी पता लगवाया तुमने?" मैंने एक दिन पूछा।

"हाँ मालिक! बच्ची और उसकी माँ की बहुत याद आती है।"

"गाँव में तुम्हारा कुछ नहीं है क्या?" मैंने उससे पूछा।

"सब है मालिक। थोड़ी-सी ज़मीन, आम का बाग, भाई-भाभी। भाभी से हमारी नहीं बनती थी, इसलिए मेरी बच्ची की माँ मैके में है। वहीं मैं रुपये भेजता हूँ।"

वह फुरसत के वक्त हमारे बीच बैठ जाता था और अपनी रामकहानी कहता रहता था। अंत में यह ज़रूर कहता था– "मालिक! अब मैं आपका घर छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा, जिंदगी-भर यहीं रहूँगा। आपके और इन बच्चों के बिना मेरा मन नहीं लगेगा। बस अपने परिवार की चिंता सताती रहती है।"

"तुम्हें कौन जाने के लिए कहता है? बल्कि तुम अपने परिवार को भी यहीं बुलवालो और खुश रहो।" मैं उससे कहता।

एक दिन मेरी पत्नी अपने ज़ेवर सिंगारदानी पर रखकर स्नान करने चली गई। कुछ समय बाद जब उसे अपने आभूषणों की याद आई तो वे गायब थे। बहुत खोजने पर भी वे न मिल सके। शंकर की ईमानदारी को देखते हुए उस पर शक नहीं किया जा सकता था। पत्नी का शक शंकर पर ही था। उसने कहा, "ज़ेवर अवश्य शंकर ने ही चुराए हैं। आप उसे बुलाकर पूछिए।" मैंने उसे डाँटकर कहा था कि शंकर ऐसा कदापि नहीं कर सकता। इतने दिनों से मैं उसे देख रहा हूँ। आज तक कोई चीज़ गायब नहीं हुई। तुम खोजो। इधर-उधर रख दिए होंगे, मिल जाएँगे।

उस दिन तेज बारिश हो रही थी। मैंने देखा, शंकर सिर पर धोती लपेटे बगल में अपनी पोटली दबाए मेरी मेज़ के पास आ रहा है। आते ही वह पैरों पर गिर पड़ा और सिसक-सिसककर रोने लगा। "क्या हुआ रे शंकर तुम्हें", मैंने पूछा। उसका रोना बढ़ता ही गया। वह बोला– "माँफ करना हुजूर! अब मैं आपके घर काम नहीं कर पाऊँगा। मैं वापस जा रहा हूँ।" मैं हैरान था। "क्या हुआ तुम्हें? क्यों वापस जाना चाहते हो, किसी ने कुछ कहा है?" मैंने उससे पूछा।

मेरे हाथ में उसने ज़ेवर रखते हुए कहा– "मालिक, मेरी नज़र मैली हो गई। अब मैं आपके घर रहने लायक नहीं रहा। मैं माँफी चाहता हूँ। मेरी मति मारी गई थी। ज़ेवर देखकर मेरे मन में चोर आ गया था। अपनी बच्ची के लिए मैंने इन्हें चुरा लिया था। मुझे क्षमा करें।" उसकी आँखों से आँसू बरस रहे थे।

मैंने उसे बहुत समझाया। कहा कि तुमने अपना मन साफ़ कर लिया है। पश्चात्ताप कर लिया तो छोड़ो अब। फिर भी वह रुका नहीं, चला गया।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. बारिश मैका रोज़
वक्त उल्लास आभूषण
अधेड़ डटकर आवश्यकता
बौछार स्वादिष्ट क्षमा

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :
तुम क्या काम कर सकते हो?
खाना बना सकते हो?
पता नहीं, अब वह कैसे रह रही होगी?
माँफ करना हुजूर ! अब मैं आपके घर काम नहीं कर पाऊँगा।

II. पढ़ो और समझो

क. लगातार = निरंतर
बारिश = वर्षा
नज़र = दृष्टि
शक = संदेह
कोशिश = प्रयत्न
ज़ेवर = आभूषण
उल्लास = खुशी, प्रसन्नता
अधेड़ = ढलती उम्र का
भाल = माथा, ललाट
सिंगारदानी = स्त्रियों के शृंगार का सामान रखने की पेटी

मटमैला = मिट्टी के रंग का
झूमना = प्रसन्न होना
स्मृति = याद
मैका = माता-पिता का घर, पीहर, मायका

ख. 1. हमारी नज़र मैली हो गई थी।
2. हमारी मति मारी गई थी।
3. आशा-निराशा के भाव दिखाई दे रहे थे।
4. हमारी नहीं बनती थी।
5. मेरे मन में चोर आ गया था।

ग. खिलखिलाकर हँसना = प्रसन्नता से खुलकर हँसना-हँसाना
तारे तोड़ लाना = असंभव को भी संभव कर देना
मति मारी जाना = अक्ल से काम न करना
आँसू बरसाना = रोना
मन साफ करना = अपनी भूल को मान लेना अथवा गलत-फहमी दूर करना

III. संरचना-अभ्यास

क. **उदाहरण :**
मैंने जापानी भाषा **सीखी** (मोहन को) –
→ मैंने मोहन को जापानी भाषा **सिखाई**।

1. पिताजी ने दवा पी (बच्चे को)
....

2. माँ ने खाना खाया (मोहन को)
....

3. दादी ने कहानी सुनी (शीला को)

....

4. राधा ने चिट्ठी लिखी (रमेश को)

....

ख. **उदाहरण :**

राम कल आ **गया**।

→ राम कल आ **गया होगा**।

1. शीला घर चली गई।

....

2. मोहन ने कमीज़ खरीद ली।

....

3. मोहित ने दवा खा ली।

....

4. रमा सो गई।

....

5. माँ मंदिर गई।

....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलकर लिखो :

उदाहरण : वह रोज सवेरे उठता है और नदी पर नहाने **जाता है**।

(क) वह रोज़ सवेरे उठता था और नदी पर नहाने **जाता था**।

(ख) वह रोज़ सवेरे उठता और नदी पर नहाने **जाता**।

1. वह हर समय किताब पढ़ता है और थक जाने पर सो जाता है।
   क. ....
   ख. ....
2. वह हमेशा पैदल आता है और पेड़ की छाया में खड़ा हो जाता है।
   क. ....
   ख. ....
3. तुम प्रायः देर से आते हो और जल्दी चले जाते हो।
   क. ....
   ख. ....
4. मोहन तेज़ दौड़ता है और सबसे पहले स्कूल पहुँच जाता है।
   क. ....
   ख. ....

घ. **उदाहरण :**

उन्हें कोई देख न ले, **इसलिए** उन्होंने दरवाज़ा बंद कर लिया →

उन्होंने दरवाज़ा बंद कर लिया **ताकि** उन्हें कोई देख न ले।

1. इंस्पैक्टर चालान न कर दे, इसलिए दुकानदार ने समय पर दुकान बंद कर दी।
   ....
2. बच्चे शोर न मचाएँ, इसलिए मैंने अध्यापक को बुला लिया।
   ....

3. मच्छर न काटें, इसलिए माला ने पंखा तेज़ कर दिया।

....

4. दुर्घटना न हो, इसलिए चौकीदार ने लाल रोशनी दिखाई।

....

5. शहर में दंगा न हो, इसलिए प्रशासन ने कर्फ्यू लगा दिया।

....

ङ. **उदाहरण :**

मेरी कमीज़ **फट गई** है

→ मेरी कमीज़ **फटी** हुई है।

1. मीरा की साड़ी **फट गई** है।

....

2. मेरी पैंट **धुल गई** है।

....

3. दादी जी आज **थक गई** हैं।

....

4. बच्ची **बैठ गई** है।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. लेखक को कैसे नौकर की आवश्यकता थी?

2. लेखक की बच्ची को शंकर इतना अधिक क्यों चाहता था?

3. शंकर ने अपना घर क्यों छोड़ा था?

4. शंकर ने चोरी क्यों की?

5. शंकर नौकरी छोड़कर क्यों चला गया?

ख. निर्देश : (अ) और (ब) को सही ढंग से मिलाओ :

(अ)	(ब)
1. शंकर	का शक शंकर पर ही था।
2. लेखक	लेखक के यहाँ बाबर्ची का काम करता था।
3. लेखक की पत्नी	के मन में शंकर की स्मृति कभी-कभी साकार हो उठती है।
4. आभूषणों	की हर बात पूरी करने की कोशिश शंकर करता था।
5. छोटी बच्ची	की चोरी हुई थी।

ग. रिक्त-स्थानों की पूर्ति करो :

1. उसकी आँखों में आशा-निराशा .... दिखाई दे रहे थे।
2. मुझे ऐसे ही .... भिश्ती की आवश्यकता थी।
3. वह .... कर हँसती थी।
4. .... अपनी राम कहानी सुनाता रहता था।
5. शंकर लेखक के पैरों पर गिर पड़ा और .... रोने लगा।

V. पढ़ो और लिखो

उसने फिर दोहराया-- "बाबू जी ! नौकरी मिलेगी?"

"तुम क्या कर सकते हो? खाना बना सकते हो?" मैंने पूछा।

"क्यों नहीं? बाबू जी ! मैं सब काम कर सकता हूँ। मुझसे आप कोई भी काम करवा सकते हैं। मालिक, मुझ पर दया कीजिए।"

VI. योग्यता-विस्तार

अपने जीवन की किसी ऐसी घटना का वर्णन करो, जिसकी याद तुम्हारे मन में अभी तक बनी हुई हो।

पाठ 7

विशाखा का सपना

संरचना-संकेत

न................न
जैसे ही .... वैसे ही
- या होता (पूछा होता)

"मच्छर मियाँ, तुम मेरी करामात पूछ रहे हो? कल का समाचार-पत्र तो पढ़ लिया होता ! कुल मिलाकर 36 लोगों के हैज़े से मरने की खबर है। इसके अलावा कितने बीमार पड़े होंगे, यह पता नहीं" मक्खी बोली।

"बड़बोली तो तुम बहुत हो मक्खी मौसी! भिनभिनाती ही रहती हो दिन-भर। पर तुमने कभी अपने रंग-ढंग पर भी सोचा है?" मच्छर ने तपाक से ताना मारा।

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"यही कि गंदी-से-गंदी चीज़ों पर बैठ जाती हो। तुम्हें न तो गंदगी से परहेज़ है न सड़ी-गली चीज़ों से।"

"मच्छर महाशय, अपना चेहरा शीशे में तो देख लिया होता ! खून-चूसने वाले ! क्या तुम किसी दूसरी दुनिया में रहते हो?"

"रहता तो इसी दुनिया में हूँ मौसी, पर अपना ठाट-बाट कुछ निराला ही

है। और हाँ, मैं केवल खून ही नहीं चूसता, एक शरीर के रोगाणुओं को दूसरे शरीर में भी पहुँचाता रहता हूँ। एक बात बताऊँ?"

"कौन सी बात?"

"आदमियों की दुनिया में जो सुई लगाने की रीत चली है, वह हम मच्छरों से ही ली गई है।"

"वाह बेटे, बक-बक रहने दो। अपने ठोस काम बताओ।"
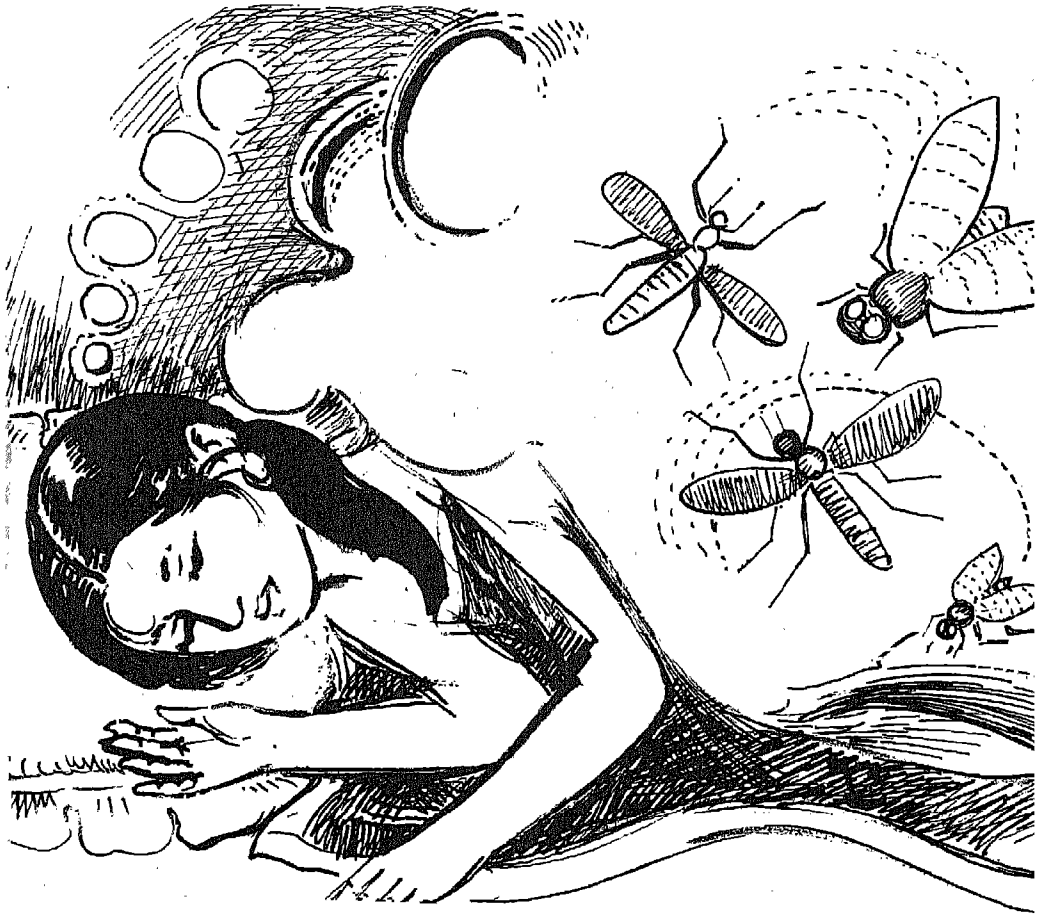
"एक मिनट ठहरो, अभी बताता हूँ" मच्छर ने सोई हुई विशाखा की ओर

देखा। फिर अपने डंक को धार दी। "कँपकँपी लगकर आने वाले तेज़ बुखा
का नाम तो तुमने सुना ही होगा। लोग "मलेरिया" कहते हैं उसे। मलेरिय
फैलाना हम मच्छरों का ही काम है। एक और भयंकर रोग है—हाथीपाँव। उ
भी हम मच्छर ही फैलाते हैं। हम मनुष्यों को ऐसा सताते हैं कि पूछो मत
जैसे ही बरसात का मौसम आता है, वैसे ही हमारी आबादी कई गुना ब
जाती है। फिर हम अपने अभियान पर निकल पड़ते हैं। मौका मिलते ही ह
मनुष्यों को काट लेते हैं। जैसे ही काटा, वैसे ही मलेरिया का परजीवी उनवे

शरीर में पहुँचा। समझ लो, हमारा काम हो गया। फिर उस रोगी का खून लेकर हम दूसरे सैकड़ों आदमियों में मलेरिया के कीटाणु पहुँचा देते हैं"—अकड़कर मच्छर ने कहा।

"जैसे तुम टेढ़े, वैसे ही तुम्हारा तरीका भी टेढ़ा। हम तो सीधी प्रणाली से काम करती हैं। गंदगी पर बैठती हैं, वहाँ से गंदगी के कीटाणु लेकर मनुष्यों के खाने-पीने की चीज़ों पर जा बैठती हैं और उन्हें दूषित कर देती हैं। जैसे ही मनुष्य उस दूषित सामग्री को खाता-पीता है, वैसे ही उसे हैजा, पेचिश, वमन, अतिसार जैसी बीमारियाँ पकड़ लेती हैं।"

"अच्छा मौसी, बहस रहने दो। न तुम हार मानोगी, न मैं। ठहरो, मैं अभी आया।"

"उधर कहाँ जा रहे हो?" मक्खी ने पूछा।

"धीरे बोलो, यह बच्ची सोई हुई है। मैं उसे काटने जा रहा हूँ। तुम्हें मेरी शक्ति का प्रमाण मिल जाएगा।"

तभी विशाखा नींद से जाग गई। यद्यपि कमरे में मच्छर और मक्खी नहीं थे, तो भी वह घबरा गई थी। कैसा डरावना सपना था। वह तो पसीने से नहा गई थी। यदि सचमुच मच्छर ने काट लिया होता तो? उसने इधर-उधर देखा। कोई मच्छर न देखकर उसकी जान-में-जान आई। सुबह हो चुकी थी और माँ घर के कामों में व्यस्त थी। विशाखा दौड़कर माँ के पास गई और उसे पूरा सपना एक ही साँस में कह सुनाया।

माँ विशाखा के सिर पर हाथ फेरकर कहने लगी— "तुम्हारे सपने में सच्चाई तो है। सचमुच मक्खियाँ और मच्छर बहुत-सी बीमारियाँ फैलाते हैं, पर तुम डरो मत। हम अपने घर में स्वच्छता का पूरा ध्यान रखते हैं। देखो, खाने-पीने की चीज़ें ढककर रखी हैं। घर का कूड़ा-करकट एक डिब्बे में बंद

कर दिया है। थोड़ी देर में सफाई वाली आएगी और उसे ले जाएगी। हम घर में किसी जगह पानी नहीं ठहरने देते। यहाँ न मच्छर पनप सकते हैं और न मक्खियाँ ही घुस सकती हैं। इसलिए ये मक्खी-मच्छर हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

"पर माँ, ये घर के बाहर भी तो पनप सकते हैं।"

"हाँ, उससे बचने का भी उपाय है। बाहर ऐसी कोई चीज़ नहीं खानी चाहिए जो खुली बेची जाती हो या जिसके आस-पास गंदगी हो। अच्छा, तुम नहा-धो लो, मैं अभी आई।"

"माँ, क्या हमें इनसे छुटकारा नहीं मिल सकता? ये मक्खी-मच्छर बढ़ते ही क्यों हैं?"

"अशिक्षा के कारण" - माँ ने कहा।

"मज़ाक मत करो माँ। मक्खी-मच्छर का शिक्षा-अशिक्षा से क्या नाता?"

"बेटी, तुम मेरा आशय नहीं समझीं। हालाँकि शिक्षा का मच्छर एवं मक्खी से कोई संबंध नहीं है, फिर भी अशिक्षा के कारण लोग सफाई के प्रति लापरवाह हो जाते हैं। खुले में शौच जाना, कूड़ा-करकट बिखेर देना, गड्ढ़ों में पानी सड़ने देना, चीज़ें ढककर न रखना जैसी आदतें पड़ जाती हैं। शिक्षा हमें इन बुराइयों से दूर रखती है। फिर मच्छर-मक्खी का सवाल ही नहीं। अच्छा, अब तो नहाने जाओ।"

"माँ, मैं समझ गई"– विशाखा ने कहा और नहाने चली गई।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. बड़बोली कीटाणु प्रमाण
भिनभिनाती दूषित मक्खी
परहेज़ व्यस्त मच्छर
महाशय गड्ढा स्वच्छता

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. भिनभिनाती ही रहती हो दिन-भर।
2. अच्छा होता, पहले अपना चेहरा शीशे में देख लेते।
3. वाह बेटे ! बक-बक रहने दो।
4. हम मनुष्यों को ऐसा सताते हैं कि पूछो मत!
5. जैसे ही काटा, वैसे ही मलेरिया का परजीवी उनके शरीर में पहुँचा।
6. समझ लो, हमारा काम हो गया।
7. जैसे तुम टेढ़े, वैसे तुम्हारा तरीका भी टेढ़ा।
8. मक्खी-मच्छर का शिक्षा-अशिक्षा से क्या नाता?

II. पढ़ो और समझो

क. बड़बोली = बढ़-चढ़ कर बातें करने वाली
तपाक से = झट से, तुरंत
रोगाणु = रोग फैलाने वाले कीटाणु
हाथीपाँव = एक बीमारी जिसमें रोगी के पैर बहुत मोटे हो जाते हैं

अभियान	=	किसी विशेष उद्देश्य से किया जाने वाला प्रयास
परजीवी	=	ऐसा जीव जो अन्य किसी जीव से आहार प्राप्त कर जीवित रहता है
प्रणाली	=	तरीका, ढंग
दूषित करना	=	गंदा करना, खराब करना
आशय	=	मतलब, अर्थ
निराला	=	दूसरों से भिन्न, अनोखा

ख.

ताना मारना	=	उलाहना देना
जान में जान आना	=	घबराहट दूर होना
दूसरी दुनिया में रहना	=	कल्पना के संसार में रहना
एक ही साँस में कह सुनाना	=	बिना रुके कहना
बक-बक करना	=	बेकार की बातें करना

ग. उदाहरण के अनुसार शब्द-रूप बदलो :

रंग-ढंग	**रंग और ढंग**
सड़ी-गली	....
खाता-पीता	....
नहाना-धोना	....
मक्खी-मच्छर	....

III. संरचना-अभ्यास

क. निम्नलिखित वाक्यों में "या तो" और "या" के स्थान पर "न तो" और "न" का प्रयोग करो :

उदाहरण :

मैं या तो दिल्ली जाऊँगा या हैदराबाद

→ मैं न तो दिल्ली जाऊँगा न हैदराबाद।

1. तुम्हें या तो आइसक्रीम मिलेगी या टॉफ़ी।

   ....

2. वह या तो तमिल सीखेगा या तेलुगु।

   ....

3. मैं या तो चाय पिऊँगा या कॉफ़ी।

   ....

4. मोहन या तो पढ़ेगा या खेलेगा।

   ....

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :

रामलाल नें गाना शुरू किया। बिजली चली गई।

→ रामलाल ने **जैसे ही** गाना शुरू किया **वैसे ही** बिजली चली गई।

1. मैं ट्रेन में चढ़ा। ट्रेन चल दी।

   ....

2. मैंने छाता खोला। वर्षा रुक गई।

   ....

3. मोहन ने पिंजरा खोला। तोता उड़ गया।

   ....

4. मैं घर पहुँचा। मेहमान आ गए।

....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलोः

> **उदाहरण :**
> तुमने आने से पहले फ़ोन नहीं किया
> → आने से पहले फोन तो कर दिया होता।

1. तुमने आने से पहले पत्र नहीं लिखा।

....

2. आपने पुलिस को बुलाने से पहले रिपोर्ट नहीं लिखवाई।

....

3. तुमने छुट्टी लेने से पहले प्रार्थना-पत्र नहीं दिया।

....

4. आपने समारोह करने से पहले अनुमति-पत्र नहीं लिखा।

....

घ. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित वाक्यों को जोड़कर लिखो :

> **उदाहरण :**
> वह गरीब है। वह पढ़ाई ज़ारी रखेगा।
> → यद्यपि वह गरीब है, तो भी वह पढ़ाई जारी रखेगा।

1. मैं अस्वस्थ हूँ। मैं इतना काम कर रहा हूँ।

....

2. सरकार बहुत कोशिश कर रही है। आबादी कम नहीं हो रही है।

....

3. हम प्रदूषण के खतरे से परिचित हैं। हम इसे रोकने के लिए कुछ नहीं करते।

   ....

4. हमारे यहाँ कई जाति और धर्म के लोग रहते हैं। हम सब में एकता है।

   ....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. मक्खी और मच्छर क्यों पनपते हैं?

2. मलेरिया का रोग कैसे फैलता है?

3. मक्खियों और मच्छरों से कैसे बचा जा सकता है?

4. विशाखा सपने में क्यों डर गई थी?

5. खुली रखी हुई चीजों को क्यों नहीं खाना चाहिए?

ख. निम्नलिखित गद्यांश के खाली स्थानों को नीचे दिए गए शब्दों से भरो :

तो सुनो मौसी। कँपकँपी लगकर आने वाले तेज़ .... का नाम तो तुमने सुना ही होगा। लोग .... कहते हैं उसे। मलेरिया फैलाना हम मच्छरों का .... काम है। एक और भयंकर रोग है ....। उसे भी हम मच्छर ही फैलाते हैं। .... मनुष्यों को ऐसा सताते हैं कि पूछो ....। जैसे ही बरसात का मौसम आता है .... ही हमारी आबादी कई-गुना बढ़ जाती ....। फिर हम अपने अभियान पर निकल पड़ते ....। मौका मिलते ही हम मनुष्यों को काट .... हैं। जैसे ही काटा वैसे ही

मलेरिया .... परजीवी उनके शरीर में पहुँचा। समझ लो ....
.... काम हो गया।

("ही, बुखार, हाथीपाँव, वैसे, हैं, है, हाथीपाँव, लेते, मलेरिया हम, है, मत, का, हमारा)

V. पढ़ो और लिखो

बड़बोली	भिनभिनाना	रोगाणु
कँपकँपी	अभियान	कीटाणु
दूषित	प्रणाली	प्रमाण
सच्चाई	मक्खियाँ	अशिक्षा

उपर्युक्त शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो।

VI. योग्यता-विस्तार

क. गंदगी से फैलने वाली बीमारियों की सूची बनाओ तथा उनसे बचने के उपायों पर कक्षा में चर्चा करो।

ख. 'सफ़ाई' विषय पर चित्र बनाओ।

पाठ 8

हमारा पड़ोसी देश : नेपाल

संरचना-संकेत

कहा जाता है–कहते हैं
–ना पड़ (जाना पड़ता है)
हो सकता है
कर्त्ता + ने

भारत के पड़ोसी देशों में नेपाल एक छोटा-सा देश है। यह हिमालय की गोद में बसा हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल 54,000 वर्गमील है। यहाँ अनेक ऊँची चोटियाँ और सुंदर घाटियाँ हैं। संसार की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट नेपाल में ही है। नेपाल के लोग इसे "सरगमाथा" कहते हैं। यहाँ अनेक जलधाराएँ और झीलें हैं। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण यहाँ आबादी बिखरी हुई है। पूरे नेपाल में कुल बारह शहर हैं। काठमांडू सबसे बड़ा शहर है, जो नेपाल की राजधानी है।

आपको शायद मालूम होगा कि काठमांडू अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। इसका नाम काठमांडू कैसे पड़ा ? कहा जाता है कि लकड़ी का बना हुआ एक बहुत बड़ा मंडप शहर के बीच में था।

नेपाल में अनेक जातियों के लोग रहते हैं। इतिहास से हमें पता चलता है कि मध्यकाल में भारत से अनेक जातियाँ नेपाल गईं और वहीं बस गईं। क्या आपको मालूम है कि वहाँ के मूल निवासी कौन हैं ? कुछ विद्वानों के अनुसार यहाँ की सबसे पुरानी जाति "किरात" है। आज भी इनकी 'खंपा', 'मदन' तथा 'लिंबू' नामक उपजातियाँ मिलती हैं। काठमांडू घाटी में 'नेबार' जाति के लोग भी रहते हैं।

यहाँ के निवासियों में गोरखा प्रमुख हैं। ये अपनी वीरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। इनकी भाषा "गोरखाली" है। यही नेपाल की राजभाषा है। यह हिंदी से बहुत मिलती-जुलती है। इस भाषा की लिपि देवनागरी है, जिसमें हिंदी लिखी जाती है।

नेपाल के उत्तरी क्षेत्र में शेरपा जाति के लोग रहते हैं। पर्वतारोहण में ये बड़े दक्ष माने जाते हैं। इन पर तिब्बती संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ अनेक जातियों के लोग रहते हैं। इस प्रकार हमें ज्ञात होता है कि इनके अलग-अलग रीति-रिवाज़ खान-पान और परंपराएँ हैं।

नेपाल में मंदिरों की भरमार है। कहा जाता है कि यहाँ जितने लोग हैं, उतने ही मंदिर हैं। यहाँ के मंदिरों में पशुपतिनाथ का मंदिर अधिक प्रसिद्ध है। यह काठमांडू से कुछ दूर बागमती नदी के तट पर है। शिवरात्रि के अवसर पर भारत से हज़ारों तीर्थयात्री यहाँ आते हैं।

नेपाल में इस प्रकार के और भी कई भव्य मंदिर हैं, जिनकी मूर्तिकला अनुपम है। यदि यह कहा जाए कि पूरा नेपाल ही कलाकारी का एक नमूना है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ की कला का सबसे सुंदर रूप लकड़ी, पत्थर और हाथी-दाँत से बनी हुई वस्तुओं में देखा जा सकता है।

शायद आपको मालूम होगा कि नेपाल संसार का एकमात्र हिंदू-राष्ट्र है। इसलिए यहाँ सभी हिंदू-त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं। पशुपतिनाथ
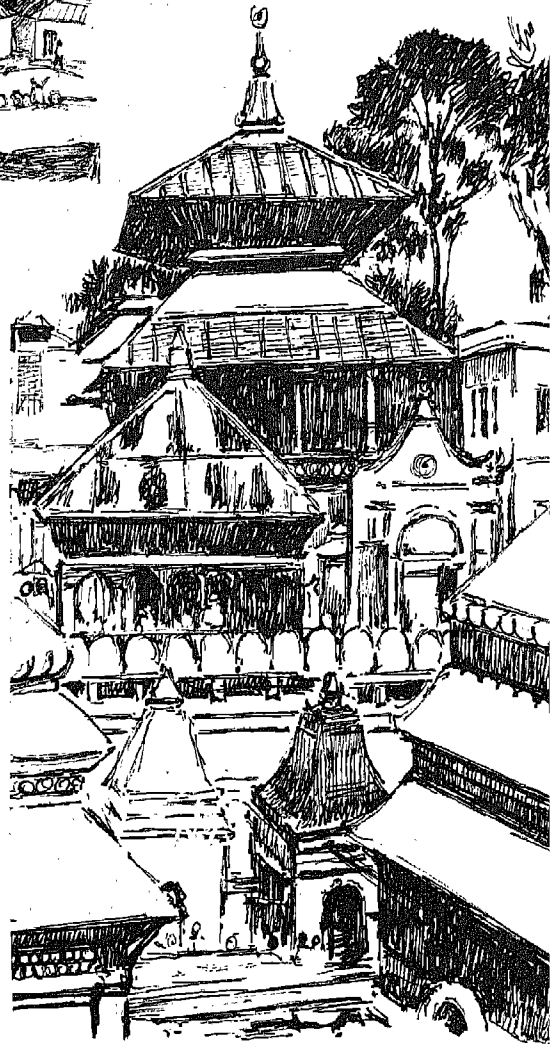
को यहाँ का शासक माना जाता है और राजा को पशुपतिनाथ का दीवान। इसी कारण यहाँ 'महाशिवरात्रि' को राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाया जाता है। इस दिन पशुपतिनाथ के मंदिर में एक विशाल मेला लगता है। भक्त-जन उपवास रखते हैं, शिवजी के दर्शन करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

दशहरा भी नेपाल का राष्ट्रीय पर्व है। इसे यहाँ 'दसई' कहा जाता है। इस दिन यहाँ दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वती की पूजा की जाती है। दीपावली को यहाँ "तीहर" कहा जाता है, क्योंकि दीपावली तीन दिन तक मनाई जाती है। पहले दिन को "काक तीहर" कहते हैं। इस दिन कौओं को भोजन दिया जाता है। नेपाल के लोगों की ऐसी मान्यता है कि कौआ यमराज का दूत है, इसलिए उसे खाना देकर प्रसन्न किया जाता है। दूसरे दिन कुत्तों को भोजन दिया जाता है। कुत्ता भैरव का वाहन है। इसे यमराज का द्वारपाल माना जाता है। तीसरे दिन गायों की पूजा की जाती है। गाय को लक्ष्मी का अवतार और धरती माँ का प्रतीक माना जाता है।

नेपाली लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है। यहाँ खेती करना बहुत कठिन कार्य है। पहाड़ियों पर सीढ़ीनुमा खेत बनाए जाते हैं। इनकी सिंचाई के लिए पानी की विशेष व्यवस्था करनी पड़ती है, तब अनाज पैदा होता है। यहाँ की मुख्य फसल धान और मकई है। तराई में धान, गेहूँ, दालें तथा गन्ना उगाया जाता है। तंबाकू भी यहाँ की मुख्य पैदावार है।

नेपाल के घने वन यहाँ की समृद्धि में बहुत सहायक हैं। शीशम, चीड़, देवदारु तथा भोजपत्र जैसे वृक्ष यहाँ खूब होते हैं। इन वृक्षों की लकड़ी का प्रयोग कलाकृतियों, फ़र्नीचर तथा इमारतों में किया जाता है। प्राकृतिक संपदा की दृष्टि से नेपाल वास्तव में सौभाग्यशाली है।

नेपाल के पहाड़ों में गेरू, नीलाथोथा, सीसा आदि खनिज पाए जाते हैं। यहाँ लोहा, जस्ता, अभ्रक तथा ताँबे की खानें भी हैं। नदियाँ, झीलें और झरने

यहाँ के प्रमुख जलस्रोत हैं। आजकल यहाँ पर इन्हीं जलधाराओं से बिजली भी पैदा की जा रही है।

प्राचीन ग्रंथों से हमें पता चलता है कि यहाँ पर पहले एक बहुत बड़ी झील थी। बाद में उस झील के एक किनारे को काट दिया गया इस कारण सारा पानी बह गया और वह झील घाटी में बदल गई। अब इस घाटी में झर-झर झरते झरने हैं, कल-कल करती नदियाँ हैं और शांत सघन वन हैं। नेपाल के सुंदर दृश्यों को देखकर दर्शकों का मन नहीं भरता। यही कारण है कि पूरे साल यहाँ पर्यटक दिखाई पड़ते हैं।

भारत और नेपाल के बीच मैत्री और सहयोग की भावना है। इन दोनों देशों के बीच बहुत अधिक व्यापार होता है। भारत इस समय भी नेपाल को विभिन्न प्रकार के उद्योगों के विकास में सहयोग दे रहा है।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

पड़ोसी	क्षेत्रफल	घाटियाँ
काठमांडू	समृद्धि	प्राकृतिक
काष्ठमंडप	पर्वतारोहण	संस्कृति
प्रसिद्ध	राष्ट्रीय	अतिशयोक्ति
मूर्तिकला	प्रसन्न	व्यवस्था
द्वारपाल	जलस्रोत	कलाकृतियाँ
सौभाग्यशाली	भोजपत्र	पर्यटक

II. पढ़ो और समझो

क.

आबादी	=	जनसंख्या
प्रसिद्ध	=	मशहूर
काष्ठ	=	लकड़ी
दक्ष	=	कुशल
पर्वतारोहण	=	पहाड़ पर चढ़ना
ज्ञात होना	=	मालूम होना, पता होना
भव्य	=	विशाल और सुंदर
अनुपम	=	जिसकी उपमा न दी जा सके, अनोखा
अतिशयोक्ति	=	किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना
पर्व	=	त्योहार
द्वारपाल	=	दरवाजे पर पहरा देने वाला
पर्यटक	=	यात्री
व्यवसाय	=	रोज़गार
समृद्धि	=	संपन्नता
संपदा	=	संपत्ति
मैत्री	=	दोस्ती

ख.

सौभाग्यशाली	×	दुर्भाग्यशाली
ऊँची	×	नीची
विद्वान्	×	मूर्ख
वीरता	×	कायरता

व्यवस्था × अव्यवस्था

प्राचीन × नवीन

ग. मिलती-जुलती – एक-जैसी, समान

अलग-अलग – विभिन्न

खान-पान – खाना और पीना, भोजन संबंधी आदतें

कोना-कोना – हर क्षेत्र, सब तरफ

झर-झर – झरने की आवाज़

घ. 1. इसका नाम काठमांडू कैसे पड़ा ?

इसको काठमांडू क्यों कहते हैं ?

2. नेपाल में अनेक जातियों के लोग रहते हैं।

नेपाल में अनेक जातियाँ हैं।

3. नेपाल में मंदिरों की भरमार है।

नेपाल में बहुत-से मंदिर हैं।

4. दशहरे को नेपाल में "दसईं" कहा जाता है।

दशहरे को नेपाल में "दसईं" कहते हैं।

ङ 1. **झर-झर झरते** झरने हैं।

2. **कल-कल करती** नदियाँ हैं।

3. यह हिंदी से **मिलती-जुलती** है।

4. अलग-अलग रीति-रिवाज़, **खान-पान** और परंपराएँ हैं।

5. भारत के कोने-कोने से शिवभक्त यहाँ पर पशुपतिनाथ के दर्शन के लिए आते हैं।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
नेपाल में दीपावली को तीहर **कहा जाता** है
→ नेपाल में दीपावली को तीहर **कहते** हैं।

1. उर्दू दाएँ से बाएँ **लिखी जाती** है।

   ....

2. यहाँ दशहरा धूमधाम से **मनाया जाता** है।

   ....

3. इस स्कूल में मराठी भी **पढ़ाई जाती** है।

   ....

4. भारत में अंग्रेज़ी भी बोली जाती है।

   ....

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
मोहन और अजय रोज़ **दो घंटे पढ़ते** हैं
→ मोहन और अजय को रोज़ दो घंटे **पढ़ना पड़ता**

1. मोहन रोज़ बारह बजे तक **जागता** है।

   ....

2. बच्चे आठ बजे **सोते** हैं।

   ....

3. छात्र दो बजे रात तक **पढ़ते हैं।**

....

4. माताजी चार घंटे काम **करती हैं।**

....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
>
> शायद आप नेपाल के बारे में **पढ़ेंगे**
>
> → हो सकता है आप नेपाल के बारे में पढ़ें।

1. शायद मोहन काठमांडू के बारे में लिखेगा।

....

2. शायद बच्चे बगीचे में खेलने जाएँगे।

....

3. शायद पिताजी कल पटना से **लौटेंगे।**

....

4. शायद आज शिमला में बर्फ़ **गिरेगी।**

....

घ. उदाहरण के अनुससार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
>
> **बच्चों को** एक फ़िल्म **दिखाई गई**
>
> → **बच्चों ने** एक फ़िल्म **देखी।**

1. छात्रों को पूरा पाठ **पढ़ाया गया।**

....

2. लड़कों को पूरी कहानी **सुनाई गई।**

....

3. लड़कियों को सिलाई **सिखायी गयी।**

....

4. लोगों को भजन **सुनाए गए।**

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. नेपाल की राजभाषा क्या है ?
2. काठमांडू शहर का पुराना नाम क्या है?
3. नेपाल में प्रसिद्ध मंदिर कौन-सा है?
4. दीपावली को 'तीहर' क्यों कहा जाता है?
5. नेपाल के प्रमुख वृक्षों के नाम बताओ।
6. भारत और नेपाल की तीन समानताएँ बताओ।

ख. 1. "अ" और "आ" को सही ढंग से मिलाओ।

(अ)	(आ)
नेपाल	बागमती नदी पर स्थित है।
महाशिवरात्रि	'दसई' कहा जाता है।
दीपावली को	राष्ट्रीय त्योहार के रूप में मनाई
दशहरे को	संसार का एकमात्र हिंदू राष्ट्र है
पशुपतिनाथ मंदिर	'तीहर' कहा जाता है।

2. दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त-स्थान की पूर्ति करो :

अ. पर्वतारोहण में .... बड़े दक्ष माने जाते हैं।

क. गोरखा ख. शेरपा ग. किरात

ब. नेपाल की राजधानी .... है।

क. काठमांडू ख. कोहिमा ग. गंगटोक

स. नेपाली लोगों का मुख्य व्यवसाय .... है।

क. खेती ख. कपड़ा बुनना ग. चमड़े का काम

द. नेपाल को विभिन्न प्रकार के उद्योगों में .... सहयोग दे रहा है।

क. अमेरिका ख. भारत ग. जापान

3. सही कथन के आगे सही (√) का निशान लगाओ :

अ. काठमांडू अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

ब. काठमांडू की सबसे पुरानी जाति किरात है।

स. काठमांडू के निवासियों में गोरखा प्रमुख हैं।

द. गोरखा अपनी वीरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध नहीं हैं।

य. हिंदी नेपाल की राजभाषा है।

V. पढ़ो और लिखो

क. कुछ विद्वानों के अनुसार यहाँ की सबसे पुरानी जाति किरात है। आज भी इनकी खंपा, मदन तथा लिंबू नामक उपजातियाँ पाई जाती हैं। काठमांडू-घाटी में नेवार जाति के लोग भी रहते हैं।

ख. 1. इस भाषा की लिपि देवनागरी है जिसमें हिंदी लिखी जाती है।

2. यहाँ अलग-अलग रीति-रिवाज़, खान-पान और परंपराएँ हैं।

3. यदि यह कहा जाए कि पूरा नेपाल ही कलाकारी का एक नमूना है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

ग. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो :

अतिशयोक्ति, प्रसिद्ध, पर्यटक, अनुपम, पर्व

VI. योग्यता-विस्तार

1. किसी पड़ोसी देश के बारे में जानकारी प्राप्त करो और उसे में बताओ।
2. नेपाल के दर्शनीय स्थानों और मंदिरों के चित्र लगाकर एलबम तैयार करो।

पाठ 9

एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर में यों कढ़ी।

दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
गिर पड़ूँगी चू अँगारे पर किसी,
या गिरूँगी मैं कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा गिरी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते,
जब कि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु अकसर छोड़ना घर का उन्हें,
बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

ज्यों	बूँद	गोद
यूँ	कढ़ी	समंदर
अनमनी	सीप	मोती
झिझकती	अकसर	मुँह

ख.
1. हाय, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी
2. लोग यों ही हैं झिझकते सोचते
3. किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें
4. बूँद-सा कुछ और ही देता है कर
5. दैव, मेरे भाग्य में है क्या बदा
   मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में

II. पढ़ो और समझो

कढ़ी = बाहर निकली
समंदर = समुद्र, सागर
अनमनी = उदास

झिझकना	=	डर या शर्म के कारण हिचकना
दैव	=	ईश्वर, विधाता
धूल में मिलना	=	नष्ट होना
भाग्य में क्या बदा है	=	भाग्य में क्या लिखा है

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. 1. सोचने फिर-फिर यही जी में लगी

....

2. एक सुंदर सीप का मुँह था खुला

....

3. ....

जब कि उनको छोड़ना पड़ता है घर

ख. उदाहरण के अनुसार कविता की पंक्ति को गद्य में बदलो :

उदाहरण : ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
→ एक बूँद बादलों की गोद से निकलकर
ज्यों ही कुछ आगे बढ़ी।

1. बह चली उस ओर तब ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।

....

2. एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

....

3. किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें,
   बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।
   ....

IV. पढ़ो और बताओ

1. बादलों की गोद से निकलने पर बूँद ने क्या सोचा?
2. हवा का बूँद पर क्या प्रभाव पड़ा?
3. बूँद मोती कैसे बनी?
4. घर छोड़ने पर लोग क्यों झिझकते हैं?
5. इस कविता से तुम्हें क्या सीख मिलती है?

V. योग्यता-विस्तार

1. कविता को याद करो और इसका सस्वर वाचन करो।
2. अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" की कोई अन्य कविता पुस्तकालय से ढूँढ़कर पढ़ो।

पाठ 10

वन देवी

संरचना संकेत

– ने लग
– कहीं.................कहीं

पुराने ज़माने की बात है। किसी गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। वह काम की तलाश में कहीं जा रहा था। रास्ते में एक जंगल पड़ा। उसे दूर से पलाश के पेड़ दिखाई पड़े जो लाल रंग के फूलों से लदे हुए थे। निकट पहुँचने पर उसने देखा– कहीं बरगद और पीपल के ऊँचे-ऊँचे पेड़ हैं, तो कहीं साल और सागौन के। अनेक पेड़ों के तो वह नाम भी नहीं जानता था। झाड़ियों और पौधों से धरती ढँकी हुई थी। कहीं-कहीं तो वन इतना घना था कि सूर्य की किरणें भी धरती पर नहीं पहुँच रही थीं।

धीरे-धीरे वह वन से बाहर आ गया। अब वह खुले मैदान में था। उसे कड़ी धूप सताने लगी। भूख भी लगने लगी थी। प्यास से गला सूखने लगा। उसके लिए अब चलना कठिन हो गया। एक स्थान पर उसे दो-चार आम के पेड़ दिखाई पड़े। वह उस ओर बढ़ा और एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसने देखा– पेड़ों पर बहुत सुंदर फल लगे हैं। उसके मुँह में पानी आ गया। उसने पके आम तोड़े और पेट-भर खाए। पास ही एक कुँआ था। उसने कुँए से

पानी खींच कर पिया। खा-पीकर इधर-उधर देखा तो उसे कुछ पौधे कुम्हलाए-हुए-से दिखाई पड़े। इन्हें भी प्यास लगी होगी– उसने सोचा। उसने तुरंत कुँए से पानी खींचा और उनको सींचने लगा।
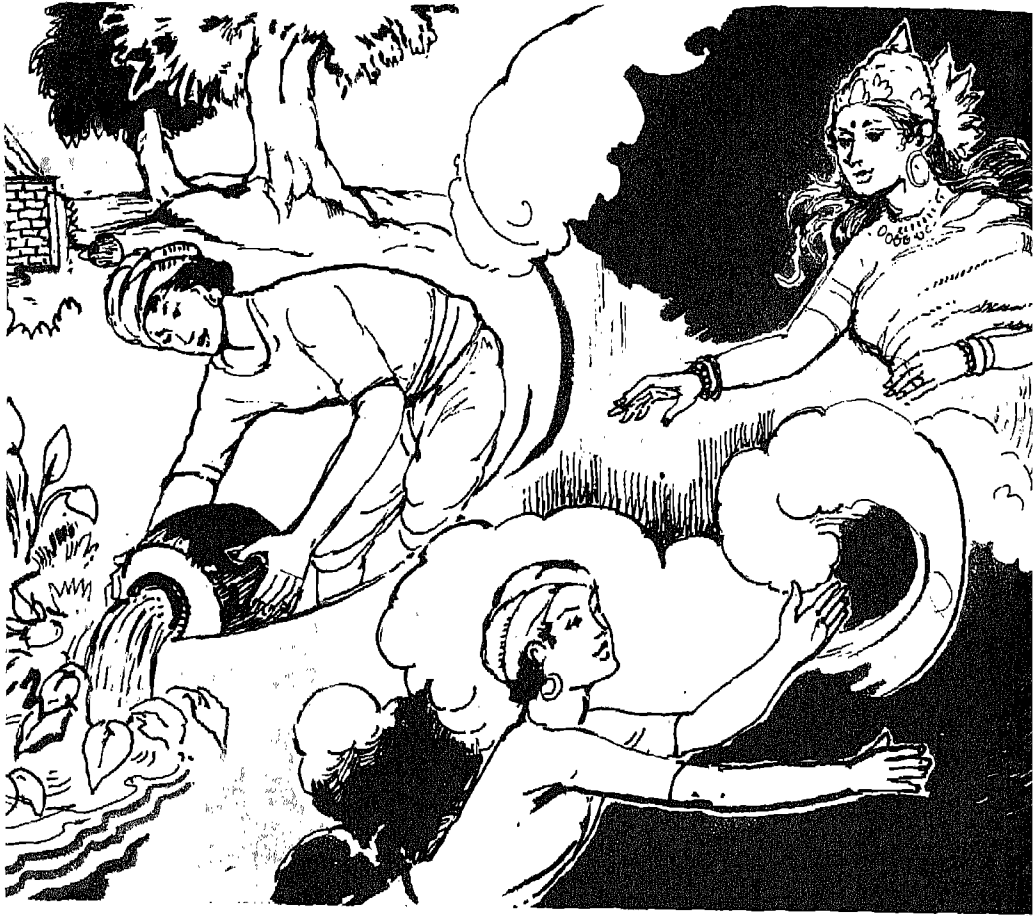
तेज़ धूप पड़ रही थी। वह पेड़ के नीचे लेट गया। कुछ ही देर में उसकी आँख लग गई। उसे गहरी नींद आ गई।

उसे एक सपना आया। सपने में वन देवी प्रकट हुई। उसने देवी के पैर छुए। देवी ने उसे आशीर्वाद दिया और बोली– "माँगो, तुम्हें क्या-क्या

चाहिए?" वह सकपका गया। देवी ने कहा— डरो मत, तुमने आज एक बहुत अच्छा काम किया है। प्यासे पेड़ों को पानी पिलाया है। अब ये पेड़ हरे-भरे रहेंगे, मीठे फल देंगे और राहगीरों को छाया देंगे। इसलिए मैं बहुत खुश हूँ और तुम्हें तीन वर देना चाहती हूँ। माँगो, तुम्हें क्या-क्या चाहिए?"

आदमी ने माँगा— खाने को स्वादिष्ट भोजन, पहनने को कीमती वस्त्र और रहने को सोने का महल।

देवी ने कहा— "तथास्तु। तुम्हारी ये इच्छाएँ पूरी होगीं, पर एक शर्त है। तुम उस महल से बाहर नहीं निकल पाओगे।" आदमी मान गया। देवी अंतर्धान हो गई।

सपना टूटा तो उसने पाया कि वह अपने परिवार के साथ सोने के एक बड़े महल में है। सबने कीमती वस्त्र पहने हुए हैं। मेज़ पर खाने-पीने की अनेक स्वादिष्ट चीज़ें रखी हुई हैं। उन्होंने पेट-भर भोजन किया। बड़े आनंद से दिन बीतने लगे। सारा परिवार मौज-मस्ती करता रहा।

धीरे-धीरे सोने के महल में उसका दम घुटने लगा। वह कहीं जा नहीं सकता था, किसी से मिल नहीं सकता था। उसके बच्चे खुले मैदान में खेलने के लिए तरसने लगे। उन्हें कहीं खुली हवा भी नहीं मिलती थी। सब ओर सोने की दीवारें-ही-दीवारें! वे सब बड़े उदास रहने लगे।

आदमी धीरे-धीरे समझ गया कि उसने क्या खो दिया है? उसे फिर वन देवी याद आई। उसे यह भी याद आया कि लालच में उसने ही तो वन देवी से यह सब माँगा था। बढ़िया भोजन, अच्छे वस्त्र और सोने के महल तो मिल गये थे, पर मन की शाँति खो गई थी। वन देवी को याद करते-करते उसकी आँख लग गई।

सपने में फिर वन देवी प्रकट हुईं। उसने तुरंत देवी के पैर छुए और गिड़गिड़ा कर कहने लगा– "माँ, मुझे बचा लो। मुझे इस महल से बाहर निकालो। मुझे वहीं वापस भेज दो, जहाँ हरे-भरे पेड़ हैं, लहलहाती घास है, ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं। पर्वतों से झरने बहते हैं, उफनती नदियाँ और चहचहाती चिड़ियाँ हैं। मैं खुला आसमान देखना चाहता हूँ। हे देवी! मेरे बच्चे भूल चुके हैं कि फूल कैसे खिलते हैं? बादल कैसे बरसते हैं? कृपा करके मुझे उसी जंगल में वापस भेज दो जहाँ से मैं इस महल में आया था। मुझे यह सोने का महल नहीं चाहिए।"

वन देवी मुस्कराई और बोली– "सोने के महल में रहने का सुख भोग लिया? अब स्वादिष्ट भोजन नहीं चाहिए? सजीले-भड़कीले वस्त्र नहीं चाहिए?"

"मुझे नहीं चाहिए माँ! यह सब नहीं चाहिए। जो सुख-शाँति प्रकृति की गोद में है, वह सोने के महलों में कहाँ?" —वह बोला।

"तो अब तुम चाहते क्या हो?" देवी ने पूछा।

"मैं पेड़-पौधों के साथ रहना चाहता हूँ। उन्हें सींचना चाहता हूँ। पेड़-पौधों और पशु-पक्षियों के बीच मैं झोंपड़ी में भी रह लूँगा। मुझे मेरे गाँव भेज दो माँ"! —वह फिर बोला।

"ऐसा ही होगा" देवी ने कहा और अंतर्धान हो गई।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

ज़माना	झाड़ियाँ	तलाश
पलाश	प्रकट	प्रकृति
आशीर्वाद	स्वादिष्ट	मुस्कराई
प्यास	गिड़गिड़ाती	लहलहाती
पेड़-पौधे	भड़कीले	सजीले

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. कहीं बरगद और पीपल के ऊँचे-ऊँचे पेड़ हैं तो कहीं साल और सागौन के।
2. माँगो, तुम्हें क्या-क्या चाहिए?
3. सोने के महल में रहने का सुख भोग लिया?

II. पढ़ो और समझो

क. तलाश = खोज
कुम्हलाना = मुरझाना
सकपकाना = घबराना
सजीला = सुंदर
गिड़गिड़ाना = विनती करना
तथास्तु = ऐसा ही हो
कृपा करके = कृपया

ख. दम घुटना = बेचैन होना
आँख लगना = नींद आना
अंतर्धान होना = दृष्टि से ओझल होना
मुँह में पानी आना = खाने की इच्छा होना

ग. हरा-भरा → हरा और भरा
मौजमस्ती → मौज और मस्ती
पशु-पक्षी → पशु और पक्षी
सुख-शाँति → सुख और शाँति
सजीले-भड़कीले → सजीले और भड़कीले
पेड़-पौधे → पेड़ और पौधे
इधर-उधर → इधर और उधर

घ. धीरे-धीरे = बहुत मंद गति से, कुछ समय बीतने पर
करते-करते = बार-बार करते हुए, बहुत बार करने पर
दीवारें-ही-दीवारें = बहुत-सी दीवारें
पेड़-ही-पेड़ = बहुत-से पेड़

ङ कुम्हलाना × खिलना
प्रकट × अंतर्धान
खुला × बंद
सुख × दुख

च. स्वादिष्ट भोजन
पके फल
ऊँचे पेड़
तेज़ धूप
कीमती कपड़े
खुला मैदान
खुली हवा
खुले बरतन
खुली किताबें

छ. लहलहाते खेत
चहचहाती चिड़ियाँ
गिड़गिड़ाता भिखारी
डगमगाती नाव
चमचमाते कपड़े
सकपकाता आदमी

ज. 1. वह लपककर उस ओर बढ़ा।
वह फुर्ती से उस ओर बढ़ा।
2. सपने में वन देवी प्रकट हुई।
सपने में वन देवी दिखाई पड़ी।

3. वन देवी अंतर्धान हो गई।
   वन देवी आँखों से ओझल हो गई।
4. मैं तुम्हें तीन वर देना चाहती हूँ।
   मैं तुम्हारी तीन इच्छाएँ पूरी करना चाहती हूँ।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण : उसने देखा → वह देखने लगा

1. उसने सोचा..............................
2. राम ने पौधे सींचे..............................
3. शीला ने खाना बनाया..............................
4. रचना दौड़ी..............................

ख.

उदाहरण : सीता ने पढ़ना शुरू किया → सीता पढ़ने लगी।

1. चिड़ियों ने चहचहाना शुरू किया ।
   ....
2. शर्माजी ने डाँटना शुरू किया।
   ....
3. बच्चों ने एक साथ चिल्लाना शुरू किया।
   ....
4. एक-एक करके मेहमानों ने जाना शुरू किया।
   ....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलोः

....

उदाहरण : एक जगह किताबें पड़ी हुई हैं और दूसरी जगह कागज़ के टुकड़े → कहीं किताबें पड़ी हुई हैं तो कहीं कागज के टुकड़े।

1. एक जगह लड़के खेल रहे हैं और दूसरी जगह लड़कियाँ→

   ....

2. दुकान में एक जगह गुब्बारे टँगे हैं और दूसरी जगह चाकलेट के पैकेट→

   ....

3. पहाड़ी पर एक जगह बादल थे और दूसरी जगह धूप→

   ....

4. बाज़ार में एक जगह कूड़ा पड़ा है और दूसरे स्थान पर कीचड़ →

   ....

5. शहर में एक जगह नृत्य की धूम थी और दूसरी जगह संगीत की →

   ....

घ. नीचे दिए गए वाक्यों में "देना" क्रिया के स्थान पर "पड़ना" क्रिया के बिभिन्न प्रयोग करो :

उदाहरण : मुझे पहरेदार की आवाज़ सुनाई दी → मुझे पहरेदार की आवाज सुनाई पड़ी

1. राम आज बाज़ार में दिखाई दिया।

....

2. वह मेरी बात सुनकर चल दिया।

....

3. दूध न मिलने पर बच्चे रो दिए।

....

4. वह विद्यालय की ओर चल दिया।

....

ङ रिक्त-स्थानों में कोष्ठक में दी गई क्रियाओं के सही रूप भरो :

1. मैं ग्यारह बजे खाना .... लेता हूँ। (खाना)
2. बारिश में घास हरी .... जाती है। (होना)
3. लड़के ने पूरा पन्ना .... लिया। (पढ़ना)
4. गाड़ी नहीं ....। (चलना)

च. नीचे दिये वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण :
पिताजी कलम चाहते हैं → क्या पिताजी को कलम चाहिए?

1. शर्माजी भोजन चाहते हैं।

....

2. मदन पुरस्कार चाहता है।

....

3. छात्र किताब चाहता है।

....

4. मोहन पतंग चाहता है।

....

5. शीला फ्रॉक चाहती है।

....

घ. नीचे दिए वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण :

पिताजी को कलम चाहिए → पिताजी चाहते हैं कि उन्हें कलम मिले

1. शर्माजी को भोजन चाहिए।

....

2. छात्रों को किताबें चाहिए।

....

3. मोहन को पतंग चाहिए।

....

4. शीला को फ्रॉक चाहिए।

....

5. मदन को पुरस्कार चाहिए।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. दिए गए शब्दों से रिक्त-स्थान भरो :

आँख, सुख, खुली, प्यास, कीमती, कुएँ, हरे-भरे, झोंपड़ी

1. .... से गला सूख गया।
2. उसने .... से पानी खींच कर पिया।
3. कुछ ही देर में उसकी .... लग गई।

4. अब ये पेड़ .... रहेंगे।
5. सबने .... वस्त्र पहने हुए हैं।
6. उन्हें कहीं .... हवा भी नहीं मिलती थी।
7. सोने के महल में रहने का .... भोग लिया।
8. पशु-पक्षियों के बीच मैं .... में भी रह लूँगा।

ख. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो :

1. जंगल में पलाश के फूल कैसे लग रहे थे?
2. कुम्हलाए पौधों को देखकर आदमी ने क्या किया?
3. आदमी ने वन देवी से क्या माँगा?
4. सोने के महल में आदमी का दम क्यों घुटने लगा?
5. उसने वन देवी को फिर से क्यों याद किया?

V. पढ़ो और लिखो

आदमी धीरे-धीरे समझ गया कि उसने क्या खो दिया है? उसे फिर वन देवी याद आई। उसे यह भी याद आया कि लालच में उसने ही तो वन देवी से यह सब माँगा था। बढ़िया भोजन, अच्छे वस्त्र और सुंदर भवन तो पा लिए थे, पर मन की शाँति खो दी थी। वन देवी को याद करते-करते उसकी आँख लग गई।

VI. योग्यता-विस्तार

अगर तुम्हें वन देवी मिले तो तुम क्या वर माँगोगे? वन देवी और अपने संवाद लिखो।

पाठ 11

वे आँखें

संरचना-संकेत

लेटे-लेटे दौड़ते-दौड़ते –ना पड़ संयुक्त क्रियापद

कुतुबुद्दीन सुलतान की सेना में सिपाही था। वह सुलतान के बहुत निकट था। उसे शिकार खेलने का बेहद शौक था। सुलतान की सेवा के बाद जब भी उसे समय मिलता, वह घने जंगल में दूर तक निकल जाता। किसी-न-किसी जानवर का शिकार करके ही लौटता। वह खाली हाथ कभी नहीं लौटता था। इसलिए कभी-कभी उसके कई दिन जंगल में ही बीतते थे। सुलतान की सेवा में उपस्थित न होने के कारण वह कई बार डाँट भी खा चुका था पर उसकी वफ़ादारी के कारण सुलतान उसे कोई सज़ा नहीं देता था।

एक दिन कुतुब अवसर पाकर शिकार के लिए निकला। घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते पूरा दिन बीत गया, किंतु कोई जानवर दिखाई नहीं पड़ा। शाम होते-होते उसे घाटी में एक झरना नज़र आया। वह घोड़े से उतरा। उसने जल पिया, घोड़े को पिलाया और आसपास जानवरों के पैरों के निशान देखने लगा। उसे कई

निशान दिखलाई पड़े। उसे लगा कि यहाँ जंगली जानवर अवश्य पानी पीने के
लिए आते होंगे। उसने थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे घोड़े को बाँधा औ
चुपचाप लेटकर जानवर के आने का इंतज़ार करने लगा। घंटों बीत गए, रा
गहरा गई, किंतु कोई जानवर नहीं आया। जब भी हवा के झोंकों से सूखे प
खड़-खड़ करते, कुतुब चौकन्ना हो उठता और निशाना साध लेता। बहुत दे
तक जब कोई जानवर नज़र नहीं आया तो उसने ठंडी आह भरी। उसने पै
फैलाकर शरीर को ढीला छोड़ दिया। किसी पक्षी की आवाज़ सुनकर उसके
मन में पुनः आशा जागती, किंतु व्यर्थ। पूरी रात इसी तरह गुज़ारनी पड़ी। प
कोई जानवर नहीं आया तो नहीं ही आया। क्या आज निराश होकर ही
लौटना पड़ेगा? क्या आज कोई शिकार हाथ नहीं लगेगा? लेकिन शिकार कि
बिना कैसे लौटा जा सकता है? इंतज़ार भी कब तक करूँ? इसी उधेड़-बुन में
उसकी पलकें झपक गईं।

अचानक घोड़े की हिनहिनाहट सुनकर उसकी आँखें खुल गईं। देखा तो
थोड़ी दूरी पर एक हिरन का बच्चा घूमता दिखलाई पड़ा। कुतुब ने देर नहीं
की। तुरंत उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। मृगशावक पीछे खतरा जानक
कुलाँचें भरने लगा। कभी अपने बचाव क लिए झाड़ी के पीछे छिप जाता
कभी कुलाँचें भरने लगता। मृगशावक दौड़ते-दौड़ते थकने लगा था। अब
शावक और घोड़े के बीच बहुत-कम फासला रह गया था। किसी भी क्षण वह
साँवला-सलोना शावक कुतुब के तीर का शिकार हो सकता था।

अचानक एक हिरनी झाड़ी से निकली। उसने मृगशावक को आड़ में ले
लिया। कुतुब ने घोड़ा रोका, किंतु यह क्या? हिरनी तो भाग ही नहीं रही है।
वह अपने स्थान पर ही अडिग-अटल खड़ी है। घुड़सवार की ओर टकटकी

लगाकर देख रही है। कुतुब ने उसकी आँखों में झाँका। उसे लगा, मानो वे आँखें कह रही हों– "इस भोले और मासूम बच्चे के पीछे तुम क्यों पड़े हो? इसे तुम क्यों मारना चाहते हो? कितना माँस मिलेगा इससे तुम्हें? अरे, तुम्हें शिकार ही करना है तो लो, मैं खड़ी हूँ। करो मेरा शिकार। मुझे मारो।"

कुतुब का मन भीतर तक पसीज उठा। उसे हिरनी की आँखों में ममता, त्याग और बलिदान की झलक दिखाई पड़ी। ऐसा अनुभव उसने पहले कभी नहीं किया था। वह सोचने लगा– यह कैसा करिश्मा है? एक माँ अपने बच्चे को बचाने के लिए शिकारी के सामने निडर खड़ी है। हिरनी की वे आँखें उसके अंतर्मन तक उतरती जा रही थीं। उसने उसी क्षण धनुष-बाण फेंक दिया और नगर की ओर वापस चल दिया।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. शिकार अंतर्मन चौकन्ना
इंतज़ार गुज़ारना अकस्मात्
हिनहिनाहट वफ़ादारी व्यग्रता
करिश्मा कुलाँचें मृगशावक

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. इंतज़ार भी कब तक करूँ?
2. किंतु यह क्या?
3. क्या आज निराश होकर ही लौटना पड़ेगा?
4. क्या आज कोई शिकार हाथ नहीं लगेगा?
5. उसके मन में पुनः आशा जागती, किंतु व्यर्थ।

II. पढ़ो और समझो

क. बेहद = ज़रूरत से ज़्यादा
वफ़ादारी = निष्ठा, स्वामिभक्ति
चौकन्ना = होशियार
अकस्मात् = अचानक
व्यर्थ = बेकार
उधेड़-बुन = सोच-विचार
मृगशावक = हिरन का बच्चा
सलोना = सुंदर
मासूम = भोला

ममता	=	अपनेपन का भाव, स्नेह
बलिदान	=	न्योछावर
व्यग्रता	=	अकुलाहट, बेचैनी
करिश्मा	=	चमत्कार
टकटकी लगाना	=	बिना पलक झपकाए लगातार देखना
पसीज उठना	=	दया का भाव आ जाना
अंतर्मन तक	=	मन के अंदर तक

ख. निकट × दूर
मासूम × चालाक
वफ़ादारी × बेवफाई
व्यर्थ × उपयोगी
निडर × डरपोक

ग. व्यग्र → व्यग्रता
निकट → निकटता
निश्चिंत → निश्चिंतता

III. संरचना-अभ्यास

क. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो :
जगाना, फाड़ना, सिखाना, सुनाना, दौड़ाना

ख. निम्नलिखित वाक्यों को दिए गए उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण : राम दौड़-दौड़कर थक गया
→ राम दौड़ते-दौड़ते थक गया।

1. मोहन दौड़-दौड़कर हाँफ गया।

....

2. बच्चा रो-रोकर सो गया।

....

3. माँ मेरी बात सुन-सुनकर ऊब गई।

....

4. कुतुब शिकार खोज-खोज कर थक गया।

....

ग. नीचे दिए वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण : मोहन ने किताब पढ़ी
→ मोहन को किताब पढ़नी पड़ी।

1. नीता ने पत्र लिखा।

....

2. पिताजी ने दवाई खाई।

....

3. माँ ने खाना पकाया।

....

4. मयूर ने पुस्तक खरीदी।

....

5. रामू ने अकेले मेज़ उठाई।

....

घ. नीचे दिए वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण : शीला **रोने लगी**
→ शीला **अचानक** रो **पड़ी**।

1. मोहन चलने लगा।

   ....

2. बच्चा हँसने लगा।

   ....

3. महल गिरने लगे।

   ....

4. नाली से साँप निकलने लगा।

   ....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. कुतुब सुलतान की सेवा में उपस्थित क्यों नहीं हो पाता था?
2. जंगली जानवरों के आने का पता कुतुब को कैसे चला?
3. घोड़े की हिनहिनाहट किसका संकेत थी?
4. कुतुब घोड़ा क्यों दौड़ा रहा था?
5. हिरनी की आँखों में कुतुब को क्या दिखाई पड़ा?
6. कुतुब ने धनुष-बाण क्यों फेंक दिया?

ख. उदाहरण के अनुसार मिलान करो :

ग. दिए गए परसर्गों की सहायता से वाक्य पूरे करो। एक परसर्ग व
दो बार भी प्रयोग किया जा सकता है :

से, के लिए, की, के, में, का

कुतुबुद्दीन सुलतान .... सेना .... सिपाही था। व
सुलतान .... बहुत निकट था। उसे शिकार खेलने ....
बेहद शौक था। एक दिन अवसर पाकर वह शिकार ....
निकला। शाम होते-होते उसे घाटी .... एक झरना नज़र आया
वह घोड़े .... उतरा।

V. पढ़ो और लिखो

चौकन्ना	अकस्मात्	मृगशावक
व्यग्रता	करिश्मा	वफ़ादार
धनुष-बाण	कुलाँचें	व्यर्थ

VI. योग्यता-विस्तार

इस कहानी को अपने शब्दों में कक्षा में सुनाओ।

पाठ 12

परीक्षा

संरचना-संकेत

ते हुए न तो कोई ...... न न, मत, नहीं जहाँ-तहाँ, जैसे-तैसे

भोला घबराहट और परेशानी के साथ प्रधानाचार्य (प्रिंसिपल) के कमरे की ओर बढ़ा। उस समय प्रधानाचार्य राउंड पर थे। भोला को अपनी ओर आते देखकर उन्होंने पूछा– "कहो, तुम यहाँ कैसे घूम रहे हो? जानते नहीं, परीक्षा चल रही है?"

"सर, मैं परीक्षा देने ही आया हूँ, पर देर हो गई। मुझे आप परीक्षा में बैठने की इजाज़त दे दीजिए।"

"अब? इस समय !"

प्रधानाचार्य ने कलाई में बँधी घड़ी की ओर देखा और नाराज़ होकर कहा– "अब तो साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। परीक्षा शुरू होने का समय तुम्हें मालूम है?"

"जानता हूँ सर, परीक्षा तो दस बजे शुरू हो चुकी होगी, लेकिन आप मेरे देर से आने का कारण तो सुन लीजिए।"

"देखो, तुम जो चाहो किस्सा गढ़ो, मैं तुम्हारे लिए परीक्षा का नियम नहीं तोड़ सकता। तुम फौरन विद्यालय से बाहर चले जाओ"– प्रधानाचार्य ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"लेकिन सर, आप मेरी बात तो सुन लें। फिर आप कहेंगे तो मैं बाहर चला जाऊँगा।" इस बार भोला के स्वर में विनम्रता के साथ-साथ दृढ़ता भी थी।
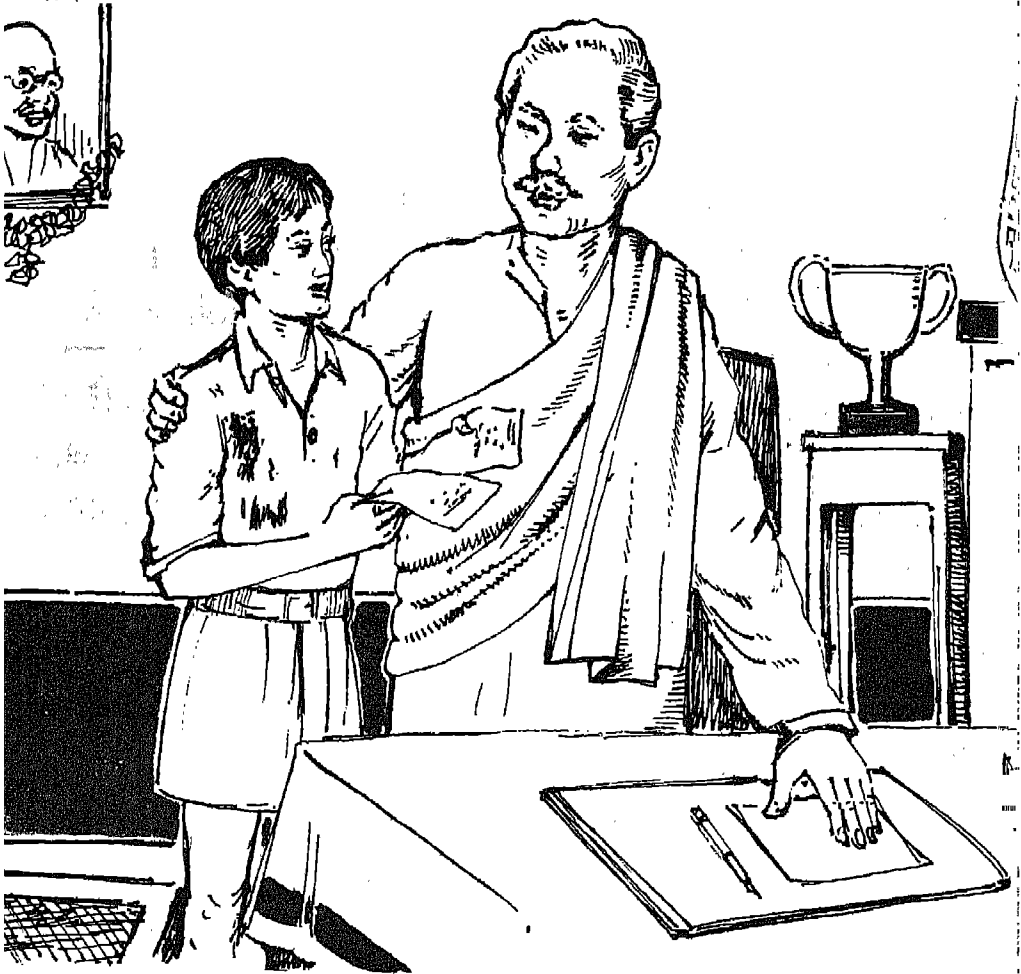
प्रधानाचार्य ने एक क्षण उसे देखा, फिर कहा– "अच्छा, मेरे कमरे में आओ।" भोला उनके पीछे-पीछे चल दिया।

कार्यालय में अपनी कुर्सी पर बैठते हुए प्रधानाचार्य ने कहा– "कहो, क्या कहना चाहते हो? अरे ! तुम्हारे कपड़ों पर खून के धब्बे?"

"सर, यही तो मैं आपको बताना चाहता हूँ।"

"अच्छा, बताओ।"

"सर, जब मैं आज बस से विद्यालय आ रहा था तो हमारी बस सामने से आ रहे एक ट्रक से टकरा गई। चोटें तो बहुत लोगों को आईं किंतु एक युवक अगली सीट और ड्राइवर की सीट के बीच बुरी तरह फँस गया था। कंडक्टर और ड्राइवर भी घायल हो गए थे। सवारियों में से किसी के दाँतों से खून बह रहा था तो किसी की नाक से। किसी के सिर से खून बह रहा था तो किसी के घुटने से। कोई पेट सहला रहा था तो कोई पैर। इस हादसे से सबके-सब सन्नाटे में आ गए।"

"आगे क्या हुआ?" प्रधानाचार्य ने उत्सुकता दिखाई।

"संयोग से मुझे और मेरे पड़ोसी यात्री को कुछ खरोंचें ही आई थीं। हमें ज़्यादा चोट नहीं लगी थी। मेरी निगाह अचानक उस युवक पर पड़ी जो दो सीटों के बीच फँसा था और दर्द से चिल्ला रहा था। मुझे लगा कि यदि इसकी तुरंत सहायता नहीं की गई तो यह नहीं बचेगा"

"फिर क्या हुआ?" प्रधानाचार्य ने पूछा।

"सर, मैं एक क्षण के लिए तो सोच में डूब गया। मन में बार-बार परीक्षा का ध्यान आ रहा था। परीक्षा शुरू होने में केवल आधा घंटा बाकी था। सोच रहा था– यदि इस युवक को बचाने के चक्कर में परीक्षा छूट गई तो मेरा एक वर्ष बेकार हो जाएगा। यदि इसे तुरंत डाक्टरी सहायता न पहुँचाई गई तो इसके प्राण खतरे में हैं। इसका जीवन मेरी परीक्षा से अधिक महत्त्वपूर्ण है–"

भोला ने बताया।

"तब तुमने क्या किया?" प्रधानाचार्य ने पूछा।

"मैंने अपने पड़ोसी यात्री को बुलाया। उधर से गुजरते हुए अन्य लोगों को भी पुकारा। देखते-ही-देखते वहाँ काफ़ी लोग इकट्ठे हो गए, लेकिन किसी के भी हाथ उस युवक को निकालने के लिए आगे नहीं बढ़े।

"अरे, पुलिस के झंझट में पड़ना पड़ेगा"– एक आवाज़ आई।

"अदालत के चक्कर लगाने पड़ेंगे"– दूसरा बोला।

"मैंने देखा कि लोग धीरे-धीरे वहाँ से खिसकने लगे। अकेला खड़ा यात्री भी किसी झमेले में न पड़कर मुझे परीक्षा देने की सलाह दे चुका था। किंतु मेरा मन न माना और मैंने उस युवक की सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ा दिए। अब वह यात्री भी मेरे साथ जुट गया। जैसे-तैसे उस युवक को सीट के बीच में से निकाला। उसके शरीर में जहाँ-तहाँ काँच के टुकड़े धँस गए थे। खून तेज़ी से बह रहा था। तब तक वह बेहोश हो चुका था। सड़क पर हमने देखा तो वहाँ सवारी का कोई साधन नहीं था। इंतजार करने का भी समय नहीं था। मैंने झट से युवक को अपनी पीठ पर लादा और शहर की ओर चल पड़ा। वह साथी-यात्री भी मेरे साथ चल दिया। जब मैं हाँफने लगता तब वह उस युवक को अपनी पीठ पर लाद लेता। किसी प्रकार हम उसे डेढ़ किलोमीटर दूर स्थित एक अस्पताल तक ले आए"—भोला ने कहा।

"डेढ़ किलोमीटर दूर! शाबाश बेटे!" प्रधानाचार्य बोले।

"हमने युवक को अस्पताल में भर्ती कराया। खून बहुत बह जाने के कारण सबसे पहले डाक्टर ने उसको खून चढ़ाने की व्यवस्था की। फिर वे मुझे एक पर्ची थमाते हुए बोले— "तुम जल्दी से ये दवाइयाँ लेकर आओ"— भोला ने बताया।

भोला ने डाक्टर द्वारा दी गई दवाइयों की पर्ची प्रधानाचार्य की ओर बढ़ा दी। वह बोला— "सर, मेरे पास न तो इतने पैसे थे कि दवाइयाँ खरीद सकूँ और न उस युवक के घर का पता। मुझे परीक्षा छूटने का भय भी सता रहा था। इस कारण मैं दौड़ता हुआ विद्यालय चला आया। सर, आप उस युवक के लिए इन दवाइयों का प्रबंध कर दें तो उसके प्राण बच सकते हैं।"

प्रधानाचार्य ने भोला के हाथ से पर्ची ले ली और उसे अपने सीने से लगा लिया। वे उसकी पीठ थपथपाते हुए बोले— "शाबाश बेटे, मुझे तुम जैसे विद्यार्थी पर गर्व है। तुम दवाइयों की चिंता मत करो और परीक्षा दो। मैं अभी सब प्रबंध करवा देता हूँ।"

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

प्रधानाचार्य	इजाज़त	विद्यालय
विनम्रता	दृढ़ता	धब्बा
परीक्षा	कंडक्टर	सन्नाटा
खरोंच	व्यर्थ	झमेला
दुर्घटनाग्रस्त	प्रबंध	व्यवस्था

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. अब इस समय !
2. परीक्षा शुरू होने का समय तुम्हें मालूम है?
3. आप मेरी बात तो सुन लें।
4. कहो, क्या कहना चाहते हो?
5. अरे! पुलिस के झंझट में पड़ना पड़ेगा।
6. शाबाश बेटे ! मुझे तुम पर गर्व है।

II. पढ़ो और समझो

क.

इजाज़त = आज्ञा
किस्सा गढ़ना = बातें बनाना, झूठी बातें करना
विनम्रता = नम्रतापूर्वक
दृढ़ता = मज़बूती
फौरन = उसी समय, तत्काल
धब्बे = निशान
हादसा = दुर्घटना

इंतज़ार	=	प्रतीक्षा
झंझट	=	मुसीबत
उत्तीर्ण होना	=	पास होना, सफल होना
आत्मकेंद्रित होना	=	केवल अपने बारे में सोचना
सर्वोत्तम	=	सबसे अच्छा
विवरण	=	वर्णन, लेखा-जोखा
व्यर्थ	=	बेकार

ख. आशा × निराशा
देर × जल्दी
विनम्रता × कठोरता

ग. जैसे-तैसे पीछे-पीछे
जहाँ-तहाँ साथ-साथ
सब-के-सब बार-बार
देखते-ही-देखते धीरे-धीरे

घ. 1. प्रधानाचार्य भोला की पीठ थपथपाते हुए बोले।
प्रधानाचार्य ने भोला को शाबाशी देते हुए कहा।
2. उस युवक के प्राण खतरे में थे।
उस युवक का जीवन संकट में था।
3. आप युवक के लिए इन दवाइयों का प्रबंध करें।
आप युवक के लिए इन दवाओं की व्यवस्था कर दें।
4. आप मेरे देर से आने का कारण तो सुन लीजिए।
आप सुन तो लीजिए कि मैं देर से क्यों आया।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :

कोई आ रहा है तो **कोई** जा रहा है।

→ **न** तो कोई आ रहा है, **न** कोई जा रहा है।

1. कोई सो रहा है तो कोई पढ़ रहा है।

   ....

2. कोई फुटबाल खेल रहा है तो कोई क्रिकेट खेल रहा है।

   ....

3. कोई दौड़ रहा है तो कोई खेल रहा है।

   ....

4. कोई बूढ़ा है तो कोई बच्चा है।

   ....

ख. नीचे लिखे वाक्यों के खाली-स्थानों में 'न', 'नहीं' और 'मत' का सही प्रयोग करो :

1. शायद वह अभी .... आया हो।
2. आप अभी बाहर .... जाएँ।
3. तुम्हें जुकाम है, आइसक्रीम .... खाओ।
4. आप उन्हें अभी पत्र .... लिखें।
5. झूठ .... बोलो।
6. मोहन आजकल कोई काम .... करता।

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्यों को जोड़ो :

उदाहरण :

घोड़ा हिनहिनाया था। घोड़ा रुक गया।

→ घोड़ा हिनहिनाते हुए रुक गया।

1. राघवन बड़बड़ाया था। राघवन चला गया।

....

2. मैं गुनगुनाया। मैं चुप हो गया।

....

3. वृद्ध लड़खड़ाया था। वृद्ध घर पहुँच गया।

....

4. पक्षी फड़फड़ाया था। पक्षी गिर गया।

....

'जहाँ-तहाँ, 'जैसे-तैसे' का उचित प्रयोग करते हुए वाक्य पूरे करो :

1. हमारा सामान .... बिखरा पड़ा था।
2. यह काम .... पूरा हुआ।
3. मोहन ने .... परीक्षा पास की।
4. कबूतरों का दाना .... बिखरा हुआ था।
5. कागज़ .... फैले हुए थे।

निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो :

उदाहरण : दृढ़ → दृढ़ता

वाक्य : हमें **दृढ़ता** से सत्य का पालन करना चाहिए।

उत्सुक ....

शीतल ....

विशेष ....

मानव ....

कटु ....

IV. पढ़ो और बताओ

1. भोला को अपनी ओर आते देखकर प्रधानाचार्य ने क्या पूछा?
2. भोला ने प्रधानाचार्य से किस बात की इजाज़त माँगी?
3. प्रधानाचार्य ने नाराज़ होकर भोला से क्या कहा?
4. प्रधानाचार्य भोला की बात सुनने को कैसे तैयार हो गए?
5. भोला ने प्रधानाचार्य को कौन-सी घटना सुनाई?
6. प्रधानाचार्य ने भोला को अपने सीने से क्यों लगा लिया?
7. भोला परीक्षा देने के लिए देर से क्यों पहुँचा? सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाओ–
   - क. वह परीक्षा नहीं देना चाहता था।
   - ख. वह बीमार हो गया था।
   - ग. वह घायल युवक की सहायता करने लगा था।
   - घ. वह रास्ते में ट्रक से टकरा गया था।

V. पढ़ो और लिखो

जैसे-तैसे उस युवक को सीट के बीच में से निकाला। उसके शरीर में जहाँ-तहाँ काँच के टुकड़े धँस गए थे। खून तेज़ी से बह रहा था। सड़क पर हमने देखा कि वहाँ सवारी का कोई साधन नहीं था।

VI. योग्यता-विस्तार

- क. कक्षा में कोई ऐसी घटना सुनाओ, जब तुमने किसी की सहायता की हो।
- ख. यदि तुम भोला की जगह होते तो क्या करते? कल्पना के आधार पर एक अनुच्छेद लिखो।

पाठ 13

चेतक की वीरता

रणबीच चौकड़ी भर-भर कर,
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।

गिरता न कभी चेतक-तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
यह आसमान पर घोड़ा था।
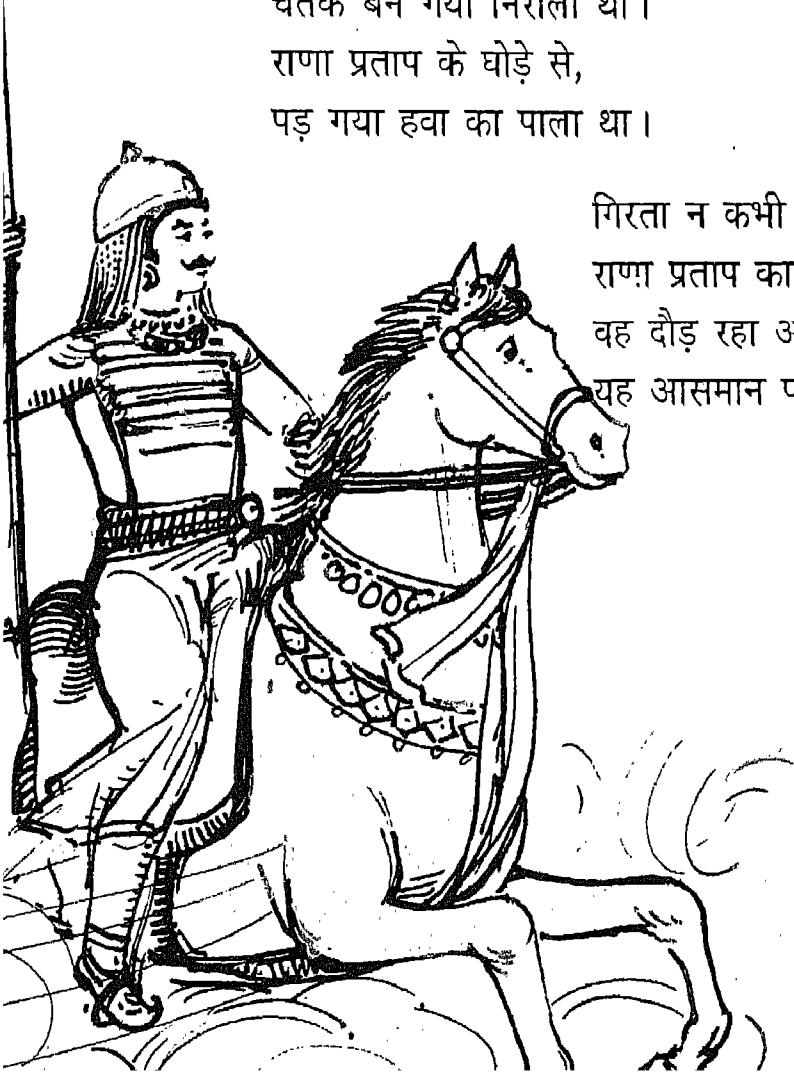
जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में।

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं।

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया, गया फिर ठहर गया।
विकराल वज्रमय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।

भाला गिर गया गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग।
बैरी समाज रह गया दंग,
घोड़े का ऐसा देख रंग।

– श्यामनारायण पांडेय

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

चौकड़ी	चेतक	अरि-मस्तक
कौशल	निर्भीक	भयानक
करवालों	विकराल	वज्रमय
निषंग	हय	घहर

ख. 1. राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था।

2. राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था।

3. है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा है वहाँ नहीं।

4. विकराल वज्रमय बादल-सा,
अरि की सेना पर घहर गया।

II. पढ़ो और समझो

क.
तन = शरीर
अरि = दुश्मन, शत्रु
बाग = घोड़े की लगाम
कौशल = चतुराई, कुशलता
भाला = बरछा, तीखी नोक वाला एक हथियार
निर्भीक = निडर
ढाल = तलवार, भाले आदि शस्त्रों का वार बचाने का एक साधन

घहर = गर्जना, छा जाना
करवाल = तलवार
नद = नदी
विकराल = भयानक, डरावना
निषंग = तरकश
हय = घोड़ा
वज्रमय = बिजली की आवाज़ से भरे भयानक
बादल-सा = बादल-जैसा
खन = घायल

ख. चौकड़ी भरना = घोड़े की तेज़ चाल
पाला पड़ना = मुकाबला होना
पुतली फिरना = दृष्टि मुड़ना
सरपट दौड़ना = तेज़ भागना
दंग रह जाना = चकित रह जाना

ग. राणा प्रताप = मेवाड़ का महाराजा
चेतक = राणा प्रताप का प्रिय और बहादुर घोड़ा

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. 1. गिरता न कभी चेतक तन पर
....

2. राणा की पुतली फिरी नहीं
....

3. ....
वह वहीं रहा, है वहाँ नहीं

4. विकराल वज्रमय बादल-सा
....

ख. सही अंश चुनकर पंक्तियाँ पूरी करो :

1. ताँगे वाले की चाबुक से
   डर कर घोड़ा भाग जाता था
   ताँगे की ऐसी चाल देख
   ....

   क. घोड़ा नाच दिखाता था।
   ख. ताँगा डगमग हो जाता था।
   ग. ताँगे वाला डर जाता था।
   घ. घोड़ा भी मौज मनाता था।

2. वार किया जब भालों से
   बचा लिया तब ....

   क. भालों से
   ख. थालों से
   ग. तालों से
   घ. ढालों से

3. जब लपक-लपक ....
   तब टपक खून की धार चली

   क. कर मार चली
   ख. तलवार चली
   ग. फुहार चली
   घ. सब हार चली

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. चेतक के शरीर पर चाबुक क्यों नहीं पड़ता था?
   2. राणा की पुतली के संकेत पर चेतक क्या करता था?

3. चेतक युद्ध के मैदान में क्या-क्या कौशल दिखाता था?
4. चेतक को "वज्रमय बादल" क्यों कहा गया है?
5. चेतक को देखकर दुश्मन दंग क्यों रह जाता था?

ख. 1. "चेतक से हवा का पाला पड़ा, ऐसा क्यों कहा गया है?
उत्तर चुनो :
क. सुंदरता के कारण
ख. वीरता के कारण
ग. तेज़ चाल के कारण
घ. निडरता के कारण

V. योग्यता-विस्तार

1. राणा प्रताप और चेतक की कहानी ढूँढ़ो और पढ़ो।
2. इस कविता को याद करके ओजपूर्ण स्वर में सुनाओ।

पाठ 14

अस्पताल में

संरचना-संकेत

कर्ता + ने
जो – वह
होना–करना

मैं दफ़्तर जाने की तैयारी कर रहा था, तभी पत्नी दौड़ी-दौड़ी आई। उसके चेहरे पर घबराहट थी। मैं समझ गया कि वह श्वेता के बारे में चिंतित है।

"चिंता मत करो। श्वेता को मामूली बुखार है। अपने-आप ठीक हो जाएगा, घबराओ मत" मैंने समझाया।

"अभी-अभी उसे उलटी हुई है। बदन तप रहा है, नींद में बड़बड़ा रही है। मैं कहती हूँ, आप दफ्तर न जाएँ। उसे अभी अस्पताल ले जाइए"—पत्नी ने आग्रह किया।

मैं श्वेता के पास गया। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं। माथा बहुत गर्म था। चंचल लड़की निढाल पड़ी थी। इसे तो अस्पताल ले जाना ही पड़ेगा—मैंने सोचा।

बस की भीड़-भाड़ का तो मैं आदी हो गया हूँ। अस्पताल की भीड़ देखने का मौका आज ही मिला। कई कतारें लगी थीं। बेंच पर, पेड़ के नीचे, फर्श

पर, सीढ़ियों पर मरीज़ और उनके घर वाले बैठे थे। मैं पहले 'पूछताछ' वाली खिड़की पर गया। वहाँ बैठे कर्मचारी ने बताया– "बहिरंग रोगी विभाग" में जाइए। वहाँ पंजीकरण करवाइए। वहीं बताया जाएगा, कि रोगी को कहाँ दिखाना है।"

थोड़ी ही देर में मैं "बहिरंग रोगी विभाग" में पंजीकरण-खिड़की के पास पहुँचा। वहाँ रोगियों की कतार बड़ी लंबी थी। श्वेता को गोद में लेकर मैं भी

खड़ा हो गया। करीब आधे घंटे बाद मेरी बारी आई। रोगी का नाम और उम्र लिखने के बाद क्लर्क ने पूछा—क्या बात है?

"किसे दिखाना है"?

"डॉक्टर को" मैंने कहा।

"यहाँ सभी डॉक्टर को दिखाने ही आते हैं। रोग क्या है?" उसने झुँझलाहट से ऐसे रूखे स्वर में कहा कि मैं हड़बड़ा गया।

"रोग .... हाँ, इसे उलूटियाँ हुई थीं। बुखार है, सिरदर्द भी ...."

"इसे पाँच नंबर में ले जाओ" उसने कहा और पर्ची मेरी ओर फेंक दी।

मैंने सोचा— इस आदमी से पूछूँ कि इतना रूखा व्यवहार क्यों कर रहा है, पर चुप ही रहा। सोचा— इतनी भीड़ है, शायद इसीलिए चिड़चिड़ा हो गया है।

मुझे पाँच नंबर कमरे में जाना था। पूछता-पूछता चला। नंबर एक में "नाक-कान-गला विभाग" था। दूसरा "दाँत-विभाग" था। तीसरे कमरे में तख़्ती लटकी थी— "चिकित्सा-विभाग"। मैं ठिठक गया। मुझे भी तो श्वेता की चिकित्सा ही करानी थी। फिर पाँच नंबर क्यों?

मैने एक मरीज़ से पूछा, "आपको क्या हुआ है"?

"जी, बुखार है, सिरदर्द है। उल्टियाँ भी हुई थीं"—उसने कहा।

श्वेता को भी यही सब था। मैं समझ गया— ज़रूर पंजीकरण वाले क्लर्क ने मुझे ग़लत बता दिया। श्वेता को यहीं दिखाना होगा। मैं एक बैंच पर बैठ गया। तभी एक चपरासी आया। लोग उसे अपनी-अपनी पर्चियाँ बारी-बारी से थमाने लगे। मेरी पर्ची देखकर उसने कहा— "आप यहाँ मत बैठें। पाँच नंबर में चले जाएं।"

"पर इसे भी सिरदर्द है, बुखार है और...."

मेरी बात बीच में ही काट कर उसने समझाया "बच्चों के रोगों के लिए अलग विभाग है। उन्हें जो भी रोग हो, वहीं देखे जाते हैं।

"तो यह बात है" मैंने कहा, और नंबर पाँच की ओर बढ़ चला।

नंबर पाँच .... 'बाल-रोग विभाग' था। यहाँ सभी लोग पंक्ति में बैठे थे। बच्चे बारी-बारी से डॉक्टर के कमरे में जा रहे थे। अपना नंबर निकट आने पर मैं भी श्वेता को लेकर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया।

डॉक्टर के सामने एक महिला बैठी थी। डॉक्टर उसे समझा रहा था- "अब तुम्हारा बच्चा ठीक है, पर अभी भी परहेज रखना। तीन दिन तक सुबह-शाम दवाई देना।"

"इसे खाने को क्या दूँ, डॉक्टर साहब?" उसने पूछा

"यह जो भी खाना चाहे दे सकती हो। पर जो कुछ दो वह साफ और ताज़ा हो। दूध-दही, दाल-रोटी दे सकती हो। पर अभी तली चीजें मत देना" डॉक्टर ने कहा।

वह महिला चली गई तो एक सज्जन अपने बेटे को दिखाने गए। लगभग दस-बारह साल का प्यारा-सा बच्चा था, पर पाँव लचका कर चल रहा था बच्चे से डॉक्टर ने पूछा, "अब कैसे हो?" उत्तर में बच्चा मुस्करा दिया डॉक्टर ने मरीज़ की जाँच की और उसके पिता को समझाने लगा—"देखिए दवा से इस लड़के का बुखार बिल्कुल ठीक हो गया है, पर इसके पाँव में लकवे के लक्षण हैं। बचपन में इसे पोलियो की दवा नहीं दी गई होगी।"

"हमें इसकी जानकारी नहीं थी, डॉक्टर साहब। क्या यह ठीक हो जाएगा" पिता ने पूछा।

"आप इसे 'हड्डी-विभाग' में दिखाइए। वे इसकी टाँग का एक्स-रे लेंगे

तभी इलाज शुरू होगा। हो सकता है, छोटा-मोटा ऑपरेशन भी करना पड़े। मैं लिखे देता हूँ।'' डाक्टर ने सुझाव दिया।

अगला मरीज़ बहुत कमज़ोर था। पुराना रोगी लग रहा था। डॉक्टर ने उसे ध्यान से देखा। फिर तीन-चार पर्चियाँ उसके पिता के हाथ में दे दीं। बोला—
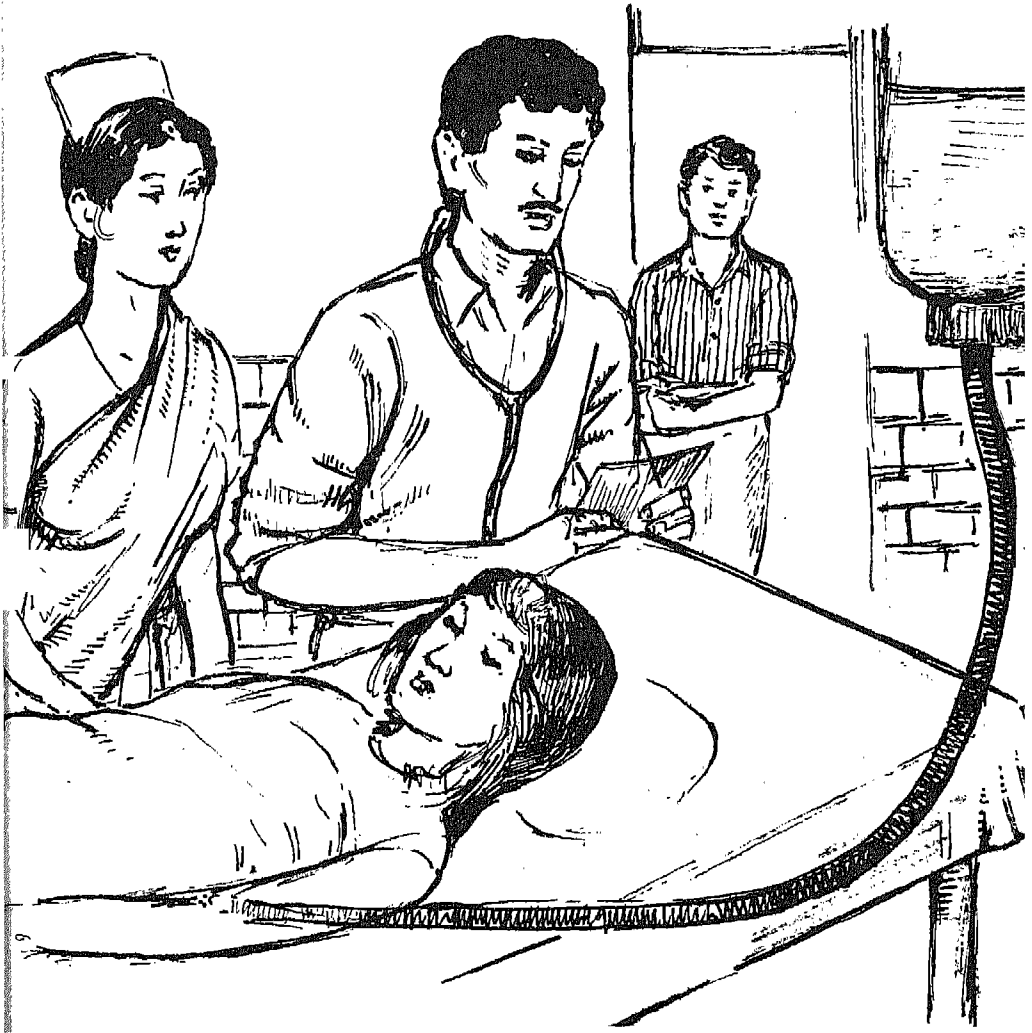
"इसके मल-मूत्र और रक्त की जाँच करवानी पड़ेगी। रक्त का नमूना आज ही दे दो। कल मल-मूत्र के नमूने लाकर प्रयोगशाला (लैब) में दे देना। उनकी रिपोर्ट आने पर ही इलाज शुरू करेंगे। जो परीक्षण लिखे हैं, उन्हें अवश्य करवाना।"

अब श्वेता की बारी थी। मैं श्वेता को लेकर डॉक्टर के सामने बैठा। डॉक्टर ने संकेत किया कि मरीज को पास के बिस्तर पर लिटा दूँ। मैंने वैसा ही किया। डॉक्टर ने पहले श्वेता की नाड़ी देखी, आँख की पुतलियाँ देखीं। थर्मामीटर से ताप मापा और उसके फेफड़ों की जाँच की। फिर मेरी ओर देखकर बोले– "इसे तुरंत 'आपात-विभाग' में ले जाइए। ग्लूकोज़ चढ़ाना पड़ेगा। मैंने पर्ची पर लिख दिया है।"

"पर इसे हुआ क्या है", डॉक्टर साहब? इसे अच्छा कर दीजिए–"मैंने कहा। डॉक्टर ने समझाया- घबराइए मत, उल्टियाँ होने से इसके शरीर में पानी की कमी हो गई है। उसी से बुखार बढ़ गया है। आपकी बेटी जल्दी अच्छी हो जाएगी। अगर आपने घर पर ही जीवन-रक्षक-घोल दे दिया होता तो इतनी हालत नहीं बिगड़ती।"

मैं जल्दी-जल्दी 'आपात-विभाग' की ओर चला। वहाँ तो बड़ी बेचैनी का वातावरण था। डॉक्टर और नर्सें मरीज़ों को देखने के लिए भाग-दौड़ कर रहे थे। अधिकतर गंभीर दुर्घटनाओं के मामले थे। बाहर एम्बुलेंस खड़ी थी। मरीज़ों की चीख-पुकार सुनकर अजीब-सा लग रहा था। मैंने 'बालरोग विशेषज्ञ' की दी हुई पर्ची **"आपात-विभाग"** के डॉक्टर को दिखाई और श्वेता को लेकर बैठ गया।

डॉक्टर तुरंत उठा, श्वेता को बिस्तर पर लिटाया। नर्स से ग्लूकोज की

बोतल मँगवाई। श्वेता की बाँह में सुई लगाकर उससे जुड़ी बोतल को उल्टा टाँग दिया। बोतल से बूँद-बूँद करके ग्लूकोज़ श्वेता के शरीर में जाने लगा।

डॉक्टर अब दूसरे मरीज़ों को देखने लगा था। मैं नर्स से कुछ पूछना चाहता था, पर वह तीमारदारी में व्यस्त थी। मैं चुपचाप बैठकर आते-जाते मरीज़ों को देखता रहा।

तभी नर्स आ गई और बोली, "आप बाहर बैठिए"।

"पर मेरी बेटी की तबीयत बहुत खराब है।"

"आप चिंता न करें। यहाँ हम लोग इसी काम के लिए हैं। मरीज़ों के रिश्तेदारों की भीड़-भाड़ से रोगी आराम नहीं कर पाता। आप बाहर चलिए। ज़रूरी हुआ तो हम बुला लेंगे।" मैं बाहर आकर बैंच पर बैठ गया।

सामने वाले कमरे के बाहर लिखा था– "गहन-चिकित्सा।" मैं समझ नहीं पाया कि गहन-चिकित्सा क्या होती है। पूछने पर पता चला कि अत्यधिक गंभीर रोगी यहाँ रखे जाते हैं। उन्हें हर समय देखभाल की आवश्यकता होती है। हालत में थोड़ा सुधार होने पर उन्हें 'अंतरंग रोगी विभाग' में भेज दिया जाता है।

मैं बैठा-बैठा सोच रहा था– डॉक्टर और नर्स कितनी सेवा करते हैं, रात-दिन सैकड़ों मरीज़ देखते हैं, पर चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं। जो कोई आता है, उसे प्यार से समझाते हैं। वह जो-जो पूछता है, उसका उत्तर देते हैं। उन्हें अपने सुख-दुख की भी चिंता नहीं। दिन-रात मरीज़ों के सुख-दुख की चिंता रहती है।

करीब तीन घंटे प्रतीक्षा की। तब देखा, डॉक्टर और नर्स श्वेता के पास खड़े हैं। ग्लूकोज़ की पूरी बोतल चढ़ा दी गई थी। सुई निकाल कर नर्स ने

बोतल उतार दी। श्वेता ने आँखे खोलीं और मुस्कराने लगी। उसे देखकर मुझे भी तसल्ली हो गई।

डॉक्टर मेरी ओर मुड़ा। उसने कहा, "अब आप इसे घर ले जा सकते हैं। मैंने दवाइयाँ लिख दी हैं। सुबह-शाम दवा दीजिए। दिन-रात के बुखार को नोट कीजिए और दो दिन के बाद फिर दिखाइए।"

"तब तक इसे पथ्य क्या दें?"—मैंने पूछा।

"आज तो साग-भाजी, दूध-दही और फल ही दीजिए। कल से दाल-रोटी या दाल-भात दे सकते हैं।"

मैंने श्वेता को गोद में उठाया। डॉक्टर और नर्स को धन्यवाद दिया और घर की ओर चल पड़ा।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.	दफ़्तर	तैयारी	घबराहट
	चिंतित	बुखार	अस्पताल
	निढाल	परहेज	कर्मचारी
	खिड़की	पंजीकरण	लक्षण
	बहिरंग	सज्जन	चिकित्सा
	प्रयोगशाला	झुँझलाहट	चिड़चिड़ा
	मरीज़	जीवन-रक्षक-घोल	परीक्षण
	दुर्घटना	विशेषज्ञ	पथ्य

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. चिंता मत करो। श्वेता को मामूली बुखार है।
2. इसे तो अस्पताल ले जाना ही पड़ेगा।
3. पर इसे हुआ क्या है डॉक्टर साहब? यह ठीक तो हो जाएगी?
4. जी, बुखार है, सिरदर्द है, उल्टियाँ भी हुई थीं।
5. उसे खाने को क्या दूँ, डाक्टर साहब?

II. पढ़ो और समझो

बदन = शरीर
आग्रह = अनुरोध, निवेदन
निढाल = शिथिल, निर्जीव-सा
पंजीकरण = नाम दर्ज़ कराना
झुँझलाहट = दुखी और क्रोधित होकर बात करना
लचक कर चलना = लँगड़ा कर चलना
तबीयत = स्वास्थ्य
शिकन = सिलवट, चेहरे पर चिंता का भाव
तीमारदारी = रोगियों की सेवा
मरीज़ = रोगी
चिकित्सा = इलाज
थमाना = हाथ में देना
परहेज = हानिकारक वस्तुओं से बचाव
लक्षण = रोगसूचक-चिह्न
ताप = शरीर की गर्मी
पथ्य = हल्का भोजन, जैसे—दलिया, खिचड़ी, दूध, फल आदि।

ख. बहिरंग-रोगी-विभाग — नाक-कान-गला-विभाग
दाँत-विभाग — चिकित्सा-विभाग
बाल-रोग-विभाग — हड्डी-विभाग
आपात-विभाग — अंतरंग-रोगी-विभाग

ग. दौड़ी-दौड़ी — सुबह-शाम
भीड़-भाड़ — दाल-रोटी
अपनी-अपनी — छोटा-मोटा
अभी-अभी — दूध-दही
पूछता-पूछता — दस-बारह
बारी-बारी — तीन-चार
जल्दी-जल्दी — दिन-रात
बैठा-बैठा — रात-दिन

घ. घबराना → घबराहट
झुँझलाना → झुँझलाहट
चिड़चिड़ाना → चिड़चिड़ाहट
लड़खड़ाना → लड़खड़ाहट
मुस्कराना → मुस्कराहट

ङ. 1. **जो कुछ** भी यहाँ पड़ा है, उसे ले जाओ।
2. **जो कोई** यहाँ आता है, उसका स्वागत करो।
3. **जो भी** काम होगा, मैं ज़रूर करूँगा।
4. **जो-जो** लड़के सर्कस देखना चाहें, वे अपना नाम दे दें।

च. जाँच होना — जाँच करना
अच्छा होना — अच्छा करना
तेज़ होना — तेज़ करना

छ. 1. इस विभाग में बच्चों को देखा जाता है →
इस विभाग में बच्चों को नहीं देखा जाता।
2. गाँवों में लोग अंग्रेज़ी बोलते हैं →
गाँवों में लोग अंग्रेज़ी नहीं बोलते।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> मणि मिठाई खा रही है।
> → मणि ने मिठाई खाई।

1. रमा आम खा रही है।
....
2. मोहन रोटियाँ खा रहा है।
....
3. सरला और विमला संतरे खा रही हैं।
....
4. मोहन और सोहन मिठाइयाँ खा रहे हैं।
....

ख.
> **उदाहरण :**
> यहाँ पड़े सामान को वहाँ ले जाओ →
> यहाँ जो सामान पड़ा है, उसे वहाँ ले जाओ।

1. यहाँ रखी कमीज़ को वहाँ रख दो।
....

2. यहाँ बैठे लड़के को वहाँ भेज दो।

....

3. यहाँ रखी पुस्तक को वहाँ ले जाओ।

....

4. यहाँ पड़े कूड़े को वहाँ फेंक आओ।

....

ग.

उदाहरण :
यहाँ खून की जाँच **होती** है।
→ यहाँ खून की जाँच **करते** हैं।

1. यहाँ ऑपरेशन होता है।

....

2. यहाँ कारों की मरम्मत होती है।

....

3. यहाँ मरीज़ों की देखभाल होती है।

....

4. इस खिड़की पर पंजीकरण होता है।

....

V. पढ़ो और लिखो

मैं बैठा-बैठा सोच रहा था– डॉक्टर और नर्स कितनी सेवा करते हैं, रात-दिन सैकड़ों मरीज़ देखते हैं, पर चेहरे पर कोई शिकन तक नहीं। जो कोई आता है, उसे प्यार से समझाते हैं। वह जो-जो पूछता है, उसका उत्तर देते हैं। उन्हें अपने सुख-दुख की भी चिंता नहीं, दिन-रात मरीज़ों के सुख-दुख की ही चिंता रहती है।

VI. योग्यता-विस्तार

क. तुमने अपने गाँव या शहर के अस्पताल में जो-जो देखा हो, उसे अपने शब्दों में लिखो।

ख. कक्षा में डॉक्टर और मरीज़ के बीच हुई बातचीत का अभिनय करो।

पाठ 15

मखमल की जूती

संरचना-संकेत

धातु + कट कृदंत (कटी हुई) – ते – ही (सुनते ही) – ना + चाहिए

विजयनगर के राजा कृष्णदेव राय कुशल प्रशासक और कवि थे। उनके कई ग्रंथ हैं। उन्होंने जो ग्रंथ लिखे, उनको तेलुगु साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त है। उनके दरबार में आठ प्रसिद्ध कवि थे। राजा कृष्णदेव राय इन कवियों के साथ अक्सर साहित्यिक चर्चा किया करते थे। उन कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि थे– तेनाली रामकृष्ण। तेनालीराम हास्य और व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि थे। उनके व्यंग्य से लोग डरते थे, क्योंकि न जाने कब वे हँसी-हँसी में वार कर बैठें। दरबार में उनके खड़े होते ही सब लोग सतर्क हो जाते थे। जिन मुश्किल गुत्थियों को राजा स्वयं भी नहीं सुलझा पाते थे, उन्हें तेनालीराम हँसी-हँसी में सुलझा देते थे।

तेनालीराम का राजा पर बहुत प्रभाव था। तेनालीराम भी राजा की हर आज्ञा को प्रसन्न होकर स्वीकार करते थे। राजा की ग़लती बताने का साहस भी उन्हीं में था। वे अपनी बात को प्रमाण देकर सिद्ध करते थे, इससे राजा को भी उसे मानना ही पड़ता था।

एक दिन राजा कृष्णदेव राय और तेनाली राम में बहस छिड़ गई। तेनालीराम का कहना था कि अधिकतर लोग किसी भी बात पर विश्वास कर लेते हैं। उन्हें आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है। राजा का कहना था कि लोगों को आसानी से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। इस पर तेनालीराम ने कहा– "लोगों को विश्वास दिलाने वाला व्यक्ति यदि समझदार और चतुर हो तो वह उन्हें किसी भी बात का विश्वास दिला सकता है।" राजा ने कहा– "नहीं, इतनी आसानी से लोग किसी का कहना नहीं मान सकते। तुम किसी से भी जो चाहो वह नहीं करवा सकते।"

"क्षमा करें महाराज! मैं हर काम करवा सकता हूँ"– तेनालीराम ने कहा। राजा ने पूछा– "तो क्या तुम मेरे ऊपर जूते फिंकवा सकते हो?" "हाँ महाराज ! यदि आज्ञा हो, तो मैं आप पर जूते भी फिंकवा सकता हूँ।"

यह बात सुनते ही राजा का चेहरा क्रोध के मारे एकदम लाल हो गया। वे बोले–क्या ऐसा कर पाना तुम्हारे लिए संभव है? तुम्हें चुनौती है, ऐसा करके दिखाओ।" तेनालीराम ने कहा– "महाराज, मुझे स्वीकार है। मैं यह काम अवश्य कर दिखाऊँगा। हाँ, इसके लिए आप मुझे कुछ समय दीजिए।"

"तुम जितना समय चाहो, उतना ले सकते हो" –राजा ने कहा। दिन बीतते गए। राजा इस घटना को भूल गए। कुछ समय पश्चात राजा का विवाह निश्चित हुआ। राजा ने कुर्ग प्रदेश की एक पहाड़ी सरदार की सुंदर बेटी पसंद की थी। सरदार बहुत प्रसन्न था कि उसकी बेटी का विवाह राजा से हो रहा है। लेकिन सरदार को विजयनगर के राजाओं के विवाह के रीति-रिवाज़ का कोई ज्ञान नहीं था। वह इस बात को लेकर चिंतित भी था। राजा ने सरदार से कहा था-"मुझे केवल तुम्हारी बेटी चाहिए। रीति-रिवाज़ तो हर प्रदेश के अलग-अलग होते ही हैं। उनके बारे में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं।" पर सरदार की इच्छा थी कि विवाह की सारी रस्में पूरी

की जाएँ। उसकी एक ही बेटी थी, अतः वह किसी भी बात की कमी नहीं रहने देना चाहता था।

एक दिन मौका पाकर तेनालीराम कुर्ग प्रदेश पहुँचे। तेनालीराम को देखकर सरदार बहुत प्रसन्न हुआ। उसे मालूम था कि तेनालीराम महाराज के बहुत निकट हैं। सरदार ने अपनी समस्या उनके सामने रखी। तेनालीराम ने सारे रीति-रिवाज़ समझाए और कहा-"हमारे राजा के कुल में एक विशेष प्रथा है-

विवाह संपन्न हो जाने के बाद वधू अपने पैर से जूती उतार कर वर पर फेंकती है। उसके बाद ही वर-वधू राजमहल में जाते हैं।"

सरदार चकित होकर सारी बातें सुन रहा था। मन में सोचने लगा—राजा पर वधू से जूती फिंकवाना क्या देखने वालों को अच्छा लगेगा? ऐसा क्यों करते होंगे? यह रस्म तो बड़ी ही विचित्र है।

सरदार ने तेनालीराम के सामने अपनी शंका प्रकट की। "आप चिंता न

कीजिए। हमारे राजा के परिवार की यही प्रथा है। यह रस्म बड़ी महत्वपूर्ण
इसीलिए राजा की ओर से मैं एक जोड़ी मखमली जूती भी ले आया हूँ"
तेनालीराम ने कहा।

"तेनालीराम जी, मखमल की ही सही, पर है तो जूती ही! जूती फेंकने व
बात सुनते ही मेरे मन में कुछ अजीब-सा हो रहा है। पति पर जूती फेंक
क्या अनुचित नहीं होगा?" सरदार ने पूछा। कुछ देर चुप रहकर तेनालीरा
बोला-"वैसे तो हमारे राजाओं के विवाह में यह रस्म होती आई है। प
आपके मन में यदि झिझक है तो रहने दीजिए।"

सरदार ने तुरंत कहा—"नहीं-नहीं, यह बात नहीं। लाइए, जूती मुझे दीजिए
मैं अपनी बेटी के विवाह में किसी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता

कुछ दिन बाद राजा और सरदार की बेटी का विवाह हुआ। विवाह व
रस्में पूरी हो चुकी थीं। राजा खुशी-खुशी अपनी नववधू को विजयनगर
जाने की तैयारी कर रहे थे। अचानक रानी ने पैर से मखमल की जूती उता
और मुस्कराते हुए राजा पर फेंक दी। तेनालीराम राजा के पास ही थे। इस
पहले कि राजा कुछ कहते, उन्होंने धीरे से राजा के कान में सारी बात ब
दी। राजा मुस्करा दिए और उन्होंने जूती को उठाकर नववधू के हाथ में
दी।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.	प्रशासक	तेलुगु	साहित्य-चर्चा
	हास्य	व्यंग्य	गुत्थियाँ

विश्वास	चुनौती	रीति-रिवाज़
आवश्यकता	मखमल	वधू

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. क्षमा करें, महाराज! मैं हर काम करवा सकता हूँ।
2. तुम जितना चाहो समय ले सकते हो।
3. राजा पर वधू से जूती फिंकवाना..........क्या देखने वालों को अच्छा लगेगा?
4. पति पर जूती फेंकना क्या अनुचित नहीं होगा?
5. नहीं-नहीं, यह बात नहीं। लाइए, जूती मुझे दीजिए।

पढ़ो और समझो

क. चर्चा = बातचीत
वार = हमला
सतर्क = सावधान, सचेत
गुत्थी = समस्या, उलझन
चुनौती = ललकार
झिझकना = संकोच करना
रस्म = रीति
विचित्र = अनोखा
असंभव = जो संभव न हो, अत्यधिक कठिन कार्य

ख. साहित्य → साहित्यिक
आसान → आसानी
आवश्यक → आवश्यकता
चिंता → चिंतित

ग. समझदार × मूर्ख
प्रसन्न × नाराज़
संभव × असंभव
उचित × अनुचित
महत्त्वपूर्ण × महत्त्वहीन

घ. 1. राजा कृष्णदेव राय इन कवियों के साथ अक्सर साहित्य-च
किया करते थे।
राजा कृष्णदेव राय इन कवियों के साथ अक्सर साहित्य-च
में भाग लेते थे।

2. राजा को भी उसे मानना पड़ता था।
राजा भी उसे मानते थे।

3. उन्हें आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है।
वे आसानी से मूर्ख बन सकते हैं।

4. किसी बात की कमी न रहने पाए।
किसी बात की कमी नहीं होनी चाहिए।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :	मोहन घर गया और सो गया → मोहन घर जाकर सो गया।

1. राम बाज़ार गया और रसगुल्ला खाने लगा।

....

2. शीला रोई और चुप हो गई।

....

3. वे हमारे पास आए और बातें करने लगे।

....

4. वह बिस्तर से उठा और चाय पीने लगा।

....

5. माली बाग में गया और पौधों को सींचने लगा।

....

उदाहरण : मोहन की पुस्तक फटी हुई है।
→ यह फटी हुई पुस्तक मोहन की है।

1. पिताजी की कमीज धुली हुई है।

....

2. गुरुजी की तस्वीर दीवार पर लगी हुई है।

....

3. सीमा के कपड़े फटे हुए हैं।

....

4. बच्चों के खिलौने ज़मीन पर बिखरे हुए हैं।

....

उदाहरण : सुरेश ने यह बात सुनी और चल दिया।
→ सुरेश यह बात सुनते ही चल दिया।

1. सुनील ने खाना खाया और सो गया।

....

2. सुनीता ने यह खबर सुनी और रोने लगी।

....

3. पिताजी ने नाश्ता किया और दफ़्तर चले गए।

....

4. राकेश ने विनोद को देखा और लड़ने लगा।

....

घ.

उदाहरण : पिता की आज्ञा मानो →
तुम्हें पिता की आज्ञा माननी चाहिए।

1. माँ की सेवा करो।

....

2. बड़ों का आदर करो।

....

3. बच्चों को प्यार करो।

....

4. ईश्वर से प्रार्थना करो।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. राजा तेनालीराम को क्यों पसंद करते थे?
2. राजा और तेनालीराम के बीच किस बात पर बहस छिड़ गई?
3. राजा ने तेनालीराम को क्या चुनौती दी?
4. राजा के अन्य दरबारी तेनालीराम से क्यों डरते थे?
5. जूती खाकर भी राजा क्यों मुस्करा दिए?

ख. सही उत्तर छाँटो :

सरदार अपनी बेटी के विवाह के अवसर पर चिंतित था क्योंकि :

1. उसकी बेटी में कोई कमी थी।
2. उसकी बेटी का विवाह राजा से हो रहा था।
3. सरदार को राजा के वैवाहिक रीति-रिवाज़ की जानकारी नहीं थी
4. वह विवाह का उचित प्रबंध नहीं कर पा रहा था।

ग. (क) और (ख) का सही ढंग से मिलान करो :

(क)	(ख)
1. कृष्णदेव राय	2. तेनालीराम के सामने अपनी शंका प्रकट की।
2. नववधू ने	1. हास्य और व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि थे।
3. तेनालीराम	3. विजयनगर के राजा थे।
4. सरदार ने	4. मखमल की जूती उतारी और राजा पर फेंकी।

V. पढ़ो और लिखो

क. यह बात सुनते ही राजा को क्रोध आ गया। क्रोध के मारे उनका चेहरा एकदम लाल हो गया। वे बोले–"क्या ऐसा कर पाना तुम्हारे लिए संभव है? तुम्हें चुनौती है–ऐसा करके दिखाओ"। तेनालीराम ने कहा, " महाराज, मुझे स्वीकार है। मैं यह काम अवश्य कर दिखाऊँगा। हाँ, इसके लिए आप मुझे कुछ समय दीजिए।"

ख. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाओ :
व्यंग्य, चुनौती, रीति-रिवाज़, साहित्य, वधू

VI. योग्यता-विस्तार

जैसे कृष्णदेव राय के दरबार में तेनालीराम थे, वैसे ही, अकबर के दरबार में बीरबल थे। बीरबल हास्य-व्यंग्य के लिए आज भी प्रसिद्ध हैं। इनकी कथाएँ पत्र-पत्रिकाओं से पढ़कर अपने मित्रों को सुनाओ।

पाठ 16

पढ़े-लिखे मूर्ख

संरचना-संकेत

जो-वह प्रेरणार्थक-प्रथम, द्वितीय रूप (करना/करवाना) ना-हो (जाना होगा) - ना+चाहता

गुरु शारदानंद के आश्रम में चार विद्यार्थी पढ़ते थे। उन्होंने दस वर्ष तक शिक्षा प्राप्त की। उनमें से एक ने व्याकरण, दूसरे ने संगीत, तीसरे ने ज्योतिष और चौथे ने आयुर्वेद का अध्ययन किया।

शिक्षा पूरी कर लेने के बाद चारों शिष्यों ने गुरुजी को गुरुदक्षिणा देनी चाही। गुरुजी ने कहा, "मैं तुम से अभी गुरुदक्षिणा नहीं लूँगा। इसके लिए तुम राजा के पास जाओ तथा अपने ज्ञान की परीक्षा दो। राजा प्रसन्न होकर तुम्हें जो इनाम देंगे, वही मेरी गुरुदक्षिणा होगी।"

चारों विद्यार्थी परीक्षा देने के लिए राजधानी पहुँचे। वे मंत्री से मिले। मंत्री से उन्होंने कहा कि हमें गुरुजी ने यहाँ परीक्षा देने के लिए भेजा है। कृपया, आप हमें राजा से मिलवा दें। मंत्री ने राज्य की अतिथिशाला में उनके ठहरने
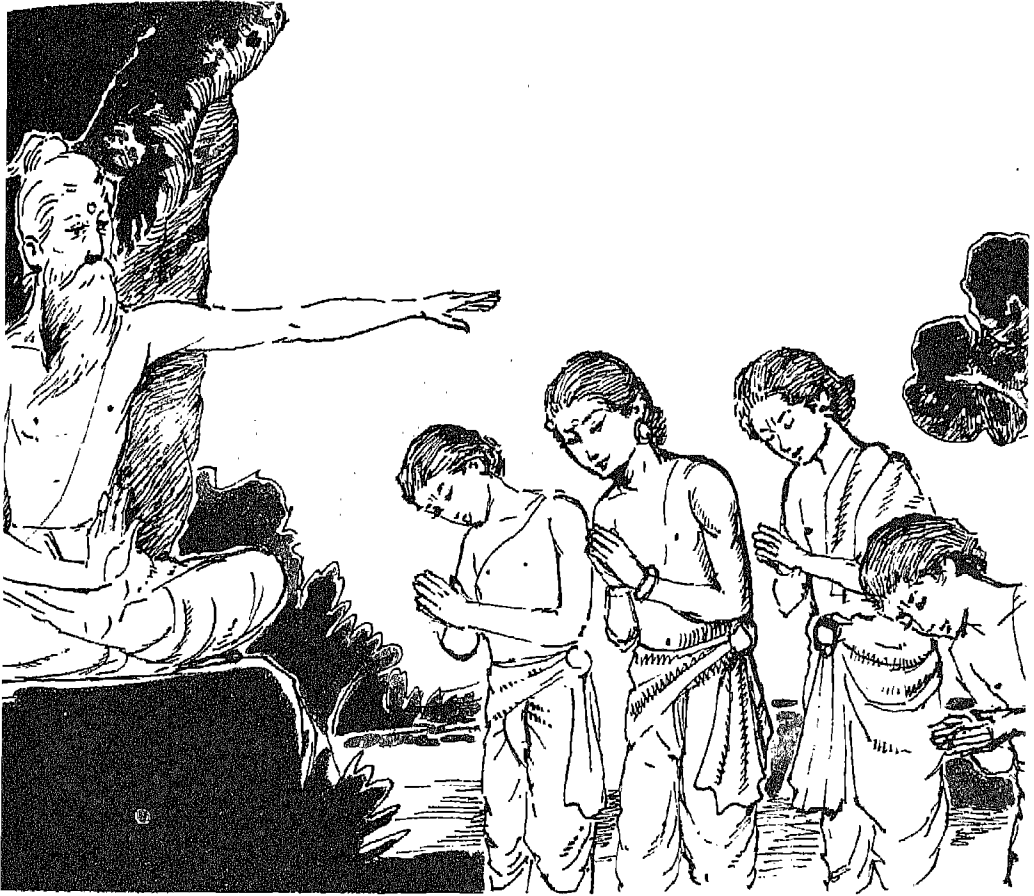
का प्रबंध करवा दिया और अगले दिन उन्हें राजदरबार में आने के लिए कहा।

दूसरे दिन वे राजदरबार में पहुँचे। राजा से उन्होंने कहा, "महाराज! हम लोग अपने गुरुजी के आदेश के अनुसार आपके यहाँ परीक्षा देने आए हैं। परीक्षा के बाद हमें आपसे जो पुरस्कार मिलेगा, उसे हम गुरुदक्षिणा के रूप में अपने गुरुजी को भेंट करेंगे।" विद्यार्थियों की बात सुनकर राजा ने कहा-"शारदानंद जी जैसे गुरु के शिष्यों की परीक्षा भला हम क्या लेंगे! राजा

की बात सुनकर मंत्री ने निवेदन किया-"महाराज, ये विद्वान् इतनी दूर से चलकर आपके पास आए हैं। इनकी परीक्षा लेने से इनको तो संतोष मिलेगा ही, हमें भी ज्ञान-लाभ होगा।" मंत्री की बात सुनकर राजा ने कहा-"ठीक है। आप ही बताइए, इनकी परीक्षा कैसे ली जाए?"

मंत्री बहुत बुद्धिमान तथा अनुभवी था। उसने राजा से निवेदन किया-"महाराज! आज तो इन्हें कुछ स्वर्ण-मुद्राएँ देने की आज्ञा दीजिए, जिससे ये अपने भोजन आदि की व्यवस्था कर सकें। कल इनकी परीक्षा का प्रबंध किया जाएगा। राजा ने चारों विद्यार्थियों को सौ-सौ स्वर्ण-मुद्राएँ दिलवाईं। स्वर्ण-मुद्राएँ पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए। सोचने लगे-बिना कुछ किए ही इतना सम्मान! इसका मतलब कल तो हमें खूब इनाम मिलेगा। लगता है, इस राज्य में विद्वानों को विशेष सम्मान दिया जाता है।

अतिथिशाला में पहुँचकर उन्होंने भोजन बनाने के लिए आपस में अलग-अलग काम बाँट लिए। वैयाकरण बाज़ार से दही लेने गया। संगीतज्ञ को चावल पकाने का काम दिया गया। ज्योतिषाचार्य को भोजन परोसने के लिए केले के पत्ते लाने थे और आयुर्वेदाचार्य को बाज़ार से सब्ज़ी।

चारों अपने-अपने काम पर चल पड़े। वैयाकरण दही खरीदने के लिए हलवाई की दुकान पर पहुँचा। उसने हलवाई से दही माँगा। हलवाई 'दही' शब्द का उच्चारण शुद्ध नहीं कर पा रहा था और वाक्य की रचना भी गलत थी। वैयाकरण दही लेना भूलकर हलवाई को 'दही' शब्द का शुद्ध उच्चारण सिखाने लगा। उसने हलवाई को वाक्य-रचना के नियम भी समझाए। हलवाई यह सब सुनकर बहुत क्रोधित हुआ। उसने वैयाकरण को चुप कराने की कोशिश की लेकिन वैयाकरण चुप नहीं हुआ। तब उसे और भी गुस्सा आया और उसने एक कुल्हड़ उठाकर वैयाकरण के मुँह पर दे मारा। चोट खाकर वैयाकरण दही बिना लिए ही वहाँ से भाग आया।
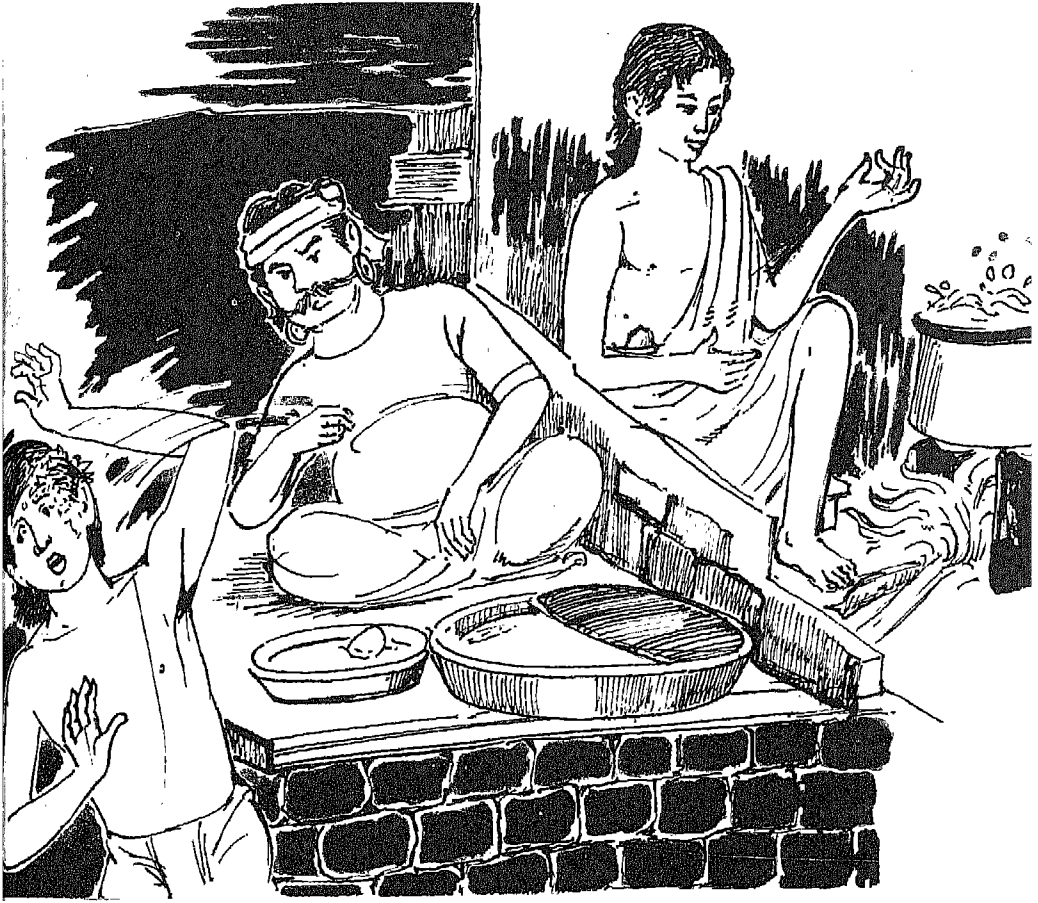
उधर संगीतज्ञ अतिथिशाला में चावल पकाने बैठा। थोड़ी देर बाद जब चावल उबलने लगे तो "खद-खद" की आवाज़ होने लगी। "खद-खद" की आवाज सुनकर वह हाथ से ताल देने लगा। ताल देते-देते उसे चावलों का ध्यान ही नहीं रहा और चावल जल गए।

ज्योतिषाचार्य ने पंचाँग में केले के पत्ते लाने का मुहूर्त देखा। पंचाँग के अनुसार मुहूर्त दो घंटे बाद था। अतः वह वहीं बैठे-बैठे शुभ-मुहूर्त की प्रतीक्षा करने लगा।

आयुर्वेदाचार्य सब्ज़ी खरीदने बाज़ार पहुँचा। उसे बाज़ार में ऐसी कोई सब्ज़ी नहीं दिखाई दी, जो स्वास्थ्य के लिए ठीक हो। तंग आकर वह भी बिना कुछ लिए अतिथिशाला लौट आया। अतिथिशाला में चारों ने अपनी-अपनी बात बताई और फिर दुखी होकर भूखे ही सो गए। मंत्री के सेवक इन चारों युवकों के काम देख रहे थे। उन्होंने मंत्री को पूरी घटना की सूचना दी। मंत्री ने चारों युवकों की मूर्खता की कहानी राजा को जा सुनाई।
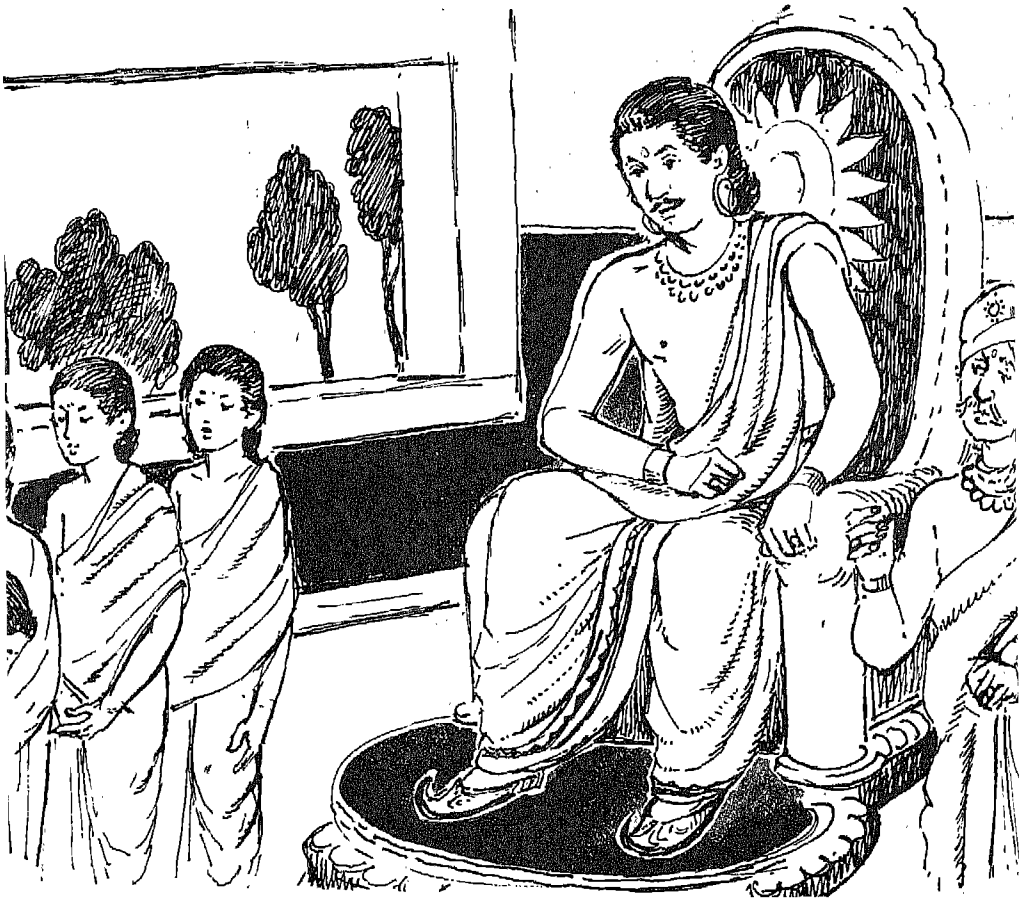
अगले दिन चारों छात्र दरबार में उपस्थित हुए। राजा ने उनसे कहा-''आपने

विद्या तो पढ़ी है, लेकिन आप यह नहीं जानते कि विद्या का जीवन में किस प्रकार उपयोग किया जाए। ऐसी विद्या से क्या लाभ? मुझे अपने राज्य में ऐसे पढ़े-लिखे मूर्खों की ज़रूरत नहीं।" चारों युवक निराश होकर लौट गए।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. व्याकरण विद्यार्थी मूर्खता
पंचाँग आयुर्वेद संगीत
आश्रम ज्ञान विद्वत्ता
अध्ययन ज्योतिष कृपया
पुरस्कार परीक्षा गुरुदक्षिणा
कुल्हड़ वैयाकरण बुद्धिमान
अतिथिशाला उच्चारण ज्योतिषाचार्य
स्वर्णमुद्राएँ मुहूर्त संगीतज्ञ
आयुर्वेदाचार्य

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. मैं तुमसे अभी गुरुदक्षिणा नहीं लूँगा।
2. महाराज! गुरुजी के आदेश के अनुसार हम अपने ज्ञान की परीक्षा देने आए हैं।
3. शारदानंद जी जैसे गुरु के शिष्यों की परीक्षा हम क्या लेंगे?
4. ठीक है, हम इनकी परीक्षा लेंगे।

5. ऐसी विद्या से क्या लाभ?
6. जाइए, मुझे अपने राज्य में ऐसे पढ़े-लिखे मूर्खों की ज़रूरत नहीं।

II. पढ़ो और समझो

क.

आयुर्वेद	=	चिकित्सा-शास्त्र
गुरुदक्षिणा	=	अध्ययन की समाप्ति के बाद गुरु को दी जाने वाली भेंट
अतिथिशाला	=	अतिथि या मेहमानों को ठहराने का स्थान
वैयाकरण	=	व्याकरण का विद्वान्
ज्योतिषाचार्य	=	ज्योतिष का विद्वान्
संगीतज्ञ	=	संगीत का विद्वान्
पंचाँग	=	ज्योतिष की वह पुस्तक, जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण आदि लिखे रहते हैं।
मुहूर्त	=	ज्योतिष के अनुसार शुभ कार्य के लिए निकाला गया समय।
इनाम	=	पुरस्कार

ख.

व्याकरण → वैयाकरण
ज्योतिष → ज्योतिषाचार्य
आयुर्वेद → आयुर्वेदाचार्य
संगीत → संगीतज्ञ

ग.

अनुभव → अनुभवी
बुद्धि → बुद्धिमान
दुख → दुखी

घ.	करना	कराना	करवाना
	पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
	सुनना	सुनाना	सुनवाना
	ठहरना	ठहराना	ठहरवाना
	पहुँचना	पहुँचाना	पहुँचवाना
	कहना	कहलाना	कहलवाना
	देना	दिलाना	दिलवाना
	पीना	पिलाना	पिलवाना
	खाना	खिलाना	खिलवाना
	देखना	दिखाना	दिखवाना

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्यों को बदलो :

> **उदाहरण :** मैंने थैला भेजा था, मिला होगा →
> जो थैला मैंने भेजा था, वह तुम्हें मिला होगा।

1. मोहन ने किताब भेजी थी, मिली होगी

 ....

2. शीला ने कविता लिखकर भेजी थी, पढ़ी होगी

 ....

3. मयूर ने कार भेजी थी, देखी होगी

 ....

4. माँ ने खिलौने खरीदकर भेजे थे, देखे होंगे

 ....

ख.

> **उदाहरण :**
> → बच्चे ने दूध पिया।
> माँ ने बच्चे को दूध पिलाया।

1. छात्रों ने निबंध **लिखा**।
   अध्यापक ने छात्रों को निबंध.................... ।
2. मेरी बहन ने गाना **सीखा**।
   मैंने बहन को गाना.................... ।
3. मरीज़ ने दवा **खायी**।
   नर्स ने मरीज़ को दवा.................... ।
4. मेहमान ऊपर के कमरे में **सोए**।
   मैंने महमानों को ऊपर के कमरे में.................... ।

ग.

> **उदाहरण :**
> माँ रोज़ खाना **बनाती** हैं (नौकर से) →
> माँ रोज़ **नौकर** से खाना बनवाती हैं।

1. छात्रावास में लड़कियाँ रविवार को कपड़े **धोती** हैं (धोबी से)
2. स्वाती शादी के लिए कपड़े **सिलती** है (दर्जी से)
3. पिताजी अलमारियों में **किताबें** रख रहे हैं (भाई साहब से)
4. माँ बच्चे को **नहलाती** है (आया से)

घ.

> **उदाहरण :**
> आपको यहाँ रहना है।
> → आपको यहाँ रहना होगा।

1. तुम्हें अपनी किताब लानी है।

2. बच्चे को दूध पीना है।
3. मुझे जल्दी घर जाना है।
4. उसे आज देर तक काम करना है।

ङ.

उदाहरण :
मुझे सब्ज़ी **खरीदनी** थी।
→ मैं सब्ज़ी खरीदना चाहता था।

1. मुझे आज बाज़ार जाना था।

....

2. आपको जरूरी काम करना था।

....

3. मंत्रीजी को भाषण देना था।

....

4. मुझे अपनी बेटी की शादी करनी थी।

....

IV. पढ़ो और बताओ

1. गुरुजी ने शिष्यों से गुरुदक्षिणा न लेते हुए क्या कहा ?
2. वैयाकरण हलवाई को क्या समझाने लगा ?
3. उबलते चावलों की 'खद्-खद्' आवाज़ सुनकर संगीतज्ञ ने क्या किया ?
4. ज्योतिषाचार्य केले के पत्ते लेने क्यों नहीं गया ?
5. आयुर्वेदाचार्य ने सब्ज़ी क्यों नहीं खरीदी ?
6. इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

V. पढ़ो और लिखो

दूसरे दिन वे राज-दरबार में पहुँचे। राजा से उन्होंने कहा, "महाराज! गुरुजी के आदेश के अनुसार हम आपके पास अपने ज्ञान की परीक्षा देने आए हैं। परीक्षा के बाद हमें आपसे जो पुरस्कार मिलेगा उसे हम गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने गुरुजी को भेंट करेंगे।" विद्यार्थियों की बात सुनकर राजा ने कहा, "शारदानंद जी जैसे गुरु के शिष्यों की परीक्षा हम क्या लेंगे! महामंत्री, इन चारों विद्यार्थियों में से प्रत्येक को सौ-सौ स्वर्ण-मुद्राएँ दे दीजिए।"

VI. योग्यता-विस्तार

यदि तुम मंत्री होते तो इन युवकों की परीक्षा कैसे लेते ?

पाठ 17

चिड़िया
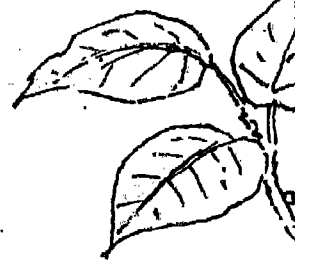
पीपल की ऊँची डाली पर
बैठी चिड़िया गाती है।
तुम्हें ज्ञात अपनी बोली में
क्या संदेश सुनाती है?

सब मिल-जुलकर रहते हैं वे,
सब मिल-जुलकर खाते हैं।
आसमान ही उनका घर है,
जहाँ चाहते जाते हैं।

उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं।
जग का सारा माल हड़पकर
जीने की भी चाह नहीं।

जो मिलता है, अपने श्रम से
उतना-भर ले लेते हैं।
बच जाता जो औरों के हित,
उसे छोड़ वे देते हैं।

वे कहते हैं– मानव, सीखो
तुम हमसे जीना जग में।
हम स्वच्छंद, और क्यों तुमने
डाली है बेड़ी पग में?

पीपल की डाली पर चिड़िया
यही सुनाने आती है।
बैठ घड़ी-भर, हमें चकित कर,
गाकर फिर उड़ जाती है।

–आरसी प्रसाद सिं

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. डाली चिड़िया ज्ञात
संदेश मिल-जुलकर आसमान
लोग परवाह हड़पकर
श्रम स्वच्छंद चकित

ख. 1. तुम्हें ज्ञात अपनी बोली में
क्या संदेश सुनाती है?

2. उनके मन में लोभ नहीं है,
पाप नहीं, परवाह नहीं।

3. वे कहते हैं—मानव, सीखो
तुम हम से जीना जग में।

4. हम स्वच्छंद, और क्यों तुमने
डाली है बेड़ी पग में?

II. पढ़ो और समझो

डाली = टहनी
ज्ञात = मालूम
संदेश = सूचना, खबर
पंछी = पक्षी
लोभ = लालच
परवाह = फ़िक्र
स्वच्छंद = आज़ाद
बेड़ी = जंजीर
चकित = हैरान
श्रम = मेहनत
चाह = इच्छा
माल हड़पना = दूसरे की संपत्ति पर ज़बरदस्ती अधिकार कर लेना
औरों के हित = दूसरों के लिए

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. 1. उनके मन में लोभ नहीं है,

....

2. ....

जीने की भी चाह नहीं।

3. वे कहते हैं ....

तुम हमसे जीना जग में

ख. नीचे दी गई पंक्तियों में से सही को छाँटकर पंक्ति पूरी करो :

1. भोर-सवेरे बैठ पेड़ पर

गाना गाती है बढ़िया।

चहक-चहक कर फुदक रही है।

....

क. खट्टे चूरन की पुड़िया

ख. पीपल पर बैठी चिड़िया

ग. आँगन में बैठी बुढ़िया

घ. झूले में लेटी गुड़िया

2. वह जग के बंदी मानव को

मुक्ति मंत्र सिखलाती है।

चिड़िया बैठी प्रेम प्रीति की

....

क. लोरी हमें सुनाती है।

ख. कुछ संदेश सुनाती है।

ग. रीति हमें सिखलाती है।

घ. डोरी खूब बढ़ाती है।

IV. पढ़ो और बताओ

1. चिड़िया कहाँ बैठकर गाना गा रही है?
2. पक्षी किस प्रकार रहते हैं?
3. पक्षियों को किस बात की चाह नहीं होती?
4. पक्षी बचे हुए भोजन का क्या करते हैं?
5. 'चिड़िया' नामक कविता से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

V. योग्यता-विस्तार

1. दस पक्षियों के नाम लिखो।
2. इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।
3. चिड़िया पर अपनी भाषा में पढ़ी किसी कविता का भाव हिंदी में लिखो।

पाठ 18

बदरीनाथ की ओर

संरचना-संकेत

लगना (साँप-सा) –या था संयुक्त क्रिया– आ पहुँचे

श्रीनगर (गढ़वाल) से एक बैठक में भाग लेने का बुलावा आया तो बदरीनाथ दर्शन की सोई इच्छा सहसा जाग उठी। लगा, यह तो बदरीनाथ का ही बुलावा है। मित्रों से चर्चा की। कुछ ने पहाड़ी यात्रा की कठिनाइयाँ गिनाईं तो कुछ ने रास्ते के खतरे बतलाए, पर दर्शन की इच्छा तो जाग ही चुकी थी।

मसूरी एक्सप्रेस से रात को दिल्ली से चले और सुबह हरिद्वार पहुँच गए। सामान क्लॉक-रूम में रखकर हर की पौड़ी पहुँचे। गंगातट पर स्नान करने वाले भक्तों की भीड़ थी। मैंने भी गंगा के बर्फीले पानी में स्नान किया। दिन में कनखल और अन्य दर्शनीय स्थानों का भ्रमण किया। गंगा मैया की संध्या-कालीन आरती बड़ी प्रसिद्ध है। रोज़ाना हज़ारों लोग आरती-दर्शन करने आते हैं।

दूसरे दिन सवेरे ऋषिकेश पहुँचे और वहाँ भी थोड़ी देर घूमे-फिरे। फिर

हमारी बस चली तो देवप्रयाग में ही रुकी। यहाँ पर भागीरथी और अलकनंदा का संगम है। दोनों नदियाँ बड़े वेग से अपनी-अपनी दिशाओं से आती हैं और यहाँ गले मिलकर दुगुने जोश से आगे बढ़ जाती हैं। यहीं से दोनों को 'गंगा' नाम मिलता है।

शाम तक हम लोग श्रीनगर पहुँच गए। यह 'श्रीनगर' कश्मीर के 'श्रीनगर' से भिन्न, एक शांत और छोटा-सा कस्बा है। गर्मी के मौसम में जब अनेक तीर्थयात्री बदरीनाथ और केदारनाथ की यात्रा पर जाते हैं, तब तीर्थ यात्रियों के कारण यहाँ काफी हलचल बढ़ जाती है।

एक छोटी बस लेकर हम पहली जून को प्रातः छह बजे बदरीनाथ के लिए रवाना हो गए। यात्रा का मार्ग अलकनंदा नदी के किनारे-किनारे है। कुछ ही दूर रुद्रप्रयाग है, जहाँ मंदाकिनी केदारनाथ की ओर से आकर अलकनंदा से मिलती है। यहीं से केदारनाथ का मार्ग अलग हो जाता है।

यात्रा में कुछ ऐसे पहाड़ मिले, जिन पर हरियाली का नामोनिशान नहीं था। दूसरी ओर पहाड़ी खाइयाँ और छितरे वृक्ष थे। गहरी घाटी में अलकनंदा बह रही थी। मेरी नज़र उसकी धारा पर थी। कभी एकाएक वह नज़रों से ओझल हो जाती तो कभी क्षणभर में ही फिर प्रकट हो जाती। जैसे कह रही हो—"डरो मत, मैं बदरीनाथ से ही तो आ रही हूँ।"

आगे जाने पर कर्णप्रयाग मिला।

यहाँ अलकनंदा और पिंडर का संगम होता है। यहाँ पर बस नहीं रुकी। इस रास्ते में कहीं-कहीं तो मार्ग इतना सँकरा और ऊबड़-खाबड़ है कि ड्राइवर की कुशलता पर आश्चर्य होता है।

कुछ आगे बढ़ने पर चमोली आया। वहाँ हमने भोजन किया और आगे चल पड़े। रास्ते में दृश्य बार-बार बदलते रहे। कभी पथरीली चट्टानें दिखाई

पड़तीं तो कभी सीढ़ीनुमा हरे-भरे खेत, कहीं पशुओं को चराते बच्चे दिखाई पड़ते तो कहीं पीठ पर बँधी टोकरी में पत्ते ले जाती स्त्रियाँ।

यात्रा का मार्ग लगातार कठिन होता जा रहा था। कहीं-कहीं तो ऐसा भी लगा कि सँकरी सड़क पहिए के दबाव से नीचे ढह पड़ेगी। हर क्षण हम ईश्वर का नाम लेते हुए आगे बढ़ रहे थे। अब हम ऊँचाइयों को पार कर जोशीमठ की ओर बढ़ने लगे।

जोशीमठ नई दुनिया-सा लगा। गहरी-सँकरी घाटियों के बाद इतना खुला दृश्य! मैं तो दंग रह गई। नंदादेवी की चोटी गर्व से सिर उठाए खड़ी थी। आसपास पर्वत शृंखलाओं के बीच उसकी शान देखते ही बनती थी। सूर्य की किरणें बर्फ़ीली चोटियों को सुनहरा बना रही थीं। चारों ओर अनोखी आभा बिखरी हुई थी। मैं समझ गई कि इसी दृश्य ने शंकराचार्य जैसे दार्शनिक को यहाँ बाँध लिया होगा। शायद यहीं पर दिव्य-ज्योति का अनुभव कर उन्होंने यहाँ ''ज्योतिर्मठ' की स्थापना की होगी।

कुछ समय बाद हम विष्णुप्रयाग के संगम पर थे। यहाँ अलकनंदा से मिलती है— विष्णुगंगा। बिल्कुल दूध-सी सफ़ेद, झाग से भरी। अचानक सड़क के किनारे पहाड़ पर टिकी एक विशाल चट्टान ने हम लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। विष्णुगंगा ने उसमें से भी अपना मार्ग निकाल लिया था। जल के तेज़ बहाव से बर्फ की चट्टान-चंद्राकार हो गई थी। उसके भीतर से जल पछाड़ें खाता हुआ बह रहा था। उस अद्भुत दृश्य को शब्दों में बाँधना कठिन है।

अब नीलकंठ की चोटी स्पष्ट दिखाई पड़ने लगी। इसी की गोद में बदरीनाथ-धाम स्थित है। हमारी बस वहाँ आकर रुक गई। तीर्थ-यात्रियों के दल-के-दल दिखाई दिए। हमने सामान उठाया और धर्मशाला की ओर चल पड़े। हम जल्दी से नहा-धोकर आरती के लिए जाना चाहते थे। अतः सामान रखकर हम लोग स्नान के लिए तप्तकुंड की ओर चल पड़े।
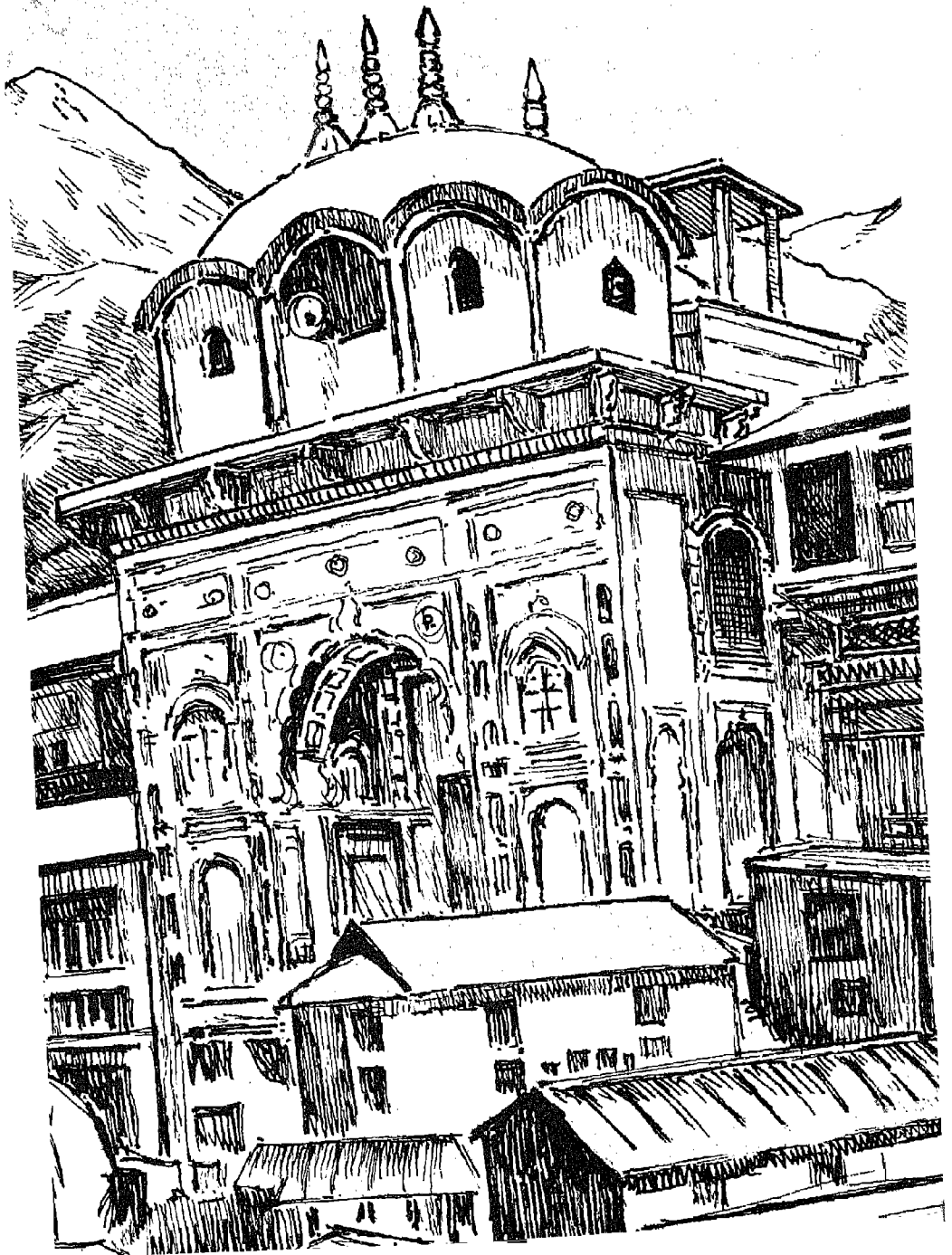
प्रकृति हमारा कितना ध्यान रखती है! हिमालय की इतनी ठंड में उबलते पानी का एक स्रोत-तप्तकुंड। सबने उस जल की गरमी का आनंद लिया तथा मंदिर की ओर चल पड़े। घंटियों की मधुर गूंज के बीच 'बदरी विशाल की जय' सारे वातावरण में गूँज रही थी। भीड़ का कोई हिसाब नहीं था।

दर्शन-द्वार पर पहुँचते ही बदरीनाथ के दर्शन कर मैं तो अपनी सुध-बुध ही खो बैठी। अचानक वहाँ खड़े एक व्यवस्थापक की आवाज़ सुनाई पड़ी– "जल्दी कीजिए, सबको दर्शन करना है।" चलते-चलते मैंने एक बार फिर दर्शन किए।

हमें अगले दिन वहाँ से चल देना था, इसलिये यह निश्चय किया गया कि प्रातः जैसे ही मंदिर के द्वार खुलेंगे हम दुबारा दर्शन करके ही अपनी यात्रा प्रारंभ करेंगे। यही सोचते हुए पता नहीं कब नींद आ गई।

सुबह चार बजे मंदिर की घंटियों की झंकार से आँख खुली। श्रीमती सुब्बालक्ष्मी का 'सुप्रभातम्' कैसेट पूरे परिसर में गूँज रहा था। हम तैयार होकर मंदिर के द्वार पर पहुँचे। आज मैंने पूरा प्रयत्न किया कि बदरी-विशाल की झाँकी मन में बसा लूँ। दर्शन करके बाहर आई तो मन में बड़ी शांति थी। मन करता था, यहीं बस जाऊँ। बाहर आकर देखा कि नर-नारायण और नीलकंठ पर्वत मुझे देख रहे थे। शायद कह रहे थे– "क्षण-भर की इस शांति से इतरा रही हो? हमें देखो, हम युगों-युगों से यही दृश्य देखते चले आ रहे हैं।

अचानक होश आया तो देखा– सब बस में बैठ चुके थे। मैं भी भूली-बिसरी-सी बस में जा बैठी।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

बर्फीला	हरिद्वार	क्लॉकरूम
व्यवस्थापक	दर्शनीय	अलकनंदा
संपन्न	वातावरण	बदरीनाथ
मंदाकिनी	अद्भुत	विष्णुगंगा
शंकराचार्य	रुद्रप्रयाग	नंदादेवी

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. डरो मत, मैं बदरीनाथ से ही आ रही हूँ।
2. जल्दी कीजिए, सबको दर्शन करना है।
3. क्षणभर की शांति से इतरा रही हो।
4. मैं तो दंग रह गई!
5. हाँ, मैं भी लौट रही हूँ।

II. पढ़ो और समझो

क.

संध्या काल = शाम का समय
छितरे = फैले, दूर-दूर बिखरे
अद्भुत = अनोखा
स्रोत = सोता, झरना
झंकार = मधुर ध्वनि या आवाज़
व्यवस्थापक = इंतजाम करने वाला (मैनेजर)
सुध-बुध खो बैठना = सब कुछ भूल जाना।

परिसर = अहाता, क्षेत्र
भूली-बिसरी = कुछ ध्यान न रहना, सोचते हुए-से
नामोनिशान न होना = बिल्कुल मिट जाना
प्रकट होना = दिखाई पड़ना
शृंखला = पर्वत की चोटी, जंजीर
दार्शनिक = आत्मा-परमात्मा के बीच में चिंतन करने वाले

ख. 'ही' के विभिन्न प्रयोग देखो :

मैं ही	तू ही	वही
मुझे ही	तुझे ही	उसे ही
मेरा ही	तेरा ही	उसी का

हम ही	तुम ही	वे ही
हमें ही	तुम्हें ही	उन्हें ही
हमारा ही	तुम्हारा ही	उन्हीं का

यही-ये ही	आप ही
इसी-इन्हीं	आपको ही
इसे ही-इन्हें ही	आपसे ही
इसी का-इन्हीं का	आपका ही

ग. बुलाना → बुलावा
पहनाना → पहनावा
दिखाना → दिखावा
चढ़ाना → चढ़ावा

घ.	प्रातःकाल	प्रभात	सवेरा
	सहसा	अचानक	एकाएक
	बुलावा	निमंत्रण	न्योता
	काफी	पर्याप्त	बहुत
	रास्ता	मार्ग	सड़क
	भ्रमण	सैर	घूमना

ङ वाक्य में 'ही' के स्थान परिवर्तन से अर्थ परिवर्तन पर ध्यान दो :

1. इलाहाबाद के लोग हिंदी **ही** बोलते हैं।
   (अर्थात् दूसरी भाषा नहीं बोलते)
2. इलाहाबाद के लोग **ही** हिंदी बोलते हैं।
   (अर्थात् दूसरे क्षेत्र के लोग हिंदी नहीं बोलते)

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे करो :

> **उदाहरण**– यह रस्सी है (साँप-सी) →
> → यह रस्सी साँप-सी लग रही है।

1. यह झील है (समुद्र-सी)
2. यह बर्फ है (सफ़ेद चादर-सी)
3. यह कोहरा है (धुआँ-सा)
4. यह पुतला है (आदमी-सा)

ख. नीचे के वाक्यों में 'उठना' क्रिया के सही रूप भरो :

1. बच्चा सोते-सोते जाग ....।
2. शीला एकाएक बोल ....।

3. उनकी आवाज़ कमरे में गूँज .... ।
4. वे दर्द से तड़प .... ।

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलकर लिखो :

उदाहरण :	अगले साल मैं मद्रास जाऊँगा
	पिछले साल मैं मद्रास गया था।

1. अगले साल हम बदरीनाथ जाएँगे।
   ....
2. अगले साल मैं आपके भाई से मिलूँगा।
   ....
3. अगले महीने मैं हरिद्वार जाऊँगा।
   ....
4. हम अगले साल छात्रावास में रहेंगे।
   ....
5. अगली बार भी हम इसी होटल में रुकेंगे।
   ....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. हरिद्वार में क्या प्रसिद्ध है?
2. श्रीनगर में गर्मियों के मौसम में हलचल क्यों बढ़ जाती है?
3. केदारनाथ का मार्ग किस स्थान से अलग हो जाता है?
4. चमोली से बदरीनाथ के रास्ते की चार विशेषताएँ बताओ।
5. लेखिका ने यह क्यों कहा है कि "प्रकृति हमारा कितना ध्या रखती है।"

ख. जो बातें 'बदरीनाथ की ओर' पाठ में बताई गई हों उनके सामने सही (√) का चिह्न लगाओ :

क. हिमालय पर्वत की सुंदरता

ख. ऋषिकेश का सौंदर्य

ग. रात में हिमालय का रूप

घ. बदरीनाथ मंदिर की बनावट

ग. भागीरथी और अलकनंदा को 'गंगा' नाम किस स्थान से मिलता है? सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगाओ :

क. कर्णप्रयाग से

ख. देवप्रयाग से

ग. रुद्रप्रयाग से

घ. विष्णुप्रयाग से

घ. प्रयाग (इलाहाबाद) में गंगा और यमुना का संगम होता है। निम्नलिखित प्रयागों में किन नदियों का संगम होता है?

क. देवप्रयाग में ....

ख. रुद्रप्रयाग में ....

ग. कर्णप्रयाग में ....

घ. विष्णुप्रयाग में ....

ङ हरिद्वार से बदरीनाथ तक की यात्रा में यात्री निम्नलिखित प्रमुख स्थानों से गुज़रते हैं इन स्थानों का क्रम सही करो :

गलत क्रम	सही क्रम
देवप्रयाग	1. ....
ऋषिकेश	2. ....
चमोली	3. ....

श्रीनगर 4.....................................

जोशीमठ 5.....................................

रुद्रप्रयाग 6.....................................

च. पाठ के आधार पर बताओ :

क. दो नदियों के नाम 1.................... 2. ....

ख. हिमालय की दो चोटियों के नाम 1.................. 2. ....

ग. दो तीर्थों के नाम 1.................... 2. ....

घ. दो शहरों के नाम 1...................... 2. ....

VI. पढ़ो और लिखो

क. हिमालय में अनेक तीर्थ स्थान हैं।

ख. इनमें बदरीनाथ और केदारनाथ प्रसिद्ध हैं।

ग. बदरीनाथ नीलकंठ पर्वत की गोद में स्थित हैं।

घ. पास ही नर-नारायण नाम के पवर्त हैं।

ङ. बदरीनाथ का मार्ग अलकनंदा के किनारे-किनारे है।

VI. योग्यता-विस्तार

क. केदारनाथ के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

ख. शंकराचार्य कौन थे? उनकी जीवनी पढ़ो।

पाठ 19

गणतंत्र दिवस : आँखों देखा हाल

संरचना-संकेत

जैसे ही······वैसे ही
मिश्र क्रिया (किया जा सकता है)
परसर्ग प्रयोग (से, में, पर)
कर्मवाच्य (बनाया जाता है)
-ने वाला है

गणतंत्र दिवस की शुभ-बेला में आप सबको बहुत-बहुत बधाई! आकाशवाणी की ओर से मैं—दिनेश माथुर—इंडिया गेट से आपका अभिनंदन करता हूँ। इस अपार जन-समूह का भी, जो विजय चौक से इंडिया गेट तक के राजमार्ग के दोनों ओर उपस्थित है और उसका भी, जो भारत के दूर-दराज़ के इलाकों में बैठा मेरी बातें सुन रहा है।

गणतंत्र-दिवस की भव्य परेड को देखने के लिए सभी लोग उत्सुक हैं। लीजिए, आपके इंतजार की घड़ियाँ अब ख़त्म हुई। अब समारोह शुरू होने वाला है। सामने से मोटरकारों का एक काफिला दिखाई दे रहा है, उसमें भारत के प्रधानमंत्री आ रहे हैं। मोटरकारों का काफिला धीरे-धीरे इंडिया गेट की ओर बढ़ रहा है। लीजिए, अब कारों का काफिला 'अमर जवान ज्योति' तक आ पहुँचा है। प्रधानमंत्री अपनी कार से उतर रहे हैं। रक्षामंत्री उनकी

अगवानी कर रहे हैं। तीनों सेनाध्यक्षों ने उन्हें सलामी दी। प्रधानमंत्री ने "अमर जवान-ज्योति" पर पुष्पमाला चढ़ाई और सैनिकों ने शहीदों की स्मृति में सलामी दी।

अब प्रधानमंत्री मुख्य सलामी मंच की ओर लौट रहे हैं। उन्होंने सलामी मंच के निकट अपना आसन ग्रहण कर लिया है। लीजिए, सामने से दिख रहे हैं- राष्ट्रपति के अंगरक्षक, छह-फुटे जवान, मुस्तैदी से घोड़ों पर सवार हैं। उनके साफों की कलगी चमक रही है और घोड़े कदम-से-कदम मिलाकर चल रहे हैं। इनके पीछे है आठ घोड़ों की बग्घी। यह आज के उत्सव के अध्यक्ष, भारत के महामहिम राष्ट्रपति जी की सवारी है। बग्घी का उपयोग राष्ट्रपति जी कुछ विशेष अवसरों पर ही करते हैं। सवारी सलामी-मंच के निकट आ पहुँची है। रक्षामंत्री, प्रधानमंत्री तथा तीनों सेनाओं के अध्यक्ष अन्य गणमान्य अतिथियों के साथ राष्ट्रपति का स्वागत कर रहे हैं।

राष्ट्रपति से ध्वजारोहण का अनुरोध किया गया। जैसे ही राष्ट्रपति ने ध्वजारोहण किया, वैसे ही "जन-गण-मन अधिनायक....." राष्ट्र-गान की धुन गूँजने लगी, जिसे आप सब भी सुन रहे होंगे। इक्कीस तोपों की सलामी दागी जा रही है। आकाश में उड़ते हुए हेलिकॉप्टर राष्ट्र-ध्वज पर फूलों की वर्षा कर रहे हैं। इन फूलों की वर्षा ने सारे राजपथ को इंद्रधनुषी बना दिया है। इंद्रधनुष भारत की अनेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के विविध रंगों में एकता का प्रतीक! बहुरंगी संस्कृति का परिचायक इंद्रधनुष!

गणतंत्र दिवस की परेड का मुख्य आकर्षण अब सामने है। भारतीय थल सेना की यह टुकड़ी धीरे-धीरे सलामी-मंच की ओर बढ़ रही है। उसका बैंड "सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा".... की धुन बजा रहा है। इसी धुन पर जवान मार्च-पास्ट कर रहे हैं। अब टुकड़ी सलामी मंच के सामने राष्ट्रपति को सलामी दे रही है।

लीजिए, अब आ गया, अजगर की भांति रेंगते हुए टैंकों का दस्ता। जब इन टैंकों का प्रयोग युद्ध-भूमि में किया जाता है तो दुश्मन के हौसले पस्त हो जाते हैं। इनकी तोपों की गड़गड़ाहट से धरती और आकाश थरथरा उठते हैं। यह जो सफेद पोशाक वाली टुकड़ी दिखलाई पड़ रही है, भारतीय नौ-सेना की टुकड़ी है। ये जवान हमारी विशाल समुद्री सीमा की रक्षा करते हैं और हर युद्ध में इनकी भूमिका सराहनीय रही है। अब हमारे सामने है—विमानों का मॉडल। इसे अभी-अभी भारतीय सेना में शामिल किया गया है। फैगोट प्रक्षेपास्त्र की शस्त्र-प्रणाली पहली बार प्रदर्शित की जा रही है। यह टैंक-रोधी है। इसके द्वारा आगे बढ़ते शत्रु को ढाई किलोमीटर की दूरी से नष्ट किया जा सकता है। और अब नीली-पोशाक वाली वायुसेना की टुकड़ी, बैंड की धुन पर कदम से कदम मिलाती हुई.....। इसके जाँबाज़-पायलटों ने कई बार दुश्मनों के छक्के छुड़ाए हैं।

सामने से झूमते हुए, धीरे-धीरे पग बढ़ाते हुए, सजे-सँवरे हाथी चले आ रहे हैं। इन पर भारत के विभिन्न प्रदेशों से आए बहादुर बच्चे बैठे हैं। इन होनहार बच्चों पर सारे राष्ट्र को गर्व है। इन बच्चों का शौर्य और साहस प्रशंसनीय है। किसी ने डूबते हुए को बचाया है तो किसी ने निहत्थे ही हिंसक पशु या डाकू का मुकाबला किया है। किसी ने आग की भयंकर लपटों से किसी की जान बचाकर उसे जीवनदान दिया है। प्रतिवर्ष ऐसे बच्चों को प्रधानमंत्री द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जाता है। इसके पीछे रंगबिरंगी वेश-भूषा में मनमोहक धुनों पर थिरकते स्कूली बच्चों के मनोहारी कार्यक्रम। वाह! यह कमल की पंखुड़ियाँ बनाता, लाल और सफेद पोशाकों में सजा-सँवरा राजस्थान के नर्तकों का दल दिखाई दे रहा है, जो झूमता-गाता "घुम्मर" की तान में मंच की ओर बढ़ रहा है। पीछे पंजाब के प्रसिद्ध लोकनृत्य "भंगड़ा" का मनोहर दृश्य है। इसके नर्तकों की मस्ती और उल्लास से सारा जन-समूह
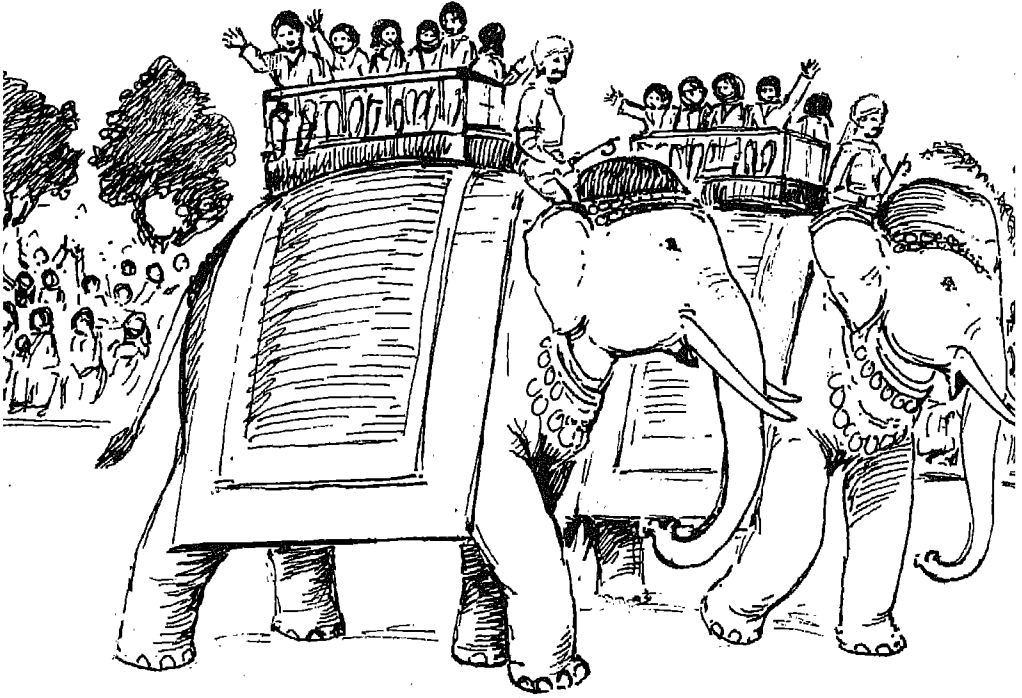
नाच उठा है। इनके पीछे उड़ीसा के मछुआरों का दल ना ता-गाता चला आ रहा है। अब दिखाई दे रही हैं—ये गुजराती कन्याएँ! ये "गरबा" नृत्य करती हुई किन्हीं अप्सराओं से कम नहीं लग रही हैं।

और अब शुरू होता है विभिन्न राज्यों की झाँकियों का सिलसिला......। सबसे आगे है—मिज़ोरम राज्य की झाँकी। घने और बीहड़ जंगल का दृश्य! पहाड़ी पेड-पौधों और झाड़ियों का झुरमुट ,बीच-बीच में घाटी और झील! इधर-उधर घूमते जंगली जानवर और तीर कमान सँभाले मिज़ो-जवान। इसके पीछे है केरल की सामूहिक नौका-दौड़ की झाँकी। और यह फूलों से बना तिरंगा ...... जिसने सबका मन मोह लिया है, गोवा राज्य का है। और अब...... गौतम बुद्ध की विशालकाय प्रतिमा सामने है। "बुद्ध के पद्-चिह्न" नाम की यह अनूठी झाँकी आंध्र प्रदेश की है।

एक के बाद एक मनोहारी झाँकियाँ सामने आ रही हैं। दर्शकों का समूह तालियाँ बजा-बजा कर उनका स्वागत कर रहा है। झाँकियों का यह सिलसिला अभी ज़ारी है। परेड की यह अंतिम झाँकी 'केंद्रीय लोक-निर्माण विभाग' की है जिसमें पृथ्वी की सभी जातियों-प्रजातियों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्रदर्शित किया गया है।

इस अंतिम झाँकी के साथ राष्ट्रपति के अंग-रक्षकों की टुकड़ी सलामी-मंच के सामने आ पहुँची है और पीछे-पीछे राष्ट्रपति की भव्य बग्घी और इसके साथ ही राष्ट्र-धुन। ज्यों ही राष्ट्र-धुन पूरी हुई, त्यों ही दर्शकों और अतिथियों के लौटने का सिलसिला शुरू हो गया। सबसे पहले महामहिम राष्ट्रपति को विदाई देते हुए प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री तथा अन्य अतिथिगण। प्रधानमंत्री को विदा करते हुए रक्षामंत्री और तीनों सेनाओं के अध्यक्ष।

अब दिनेश माथुर को भी अनुमति दीजिए । एक बार पुनः आप सबको गणतंत्र-दिवस की बधाई! आइए चलें, अब स्टूडियो वापस। जयहिंद!

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. गणतंत्र बधाई आकाशवाणी
अभिनंदन जनसमूह राजमार्ग
उत्सुक काफिला प्रधानमंत्री
ज्योति रक्षामंत्री अगवानी
सेनाध्यक्ष सलामी चढ़ाई
घुड़सवार अंगरक्षक मुस्तैदी

राष्ट्रपति	ध्वजारोहण	इंद्रधनुषी
परिचायक	गड़गड़ाहट	सराहनीय
प्रक्षेपास्त्र	प्रशंसनीय	नर्तक
मछुआरा	अप्सरा	बीहड़
झाँकी	झुरमुट	प्रतिमा

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. लीजिए, आपके इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुईं।
2. इंद्रधनुष-भारत की अनेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के विविध रंगों की एकता का प्रतीक!
3. बहुरंगी संस्कृति का परिचायक इंद्रधनुष!
4. अब नीली पोशाक वाली वायु सेना की टुकड़ी, बैंड की धुन पर कदम से कदम मिलाती हुई.....।
5. प्रधानमंत्री को विदा करते हुए रक्षामंत्री और तीनों सेनाओं के अध्यक्ष।

II. पढ़ो और समझो

क.

उत्सुक	=	बहुत इच्छुक
जन-समूह	=	व्यक्तियों का समूह
अगवानी	=	स्वागत करना
सलामी	=	विशेष अभिवादन
मुस्तैदी	=	तत्परता, चुस्ती दिखाना
ध्वजारोहण	=	झंडा फहराना
बीहड़	=	ऊबड़-खाबड़ या ऊँचा-नीचा
झुरमुट	=	पेड़-पौधों और झाड़ियों का समूह

सह-अस्तित्व	=	साथ-साथ रहना, मिलकर काम करना
काफ़िला	=	दल, जत्था, समूह
टुकड़ी	=	सैनिकों का एक दल
कलगी	=	पगड़ी पर ऊपर की ओर लगा हुआ पंख (तुर्रा)
प्रक्षेपास्त्र	=	रॉकेट, दूर तक वार करने वाला हथियार
शौर्य	=	वीरता

ख.

हेलिकॉप्टर	मार्चपास्ट	टैंक
मॉडल	किलोमीटर	बैंड
पायलट	परेड	टैंक-रोधी

ग. 1. सामने से मोटरकारों का एक काफिला दिख रहा है, उसमें भारत के प्रधानमंत्री आ रहे हैं।
मोटरकारों का जो काफ़िला सामने दिख रहा है, उसमें आ। हैं-भारत के प्रधानमंत्री।

2. अजगर की भाँति रेंगते हुए टैंकों का दस्ता अब आ गया।
अब आ गया-अजगर की भाँति रेंगते हुए टैंकों का दस्ता।

3. अब गौतम बुद्ध की विशालकाय प्रतिमा सामने है।
अब सामने है, गौतम बुद्ध की विशालकाय प्रतिमा।

III. सरंचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :

नेताजी के आते ही सब दर्शक उठ पड़े →
जैसे ही नेताजी आए वैसे ही सब दर्शक उठ पड़े।

1. अध्यक्ष के आते ही सभी सदस्य बोल पड़े।

   ....

2. भाषण के समाप्त होते ही सब श्रोता हँस पड़े।

   ....

3. अध्यापक के बाहर जाते ही सभी विद्यार्थी चिल्ला पड़े।

   ....

4. पटाखों की आवाज़ सुनते ही सब बच्चे चौंक पड़े।

   ....

(ख) निम्नलिखित परसर्गों में से सही परसर्ग चुनकर वाक्य पूरे करोः

का, पर, से, में, को, के लिए, की

1. मैं सुबह से आप.........इंतजार कर रहा था।
2. हमें ईश्वर.........विश्वास करना चाहिए।
3. बच्चों.........गुस्सा नहीं करना चाहिए।
4. हमें कमजोर लोगों.........मदद करनी चाहिए।
5. पशु-पक्षियों.........प्यार करना सीखो।
6. कुछ लोग पेड़ों.........पूजा करते हैं।
7. हमें अपने दुश्मन.........भी नफरत नहीं करनी चाहिए।
8. क्या तुम इस लड़के.........दोस्ती करोगे?

(ग)

उदाहरण :

यहाँ सब प्रकार का सामान बनता है

→ यहाँ सब प्रकार का सामान बनाया जाता है।

1. यहाँ गणेश की मूर्तियाँ बनती हैं।

   ....

2. वहाँ लकड़ी के खिलौने बनते हैं।

....

3. स्कूल में शनिवार को फ़िल्म दिखाते हैं।

....

4. दक्षिण में चावल अधिक खाते हैं।

....

घ. उदाहरण के अनुसार वाक्य पूरे करो :

> **उदाहरण :**
> बादल गरज रहे हैं, बारिश........(होना)
> → बारिश होने वाली है।

क. गाड़ी सीटी दे रही है, गाड़ी.........(छूटना)
ख. दर्शक बैठ चुके हैं, फिल्म..........(शुरू होना)
ग. कार्यक्रम समाप्त हो गया है, मिठाई.........(बँटना)
घ. परीक्षा खत्म हो चुकी है, छुट्टियाँ.........(होना)

IV. पढ़ो और बताओ

1. मोटरकारों का काफ़िला किस ओर बढ़ रहा था?
2. राष्ट्रपति का स्वागत किस-किस ने किया?
3. राष्ट्रपति के ध्वजारोहण करते ही क्या हुआ?
4. "इंद्रधनुष" से क्या अभिप्राय है?
5. भारतीय नौ-सेना के जवान क्या करते हैं?
6. फ़ैगोट प्रक्षेपास्त्र का क्या काम है?
7. बहादुर बच्चों को हाथी पर क्यों बैठाया गया है?
8. मिज़ोरम की झाँकी की क्या विशेषताएँ हैं?

9. 'केंद्रीय लोक-निर्माण-विभाग' की झाँकी में क्या दिखाया गया है?
10. गोवा राज्य की झाँकी ने सबका मन क्यों मोह लिया?

V. पढ़ो और लिखो

आकाश में उड़ते हुए हेलिकॉप्टर फूलों की वर्षा कर रहे हैं। इन फूलों की वर्षा ने सारे राजपथ को इंद्रधनुषी बना दिया है। इंद्रधनुष भारत की अनेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के विविध रंगों की एकता का प्रतीक! बहुरंगी संस्कृति का परिचायक इंद्रधनुष!

VI. योग्यता-विस्तार

तुमने टी॰वी॰ पर गणतंत्र-दिवस का समारोह देखा होगा; उसे अपने मित्रों को सुनाओ।

●

पाठ 20

बाल-सभा

संरचना-संकेत

- ने लग (खाने लगा) लगना - ना चाहिए

अध्यक्ष : बाल-सभा की इस आम बैठक में आप सबका स्वागत है। आज की बैठक में कई विषयों को कार्य-सूची में शामिल किया गया है। कार्य-सूची आप सबको मिल चुकी है। मुझे आशा है कि आप इस बैठक में हर विषय पर विद्यार्थियों के हितों का ध्यान रखेंगे। मैं कार्य-सूची एक बार फिर पढ़े देता हूँ :

1. पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि
2. विद्यालय में खेलों की उचित व्यवस्था
3. छुट्टियों में गृह-कार्य की अनिवार्यता
4. अन्य विषय (अध्यक्ष महोदय की अनुमति से)

मैं बाल-सभा के मंत्री श्री रमेश कुमार से अनुरोध करता हूँ कि वे पिछली बैठक का कार्यवृत्त अनुमोदन के लिए प्रस्तुत करें—श्री रमेश कुमार''''

रमेश कुमार : (कार्यवृत्त पढ़ते हैं) "आज दिनांक 30 अगस्त 1992 को श्री विश्वनाथन् की अध्यक्षता में तीन बजे दोपहर के बाद बाल-सभा की आम बैठक हुई। इस बैठक में प्रधानाचार्य मुख्य अतिथि थे। सबसे पहले बाल-सभा के सलाहकार श्री मोहनदेव ने कार्यकारिणी के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का परिचय प्रधानाचार्य से कराया। प्रधानाचार्य ने पदाधिकारियों को शपथ दिलाई।

प्रधानाचार्य ने विद्यालय में विद्यार्थियों की समस्याओं पर खुलकर विचार करने के लिए बाल-सभा का महत्त्व समझाया। उन्होंने कहा कि बाल-सभा लोकतंत्र की प्रयोगशाला होती है। विद्यार्थी इससे बहुत-कुछ सीख सकते हैं। बढ़िया बात यह होगी कि हम अपनी समस्याओं को बातचीत से हल करें। हड़ताल या तोड़-फोड़ के रास्ते को न अपनाएँ। उन्होंने आशीर्वाद दिया कि ईश्वर हम सब को सोचने और सही निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करे।"

अध्यक्ष श्री विश्वनाथन् ने अध्यापक-सलाहकार श्री मोहनदेव के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि श्री मोहनदेव ने कार्यकारिणी के चुनाव सुचारु रूप से संपन्न कराए। वे हमें बराबर उचित सलाह देते रहते हैं। हम हृदय से उनके आभारी हैं। अध्यक्ष महोदय ने प्रधानाचार्य को धन्यवाद दिया और कहा कि प्रधानाचार्य का संदेश और आशीर्वाद पग-पग पर हमारा मार्ग-दर्शन करेगा। उन्होंने प्रधानाचार्य को विश्वास दिलाया कि बाल-सभा ऐसा कोई कार्य नहीं करेगी जिससे विद्यालय की गरिमा को ठेस पहुँचे। अंत में अध्यक्ष महोदय

के प्रति धन्यवाद ज्ञापन कर बाल-सभा समाप्त हुई।

अध्यक्ष : पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर क्या किसी को कोई आपत्ति है?

मोहित रंजन : अध्यक्ष महोदय, कार्यवाही का विवरण सही है।

अध्यक्ष : लगता है, किसी को कोई आपत्ति नहीं है। (कुछ क्षण रुककर) मैं कार्यवृत्त की पुष्टि करता हूँ। (मंत्री से कार्यवृत्त लेकर उस पर यथास्थान हस्ताक्षर करते हैं)

अध्यक्ष : कार्य-सूची का दूसरा विषय है - 'विद्यालय में खेलों की उचित व्यवस्था'—इस विषय पर सदस्यों के विचार आमंत्रित हैं.।

एक सदस्य : विद्यालय में खेलों का बहुत घटिया प्रबंध है।

दूसरा सदस्य : घटिया प्रबंध ? जब प्रबंध ही नहीं है तो क्या घटिया और क्या बढ़िया!

तीसरा सदस्य : यह कहिए कि "प्रबंध किया जाना चाहिए।"

सभी सदस्य : हाँ-हाँ। खेल का प्रबंध किया जाना चाहिए।

अध्यक्ष : कृपया शांत हो जाएँ। बैठक में अनुशासन रखिए। अध्यक्ष की अनुमति के बिना कोई सदस्य नहीं बोलेगा। (बैठक में शांति छा जाती है) शांति के लिए धन्यवाद। मेरा अनुरोध है कि सबसे पहले श्री सुंदरम् प्रस्ताव रखें।

सुंदरम् : अध्यक्ष महोदय, विद्यालय विद्यार्थियों के बौद्धिक और शारीरिक विकास का केंद्र होता है। कक्षाओं में बौद्धिक विकास के काफ़ी अवसर मिलते हैं किंतु शारीरिक विकास के नाम पर कभी-कभी केवल पी॰टी॰ ही होती है। विद्यालय के

पास बहुत बड़ा खाली स्थान पड़ा है। वहाँ बोर्ड भी लगा है - ''खेल का मैदान''। लेकिन वहाँ न मैदान है, न खेल। लगता है, इस ओर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। मेरा प्रस्ताव है कि भूमि को समतल करवाया जाए और उस पर कबड्डी, फुटबाल, हॉकी, बॉलीबाल आदि खेलों की व्यवस्था की जाए। इन खेलों का सामान खरीदा जाए। खेलों की देख-रेख के लिए एक पी॰टी॰आई॰ मैदान में रहे। हम प्रधानाचार्य को यह
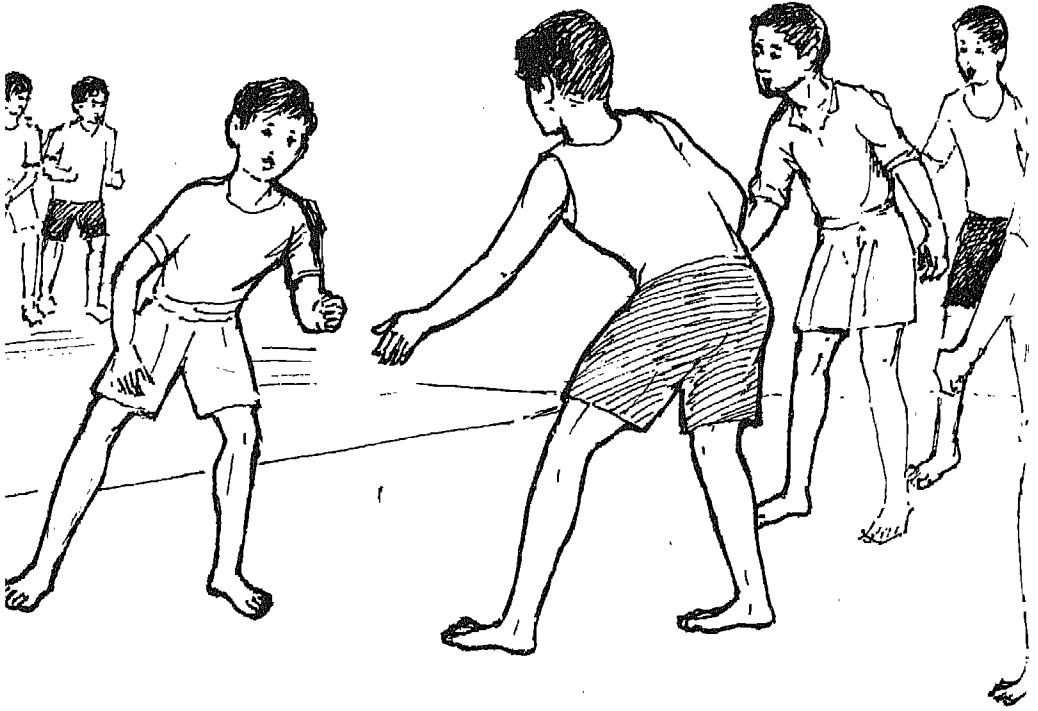
विश्वास दिलाते हैं कि विद्यार्थी स्वयं अपने श्रमदान से उस भूमि को समतल बना देंगे।

अध्यक्ष : आपने प्रस्ताव के पक्ष में श्री सुंदरम् के विचार सुने। यदि कोई अन्य सदस्य विरोध में बोलना चाहे तो अपना हाथ

खड़ा करें। (कुमारी लवांग हाथ खड़ा करती हैं) ठीक है, कुमारी लवांग, आप अपनी बात कहें।

कुमारी लवांग : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे अपनी बात कहने का अवसर दिया। मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूँ। हम विद्यालय में विद्या प्राप्त करने के लिए आते हैं, खेल-कूद के लिए नहीं। परीक्षा की दृष्टि से खेल-कूद का कोई महत्त्व नहीं है। उसमें बौद्धिक विकास की जाँच होती है। भिन्न-भिन्न विषयों की परीक्षा में सफल होना अनिवार्य है। कहा भी जाता है- "पढ़ोगे, लिखोगे, बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब।" अध्यक्ष महोदय, मैं सभी से अनुरोध करूँगी कि वह इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दें। धन्यवाद।

अध्यक्ष : प्रस्ताव के पक्ष-विपक्ष में आए विचारों को आप सभी ने ध्यान से सुना। मैं चाहता हूँ कि यह सभा इस विषय में अपना निर्णय दे। जो सदस्य प्रस्ताव के पक्ष में हैं, वे अपने हाथ उठाएँ। (हाथ खड़े होते हैं, अध्यक्ष गिनते हैं) एक, दो, तीन....पचास। अब जो विपक्ष में हैं वे हाथ खड़ा करें। (हाथ उठते हैं, अध्यक्ष गिनते हैं) एक, दो, तीन....पंद्रह। प्रस्ताव के पक्ष में पचास मत आए हैं और विपक्ष में केवल पंद्रह। 'खेल-प्रस्ताव' बहुमत से पारित हुआ।

(सभी सदस्य तालियाँ बजाकर हर्ष प्रकट करते हैं।)

अध्यक्ष : अब तीसरा विषय है - छुट्टियों में गृहकार्य की अनिवार्यता। प्रस्तावक श्री डिसूज़ा इस विषय में अपने विचार प्रकट करें।

डिसूज़ा : अध्यक्ष महोदय, गृहकार्य से विद्यार्थियों को विषय सीखने-समझने

में सहायता मिलती है। छुट्टियों में गृहकार्य रहता है तो बच्चों को बेकार खेल-कूद में समय नहीं बिताना पड़ता। हमारे देश में छुट्टियाँ होती भी बहुत हैं। गृहकार्य से छुटकारा पाने की बात विद्यार्थियों को शोभा नहीं देती। आज हम निश्चय करें कि गृहकार्य उपयोगी है और छुट्टियों में गृहकार्य अनिवार्य होना चाहिए। धन्यवाद!

अध्यक्ष : क्या कोई इसके विपक्ष में कुछ बोलना चाहेगा? (कुछ हाथ उठते हैं। अच्छा, कहिए कुमारी पुष्पा जी।

कु॰ पुष्पा : अध्यक्ष महोदय जी, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूँ। छुट्टियों के दिन हँसने-हँसाने के होते हैं, छुट्टी मनाने के होते हैं। आज़ादी से खेलने-कूदने के होते हैं। लगता है कि हम छुट्टियों का महत्त्व ही नहीं समझते। हम घर पर माँ-बाप के काम में हाथ बँटाते हैं। घर-गृहस्थी के कुछ काम सीखते हैं। इन सब कार्यों से भी विद्या-लाभ होता है। अगर छुट्टियों में भी गृहकार्य करना है तो छुट्टियाँ समाप्त ही कर दीजिए। इसलिए हम सब मिलकर निश्चय करें कि इस प्रस्ताव को पारित न किया जाए। धन्यवाद।

अध्यक्ष : जो इस प्रस्ताव के पक्ष में हों, वे हाथ खड़ा करें। (हाथ उठते हैं, अध्यक्ष गिनते हैं) एक, दो,..... पाँच, पचास। (विपक्ष में हाथ खड़े कीजिए। कुछ सदस्यों ने इस प्रस्ताव के विपक्ष में मत दिया है। (हँसते हुए) विपक्ष में मत गिनने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार हुआ। (दोहराते हैं) छुट्टियों में गृहकार्य की अनिवार्यता वाला प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

अध्यक्ष : अन्य कोई प्रस्ताव?

सदस्यगण : (समवेत स्वर में) कोई प्रस्ताव नहीं।

मंत्री : अब मैं बाल-सभा की ओर से अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देता हूँ। आपने आज की कार्यवाही का भली-भाँति संचालन किया। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके सहयोग से ही यह बैठक सफल हुई। इसके साथ ही मैं अध्यक्ष की अनुमति से सभा की कार्यवाही की समाप्ति की घोषणा करता हूँ। धन्यवाद।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

अध्यक्ष	मंत्री	कार्यसूची
कार्यवृत्त	विद्यार्थी	गृहकार्य
कार्यकारिणी	कार्यवाही	पदाधिकारी
लोकतंत्र	अध्यक्षता	हड़ताल
आंदोलन	नवनिर्वाचित	आशीर्वचन
आपत्ति	प्रयोगशाला	संशोधन
अनुशासन	मार्गदर्शन	बौद्धिक
श्रमदान	विवरण	पुष्टि
शारीरिक	प्रस्तुत	मुख्य अतिथि
खिलवाड़		

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. घटिया प्रबंध! जब प्रबंध ही नहीं है तो क्या घटिया और क्या बढ़िया।
2. हाँ-हाँ। खेल चाहिए, चाहिए।
3. क्या कोई इसके विपक्ष में बोलना चाहेगा?
4. कृपया शांत हो जाएँ।

II. पढ़ो और समझो

क.

कार्यसूची	=	सभा में विचार किए जाने वाले विषयों की सूची।
कार्यवृत्त	=	सभा की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण।
कार्यवाही	=	सभा में हुए विचार-विमर्श आदि का विस्तृत विवरण।
नवनिर्वाचित	=	नए चुने हुए।
श्रमदान	=	बिना पैसा लिए कार्य करना।
समतल	=	जिसकी सतह बराबर हो।
पुष्टि	=	समर्थन, अनुमोदन
प्रस्तुत करना	=	पेश करना,
आभार	=	एहसान
प्रस्ताव	=	सभा के सामने विचार के लिए रखी हुई बात
अनुमति	=	इजाज़त
संशोधन	=	सुधार
गरिमा	=	गौरव
धन्यवाद ज्ञापन	=	धन्यवाद देना।
सुचारु रूप से	=	ठीक तरह से

संपन्न = पूर्ण, समाप्त

समवेत स्वर में = मिलकर एक आवाज़ में

ख. अनिवार्य → अनिवार्यता

अध्यक्ष → अध्यक्षता

आवश्यक → आवश्यकता

ग. बुद्धि → बौद्धिक

शरीर → शारीरिक

हृदय → हार्दिक

आभार → आभारी

घ. बढ़िया × घटिया

स्वीकार × अस्वीकार

पक्ष × विपक्ष

समर्थन × विरोध

हित × अहित, अनहित

उचित × अनुचित

बहुमत × अल्पमत

आपत्ति × सहमति

आशा × निराशा

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाओ :

> **उदाहरण :** ऐसा दिखाई देता है कि मोहन नहीं आएगा →
> लगता है कि मोहन नहीं आएगा।

1. ऐसा दिखाई देता है कि कोई बाज़ार नहीं जाएगा।

....

2. ऐसा दिखाई देता है कि इस ओर कोई ध्यान नहीं देगा।

....

3. ऐसा दिखाई देता है कि आज वर्षा नहीं होगी।

....

4. ऐसा दिखाई देता है कि कमला स्कूल नहीं जाएगी।

....

ख. **उदाहरण :** मोहन रोज़ स्कूल **जाता है**।
→ मोहन **को** रोज़ स्कूल **जाना चाहिए**।

1. सुषमा खाना खाती है।

....

2. हम रोज़ सुबह दो मील घूमते हैं।

....

3. पिताजी दिन में तीन बार दवा खाते हैं।

....

4. रमेश रोज़ खेलता है।

....

ग. **उदाहरण :** **उसने** स्कूल जाना **शुरू किया** है
→ **वह** स्कूल जाने **लगा** है।

1. रमेश ने कुछ-कुछ हिंदी पढ़ना शुरू किया है।

....

2. बच्चे ने अब रोटी खाना शुरू किया है।

....

3. सीता ने पिछले शनिवार से काम करना शुरू किया है।

....

4. लड़के ने अब मैदान में खेलना शुरू किया है।

....

घ. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण : डाक्टर मरीज़ों का मुफ़्त इलाज **करते है**   → मरीज़ों का मुफ़्त इलाज **किया जाता** है।

1. मिस्त्री कारों की मरम्मत करते हैं।

....

2. सेठ जी ब्राह्मणों का सम्मान करते हैं

....

3. हम दिसंबर में क्रिसमस मनाते हैं।

....

4. लोग बंगाल में चावल खाते हैं।

....

IV. पढ़ो और बताओ

1. पिछली बैठक का कार्यवृत्त किसने प्रस्तुत किया?
2. प्रधानाचार्य ने बाल-सभा का क्या महत्व समझाया?
3. अध्यक्ष ने प्रधानाचार्य को क्या विश्वास दिलाया?
4. कुमारी लवांग ने खेलों का विरोध क्यों किया?
5. डिसूज़ा ने गृहकार्य के पक्ष में क्या कहा?

V. पढ़ो और लिखो

क. अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूँ। छुट्टियों के दिन हँसने-हँसाने के होते हैं, छुट्टी मनाने के होते हैं, आज़ादी से खेलने-घूमने के होते हैं। इन सब कार्यों से भी विद्या-लाभ होता है। हम घर पर माँ-बाप के काम में हाथ बँटाते हैं। घर-गृहस्थी के कुछ काम सीखते हैं।

ख. दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो :
नवनिर्वाचित, कार्यसूची, बातचीत, कार्यवृत्त, लोकतंत्र

1. आज की बैठक में कई विषयों को.............. में शामिल किया गया है।
2. श्री मोहनदेव ने कार्यकारिणी के.............. पदाधिकारियों का परिचय कराया।
3. हम समस्याओं को.............. से हल करें।
4. पिछली बैठक के.............. पर किसी को आपत्ति नहीं है।

VI. योग्यता-विस्तार

बाल-सभा की इस बैठक का वर्णन अपने शब्दों में करो।

पाठ 21

नीति के दोहे
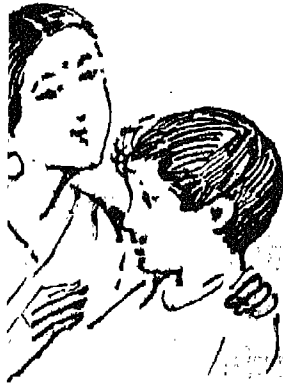
मुखिया मुख सौ चाहिए, खानपान को एक।
पालै पोसै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक॥

आवत ही हरसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसै मेह॥

तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है, तज दे वचन कठोर॥

या दुनिया में आइके, कर लीजै दो काम।
देबे को टुकड़ो भलो, लेबे को हरि नाम।।

सभी सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपक देत बुझाय।।

करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रस्सी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।।

अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय।
मलयागिरि की भीलनी, चंदन देत जराय।।

रहिमन वे नर-मर चुके, जे कहुँ माँगन जाहिं।
उनते पहले वे मरे, जिन मुख निकसत नाहिं।।

रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

मुखिया	खानपान	विवेक
वचन	सहायक	पवन
अभ्यास	जड़मति	अरुचि
अनादर	परिचय	अनहित

II. पढ़ो और समझो

क.

मुखिया	=	प्रधान, मुख्य व्यक्ति
सकल	=	सारा, समस्त
नैनन	=	आँखों में
सनेह	=	स्नेह, प्यार
बसीकरन मंत्र	=	वशीकरण मंत्र; वह मंत्र, जिसके द्वारा किसी को अपने वश में किया जाता है।
तज देना	=	त्याग देना, छोड़ देना
जड़मति	=	मूर्ख
सुजान	=	ज्ञानी, विद्वान
विपदा	=	विपत्ति, संकट
हित	=	भला चाहने वाला, हितैषी, भलाई
अनहित	=	बुराई

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

1. ...., सुख उपजत चहुँ ओर ।
2. देबे को टुकड़ो भलो.. ।

3. पवन जगावत आग को .... ।
4. .... जड़मति होत सुजान ।

IV. पढ़ो और बताओ

1. मुखिया को मुख जैसा क्यों होना चाहिए?
2. किस तरह के लोगों के यहाँ नहीं जाना चाहिए?
3. दूसरों को वश में करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है?
4. दुनिया में दो महत्वपूर्ण काम कौन-से हैं, जो हर किसी को करना चाहिए?
5. "सभी बलवान की सहायता करते हैं, दुर्बल की सहायता कोई नहीं"–इस बात को सिद्ध करने के लिए कवि ने क्या उदाहरण दिया है?
6. उन दोहों को छाँटिए जिनमें निम्नलिखित बातें आई हैं :
   क. अति परिचय से अनादर और अरुचि हो जाती है।
   ख. माँगने वाले लोग मृतक के समान होते हैं।
   ग. थोड़े दिन की विपत्ति भी अच्छी है।

V. योग्यता-विस्तार

रहीम, तुलसी, कबीर और बिहारी के दोहों को लिखकर अपनी कक्षा में टाँगो।

पाठ 22

आप से मिलिए

संरचना-संकेत

– इए (बैठिए)
– या होगा (गया होगा)
मेरा/अपना/उसका

यासमीनः सलाम चचाजान! देखिए, मैंने अपना वादा पूरा कर दिया। आज मैं अपने साथ अपनी अम्मी व अब्बा को भी लेकर आई हूँ।

सुधीरः नमस्कार भाभीजी, नमस्ते भाई साहब, आपका स्वागत है। आज का दिन तो बहुत ही शुभ है। हमारी कुटिया को आपने पवित्र कर दिया। आइए, पधारिए। अरे, सुनती हो! देखो तो, कौन आए हैं हमारे यहाँ?

अहमदः आदाब अर्ज़ माथुर साहब। यासमीन तो आपकी मुरीद है। हमेशा आप लोगों की ही प्रशंसा करती रहती है। इसलिए आज हम आपसे मुलाकात करने का पक्का इरादा करके घर से निकले थे।

सुधीरः यह तो हमारा सौभाग्य है कि आप लोग हमारे घर पधारे। यासमीन बिटिया बड़ी होनहार है। भगवान करे, आपका नाम ऊँचा करे।

नंदिनीः नमस्ते बहिन जी, नमस्ते भाई साहब। अरे! आप लोग खड़े क्यों हैं? बैठिए न! बहुत दिनों से इच्छा थी आप लोगों के दर्शन करने की।

रज़ियाः नमस्ते जी। हमने तो आपकी बड़ी तारीफ़ सुनी है यासमीन के मुँह से। अरे सलीम! तुम बाहर कैसे रुक गए? आओ, अंदर आओ। आदाब करो। आप हैं डाक्टर माथुर, यासमीन के प्रोफेसर। माथुर साहब, यह मेरा छोटा भाई है, सलीम।

सलीमः आदाब अर्ज़ प्रोफेसर साहब। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

सुधीरः नमस्ते सलीम भाई। मुझे भी आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। क्या आप भी यहीं रहते हैं?

सलीमः जी नहीं, मैं तो बैंगलूर में रहता हूँ। कुछ काम से यहाँ आया था। यासमीन से आपकी किताबों के बारे में बहुत-कुछ सुना है। बड़ी तमन्ना थी आपसे मिलने की।

सुधीरः किसी की तारीफ करना तो कोई यासमीन से सीखे।

नंदिनीः प्रोफेसर साहब, आप सिर्फ बतियाते ही रहेंगे या इनकी कुछ आवभगत भी करने देंगे?

सुधीरः क्षमा कीजिए, मैं तो भूल ही गया था। आइए, आप लोग अंदर चलिए और कुछ जलपान कीजिए। देखें हमारी श्रीमती जी ने कौन-से व्यंजन बनाए हैं?

अहमदः भाभी जी की खातिरदारी तो मशहूर है। कुछ-न-कुछ खास चीज़ जरूर बनायी होगी।

नंदिनीः बैठिए, सलीम भाई आप भी बैठिए।

सुधीरः अरे यासमीन कहाँ गायब हो गई?

यासमीनः मैं यहाँ हूँ चाचाजी। रश्मि नहीं दिखाई दे रही है? पता नहीं कहे
चली गई? शायद लाइब्रेरी गई होगी।

नंदिनीः तुम यहाँ आओ और चाय पिओ। वह आ ही रही होगी।

यासमीनः रश्मि को आने दीजिए चाचीजी! हम दोनों साथ-साथ ही चा
पिएँगे।

नंदिनीः अरे भई, हमारे साथ भी एक प्याला हो जाए। रश्मि के सा
फिर पी लेना। बहिनजी आप तो कुछ ले ही नहीं रहीं। ये पनी
के पकोड़े लीजिए न!

रज़ियाः क्या कहने पकौड़ों के! बहुत ही ज़ायकेदार हैं।

सुधीरः आप लोग बर्फी भी खाइए। हमारी श्रीमती जी को मिठाइ
बनाने का बहुत शौक है।

अहमदः अच्छा तो यही है आपकी सेहत का राज़। भई, क्या किस्मत पा
है आपने!

सुधीरः सब ईश्वर की कृपा है।

रज़ियाः यासमीन बेटे, ज़रा देखो, बाहर कौन है? लगता है तुम्हारी सहेल
आ गई।

यासमीनः अच्छा तो तुम हो। अरे रश्मि, हमें दावत देकर खुद गायब ह
गई? और इन सबको कहाँ से पकड़ लाई?

रश्मिः इन्हीं लोगों की वजह से तो मुझे देर हो गई। अब आओ
अंदर। तुम्हारा सबसे परिचय करा दूँ। चाची जी नमस्ते, मैं आ
लोगों को अपनी सहेलियों से मिलवाती हूँ—यह रागिनी है
कलकत्ता की रहने वाली है। यह सुखबीर, पंजाब से है और य
जूली, केरल से आई है। हम सब एक ही क्लास में पढ़ते हैं।

ये हैं यासमीन की अम्मी और अब्बा, ये मेरी माँ हैं और ये.......

यासमीनः ये मेरे मामाजी हैं।

सुखबीर, रागिनी और जूली : आप सबको हमारा प्रणाम।

नंदिनीः भगवान तुम सबको सदा सुखी रखे!

सुधीरः भाभी जी, आप लोगों के कदम पड़ते ही हमारे घर में बहार आ गई। आओ बच्चो, नाश्ता कर लो।

जूलीः धन्यवाद आंटी, हम सब तो नाश्ता करके आए हैं।

नंदिनीः तुम लोगों को देखकर तो ऐसा नहीं लगता। आजकल की लड़कियाँ तो कुछ खाती-पीती ही नहीं। जब तक स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा, पढ़ाई-लिखाई कैसे करोगी? चलो, प्लेट उठाओ। आओ, मैं खिलाती हूँ तुम सबको।

रागिनीः आंटी आप क्यों कष्ट कर रही हैं, हम अपने-आप ले लेंगे।

नंदिनीः बच्चों को खिलाने में कष्ट कैसा? यह तो खुशी की बात है।

रज़ियाः तुम लोग तकल्लुफ़ क्यों कर रही हो? ऐसे पकवान तुम लोगों को होस्टल में कहाँ नसीब होते होंगे।

सुखबीरः मैं तो खाने-पीने में कोई संकोच नहीं करती। अगर कहीं स्वादिष्ट भोजन मिल जाता है तो मेरा हाथ रुकता ही नहीं।

अहमदः खाने में तकल्लुफ क्यों? मैंने तो इतना खा लिया है कि अब उठना भी मुश्किल है।

सुधीरः आपका ही घर है। यहीं आराम कर लीजिए।

अहमदः नहीं ज़नाब, जाना तो होगा ही। कई छोटे-मोटे काम निबटाने हैं। अच्छा, भाभी जी मेहमान-नवाज़ी का शुक्रिया। किसी दिन आप

लोग भी हमारे ग़रीबखाने पर तशरीफ़ ले आइए। अच्छा, प्रोफेसर साहब, अब हम इजाज़त चाहेंगे।

सुधीरः अच्छा, फिर दर्शन दीजिएगा। हम लोग भी समय मिलते ही आपकी सेवा में हाज़िर होंगे। नमस्कार।

रज़ियाः बेटी यासमीन, तुम भी अपनी सहेलियों को घर आने की दावत दो।

रागिनीः आंटी, उसकी ज़रूरत नहीं है। हम अपने-आप आ जाएँगे। नमस्ते।

नंदिनीः नमस्ते।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

स्वागत	आदाब अर्ज़	प्रशंसा
सौभाग्य	प्रोफेसर	प्रसन्नता
तारीफ़	आवभगत	ख़ातिरदारी
लाइब्रेरी	ज़ायकेदार	मिठाइयाँ
किस्मत	धन्यवाद	तकल्लुफ़
शुक्रिया	स्वादिष्ट	मुश्किल
गरीबख़ाना	निबटना	इजाज़त

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ोः

1. आइए, पधारिए।
2. अरे, सुनती हो! देखो तो कौन आए हैं हमारे यहाँ?

3. अरे, आप लोग खड़े क्यों हैं? बैठिए न!
4. हमने तो इतनी तारीफ़ सुनी है कि क्या कहें!
5. अरे! सलीम! तुम बाहर कैसे रुक गए?
6. क्या आप भी यहीं रहते हैं?
7. अरे रश्मि, मुझे दावत देकर खुद कहाँ गायब हो गई थीं?
8. खाने में तकल्लुफ़ कैसी?
9. अच्छा, तो तुम हो!

II. **पढ़ो और समझो**

क.

अब्बा = पिता
मुरीद = चेला, अनुयायी, भक्त
मुलाकात = भेंट
तकल्लुफ़ = शिष्टाचार, दिखावा
बतियाना = बातें करना
ज़ायकेदार = स्वादिष्ट
नसीब = किस्मत, भाग्य
इरादा = निश्चय
सौभाग्य = अच्छी किस्मत
तारीफ़ = प्रशंसा, बड़ाई

ख.

आदाब अर्ज़	चचाजान	भाभीजी
नमस्कार	अम्मी	भाईसाहब
सलाम	अब्बा	प्रोफेसर साहब
नमस्ते	सलीम भाई	बहिनजी

ग. 1. सलाम चचाजान।
नमस्ते चाचाजी।

2. बस आज आ ही धमके।
   बस आज अचानक ही आ गए।
3. बड़ी तमन्ना थी आपसे मिलने की।
   आपसे मिलने की बहुत इच्छा थी।
4. भगवान तुम सबको सदा सुखी रखे।
   भगवान करे, तुम सब सुखी रहो।
5. किसी दिन आप हमारे गरीबखाने पर भी तशरीफ़ लाइए।
   किसी दिन आप भी हमारे घर पधारिए।

घ.

(1) रमेश को	अपना	काम पसंद है।	(रमेश का काम)
(2) मुझको			(मेरा काम)
(3) आपको			(आपका काम)
(4) उसको			(उसका काम)
(5) उनको			(उनका काम)
(6) हमको			(हमारा काम)
(7) तुमको			(तुम्हारा काम)
(8) तुझको, तुझे			(तेरा काम)

III. संरचना-अभ्यास

(क) उदाहरण के अनुसार क्रिया-रूप का प्रयोग करो :

उदाहरणः आइए - (पधारना)
आइए, पधारिए।

1. आइए........................ (बैठना)
2. लीजिए........................ (खाना)
3. लीजिए........................ (पीना)

4. आइए........................ (चलना)
5. सुनिए........................ (देखना)

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्यों को बदलकर लिखो :

उदाहरण : हो सकता है, वह लाइब्रेरी गई हो → वह लाइब्रेरी गई होगी।

1. हो सकता है, मोहन सो रहा हो →
   ....
2. हो सकता है, मैच चल रहा हो →
   ....
3. हो सकता है, गीता आ रही हो →
   ....
4. हो सकता है, शिलांग में पानी बरस रहा हो →
   ....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलोः

उदाहरणः तुम कल मेरे घर आना → आप कल मेरे घर आइएगा

1. तुम शाम को बाजार जाना →
   ....
2. तुम कल अपनी किताब ज़रूर लाना →
   ....
3. तुम वहाँ पहुँचकर पत्र लिखना →
   ....
4. सोमवार को तुम अपना लेख दे देना →
   ....

IV. पढ़ो और बताओ

क. उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य पूरे करो :

दर्शन, शुभ, सौभाग्य, प्रसन्नता, मेहमाननवाज़ी, इजाज़त

1. यह हमारा............है कि आप आए।
2. बहुत दिनों से आपके..........की इच्छा थी।
3. आपसे मिलकर बहुत..........हुई।
4. आज का दिन तो बहुत............है।
5. आपकी............का शुक्रिया।

(ख) नीचे दिए गए वाक्यों को तुम और किस तरह से कह सकते हो? उदाहरण के अनुसार रेखांकित शब्दों को बदलो :

उदाहरण :	आपका अतिथि-सत्कार तो सबको पता ही है →
	← आपकी मेहमाननवाज़ी तो मशहूर है।

1. आपसे मिलकर बहुत **प्रसन्नता** हुई।

   ....

2. मैंने आपकी बहुत **तारीफ़** सुनी है।

   ....

3. आपकी बिटिया बहुत **होशियार** है।

   ....

4. पकौड़े तो बहुत **ज़ायकेदार** हैं।

   ....

5. आप हमारे गरीबख़ाने पर **ज़रूर** तशरीफ लाइए।

   ....

V. पढ़ो और लिखो

नमस्ते जी। हमने तो आपकी इतनी तारीफ़ यासमीन के मुँह से सुनी है कि क्या कहें। बस आज यहाँ आ धमके। अरे सलीम! तुम बाहर कैसे रुक गए? आओ, अंदर आओ। इनसे मिलो, आप हैं डॉक्टर माथुर, यासमीन के प्रोफेसर। और माथुर साहब, यह मेरा छोटा भाई है, सलीम।

VI. योग्यता-विस्तार

घर पर मित्र के आने पर तुम उसका स्वागत कैसे करोगे? कक्षा में चर्चा करो।

पाठ 23

अंतिम प्रयास

संरचना-संकेत

या...................या
यदि.....................सो
(चुक) (आज्ञार्थक) (जाओ)
चाहिए– नहीं तो..........
जितना– उतना

पांडव और कौरव युद्ध की तैयारी में लगे थे। दोनों पक्षों से हाथी, घोड़े, रथ और पैदल अपने-अपने मोर्चों की ओर बढ़ रहे थे। किसी भी समय युद्ध छिड़ सकता था। पांडव-शिविर में युधिष्ठिर मौन बैठे थे।

श्रीकृष्ण पांडवों के शिविर में पहुँचे। युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण का अभिवादन किया और कृष्ण से बोले–"युद्ध की तैयारियाँ पूरी हो चुकी हैं। अगर युद्ध हुआ तो भयंकर नर-संहार होगा। कोई उपाय कीजिए नहीं तो कोई भी जीवित नहीं बचेगा।"

श्रीकृष्ण ने कहा–"ठीक कहते हो, धर्मराज युधिष्ठिर! यदि यह लड़ाई नहीं टली तो बहुत विनाश होगा।" उसी समय भीम बीच में बोल पड़े–"भैया, संग्राम को मत रोको। यदि संग्राम नहीं हुआ तो दुर्योधन को दंड कैसे मिलेगा? उस दुष्ट को दंड तो मिलना ही चाहिए।"

युधिष्ठिर ने भीम को समझाया–"युद्ध की आग में दोनों पक्षों के लोग मरते हैं। युद्ध अनिवार्य नहीं है। इस विषय में श्रीकृष्ण को सोचने दो। तुम तो अपना गदा-अभ्यास करते रहो।"

भीम बोले, "गदा-अभ्यास तो बहुत हो चुका। यदि आज्ञा हो तो मैं भी श्रीकृष्ण का विचार जान लूँ।" युधिष्ठिर ने उन्हें आज्ञा दे दी। अब उन्होंने श्रीकृष्ण से पुनः प्रश्न किया–"क्या इस युद्ध का रुकना संभव है?"

श्रीकृष्ण बोले–"धर्मराज, सब कुछ संभव है।"
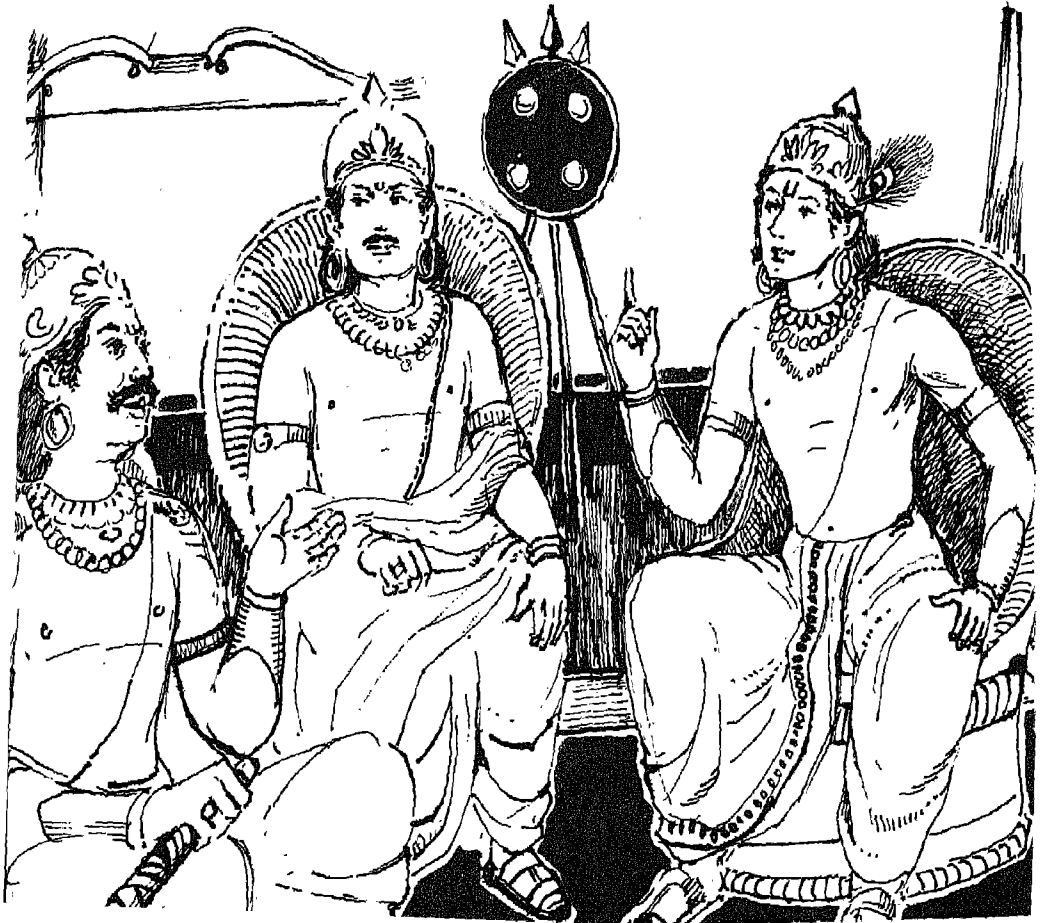
युधिष्ठिर ने कहा—"मैं युद्ध से तो भयभीत नहीं हूँ, युद्ध के परिणाम से चिंतित हूँ। यदि बातचीत से समस्या हल हो जाए तो रक्तपात क्यों हो?"

श्रीकृष्ण बोले—"धर्मराज, मेरी एक शांति-योजना है। मैं दुर्योधन के पास जाता हूँ। युद्ध रोकने का यह मेरा अंतिम प्रयास होगा। सुनो, मेरी योजना।"

युधिष्ठिर बीच में ही बोल पड़े—"योजना सुनने की आवश्यकता ही नहीं है। आपने जो कुछ सोचा होगा, ठीक ही सोचा होगा। विलंब न कीजिए। हम आपके शांति-प्रयास को अवश्य स्वीकार करेंगे।" श्रीकृष्ण ने कहा—"बहुत अच्छा, मैं शांतिदूत बन कर एक कोशिश और किए लेता हूँ।"

श्रीकृष्ण पांडव-शिविर से चले गए। दुर्योधन को श्रीकृष्ण के आने की सूचना मिली। उन्होंने राजसभा में ही श्रीकृष्ण को बुलाने की आज्ञा दी।

दुर्योधन की राजसभा में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शकुनि आदि अपने-अपने आसनों पर बैठे हुए थे। भावी युद्ध-नीति के विषय में बातचीत हो रही थी। युद्ध के विषय में भीष्म जितने शांत थे, दुर्योधन उतने ही उतावले। दुर्योधन अपनी बातें क्रोध में कर रहे थे। वातावरण गरम हो चुका था। उसी समय श्रीकृष्ण ने प्रवेश किया। अभिवादन में सभी लोग खड़े हो गए। श्रीकृष्ण ने अभिवादन स्वीकार किया। उन्होंने विनयपूर्वक आचार्य द्रोण और भीष्म पितामह से निवेदन किया—"आप हमारे पूज्य हैं। आसन ग्रहण कीजिए।" आचार्य और पितामह अपने-अपने आसनों पर बैठ गए। अन्य लोगों ने भी आसन ग्रहण किए। दुर्योधन जितनी हड़बड़ी में खड़े हुए उतनी ही जल्दबाजी में बैठ गए।

श्रीकृष्ण ने कहा—"हे दुर्योधन, मैं आपके समक्ष एक शांति-प्रस्ताव लेकर उपस्थित हुआ हूँ।"

दुर्योधन बोले—"अब शांति-प्रस्ताव का कोई अर्थ नहीं रहा। आप जानते

ही हैं कि युद्ध की तैयारियाँ हो चुकी हैं। दोनों ओर की सेनाएँ मोर्चे संभाल चुकी हैं। अब या तो पांडव युद्ध करें या अपनी पराजय स्वीकार करके मैदान से हट जाएँ।

श्रीकृष्ण ने गंभीरता से कहा—"भाइयों की समस्या का हल हार-जीत से नहीं होता दुर्योधन! सोचने का विषय युद्ध का परिणाम है।"

दुर्योधन फिर बोले—"युद्ध का परिणाम हमारे पक्ष में रहेगा।" श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को अपनी बात समझाई—"युद्ध का अंत तो हार या जीत में हो

जाता है, लेकिन विनाश का भयंकर परिणाम दोनों पक्षों को भुगतना पड़ता है। अतः युद्ध किसी भी प्रकार से रोकना चाहिए। अन्यथा दोनों पक्षों को हानि उठानी पड़ेगी।

दुर्योधन बीच में ही बोल पड़े—"युद्ध से पीछे हटना कायरों का काम है।" श्रीकृष्ण ने दुर्योधन से कहा—"मेरी पूरी बात ध्यान से सुनिए। यह समय अपने भाई पांडवों के प्रति लज्जाजनक बातें करने का नहीं है। मैं पांडवों का दूत बन कर आया हूँ। जो मैं कहूँ, वह उनके द्वारा ही कहा हुआ माना जाए। क्रोध से नहीं, विवेक से सुनिए।"

श्रीकृष्ण की गंभीर वाणी से दुर्योधन भी गंभीर हो गया। दुर्योधन ने कहा—"सुनाइए, पांडवों का प्रस्ताव।"

श्रीकृष्ण बोले—"पांडवों का प्रस्ताव है कि आप उन्हें केवल पाँच गाँव सौंप दें। तब वे हस्तिनापुर पर अपना अधिकार नहीं माँगेंगे। इससे शांति स्थापित हो सकती है, युद्ध रुक सकता है।" श्रीकृष्ण ने आगे कहा—"मैं चाहता हूँ कि इस विषय में आपकी सभा पुनः विचार करे।"

दुर्योधन गरज कर बोले—"मेरी सभा इस प्रस्ताव पर विचार नहीं करेगी पांडव-दूत! सभा बहुत विचार कर चुकी। अब वही होगा, जो मैं चाहूँगा।"

"तो आप ही विचार कर लें। लेकिन यह न भूलें कि शांति के लिए यह अंतिम प्रयास है"—श्रीकृष्ण बोले।

"बस-बस, रहने दो। हम बहुत सोच चुके, पांडव-दूत! उनसे कहना—पाँच गाँव तो क्या, मैं उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।"

श्रीकृष्ण ने फिर कहा—"सोच लीजिए महाराज, यदि आपने इस युद्ध को होने से बचा लिया तो सब आपकी प्रशंसा करेंगे। यदि यह अवसर निकल गया तो.........."

"तो क्या?" दुर्योधन बोला।

"आप हाथ मलते रह जाएँगे—" श्रीकृष्ण बोले।

"धमकी मत दो दूत! अब उन कायर पांडवों से कहना—राज्य माँगा नहीं जाता, युद्ध-भूमि में जीता जाता है। या तो युद्ध में शक्ति दिखाएँ या चुल्लूभर पानी में डूब मरें"—दुर्योधन ने अकड़कर कहा।

श्रीकृष्ण बोले—"महाराज दुर्योधन, आप अच्छे योद्धा की तरह अवसर का लाभ उठाना नहीं जानते। इसीलिए लोग आपको "दुर्योधन" कहते हैं।" श्रीकृष्ण ने सभा में ललकार कर पुनः कहा—"सारी सभा सुने—शांति का अंतिम प्रयास भी दुर्योधन ने ठुकरा दिया है। अब युद्ध के कारण जो विनाश होगा, उसका उत्तरदायित्व केवल दुर्योधन पर होगा।"

सूर्य ढल चुका था। श्रीकृष्ण भारी कदमों से पांडव-शिविर की ओर लौट रहे थे। उनकी चाल देखकर ही युधिष्ठिर ने शांति-प्रस्ताव का परिणाम समझ लिया।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.

युद्ध	तैयारी	पक्ष
मोर्चा	शिविर	अभिवादन
धर्मराज	विनाश	संग्राम
परिणाम	प्रयास	वातावरण
आचार्य	पितामह	जल्दबाजी
भयंकर	कायर	उत्तरदायित्व

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. तुम तो अपना गदा-अभ्यास करते रहो।
2. क्या इस युद्ध का रुकना संभव है?
3. यदि बातचीत से समस्या हल हो जाए तो रक्तपात क्यों हो?
4. बहुत अच्छा, मैं शांतिदूत बनकर एक कोशिश और किए लेता हूँ।
5. भाइयों की समस्या का हल हार-जीत से नहीं होता दुर्योधन!
6. मेरी पूरी बात सुनिए, ध्यान से सुनिए।
7. अब वही होगा, जो मैं चाहूँगा।
8. बस-बस, रहने दो। हम बहुत सोच चुके पांडव-दूत!
9. तो क्या?
10. आप हाथ मलते रह जाएँगे।

II. पढ़ो और समझो

क. विनाश = नुकसान, हानि
भयभीत = डरा हुआ
कायर = डरपोक
विवेक = समझ, भले-बुरे में भेद करने की योग्यता
मोर्चा = वह जगह जहाँ से युद्ध लड़ा जाता है
ललकार = मुकाबला करने के लिए चुनौती देना
पराजय = हार
उतावला = जल्दी करने वाला, हड़बड़ी मचाने वाला
प्रयास = कोशिश

ख. हाथ मलना = बहुत पछताना
चुल्लू भर पानी में डूब मरना = शर्मिंदा होना

ग. गदा-अभ्यास = गदा चलाने का अभ्यास
नर-संहार = मनुष्यों का संहार (मृत्यु)
शांति-योजना = शांति की योजना
शांतिदूत = शांति का दूत
शांति-प्रस्ताव = शांति का प्रस्ताव
पांडव-दूत = पांडवों का दूत

घ. भय → भयभीत
चिंता → चिंतित
जीवन → जीवित
स्थापना → स्थापित
प्रभाव → प्रभावित

ङ 1. मैं युद्ध से भयभीत नहीं हूँ, युद्ध के परिणाम से चिंतित हूँ।
2. युद्ध के विषय में भीष्म जितने शांत थे, दुर्योधन उतने ही उतावले।
3. दुर्योधन जितनी हड़बड़ी में खड़े हुए, उतनी ही जल्दबाजी में बैठ गए।
4. युद्ध का अंत हार-जीत में होता है, लेकिन विनाश का भयंकर परिणाम दोनों पक्षों को भुगतना पड़ता है।
5. उनसे कहना— पाँच गाँव तो क्या, मैं उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।

च. 1. गदा-अभ्यास बहुत हुआ है।
गदा-अभ्यास बहुत हो चुका है।
2. युद्ध के परिणाम की मुझे चिंता है।
युद्ध के परिणाम से मैं चिंतित हूँ।

3. युद्ध की तैयारियाँ कर ली हैं।
   युद्ध की तैयारियाँ हो चुकी हैं।
4. मैं उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दूँगा।
   उन्हें एक सुई की नोक के बराबर भी भूमि नहीं दी जाएगी।

III. संरचना-अभ्यास

क. नीचे दिए वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलोः

> **उदाहरणः** मैं कश्मीर जा रहा हूँ →
> मैं कश्मीर जा चुका हूँ।

1. मोहन दिल्ली जा रहा है।
   ....
2. पिताजी खाना खा रहे हैं।
   ....
3. मधु "गोदान" पढ़ रही है।
   ....
4. मैं कसरत कर रहा हूँ।
   ....

ख. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को जोड़कर लिखोः

> **उदाहरणः** 1. मुझे अभी खाना दो →
> 2. मैं भूखा सो जाऊँगा
> मुझे अभी खाना दो **नहीं तो** मैं भूखा सो जाऊँगा।

1. मुझे मेहनत करने दो।
2. मैं फेल हो जाऊँगा।
   ....

1. मुझे गृहकार्य करने दो।
2. मुझे स्कूल में डाँट पड़ेगी।

....

1. मुझे अब चलने दो।
2. मैं दिल्ली नहीं पहुँच पाऊँगा।

....

1. गीता को रोज़ दवा पिलाओ।
2. गीता ठीक नहीं हो पाएगी।

....

ग. "जितना", "उतना" का प्रयोग करते हुए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को जोड़ो :

उदाहरण : 1. यह मकान महंगा है →
2. वह मकान महंगा नहीं है →
यह मकान जितना महंगा है उतना वह मकान नहीं।

1. बंबई की आबादी अधिक है।
दिल्ली की आबादी अधिक नहीं है।

....

2. कल यहाँ भीड़ थी।
आज यहाँ भीड़ नहीं है।

....

3. वह पढ़ता है।
वह विद्वान नहीं है।

....

4. मद्रास में गरमी है।
   श्रीनगर में गरमी नहीं है।
   ....

घ. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को बदलो :

उदाहरण : राधा ने पानी पिया →
राधा पानी पिओ।

1. मोहन ने कहानी सुनाई
   ....
2. विमला ने बात बताई।
   ....
3. दर्जी ने कपड़े सिले।
   ....
4. श्याम ने किताब दिखाई।
   ....

ङ. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को जोड़ो :

उदाहरण : 1. तुम्हें मिठाई मिलेगी
2. तुम्हें टॉफ़ी मिलेगी
तुम्हें या तो मिठाई मिलेगी या टॉफी

1. तुम्हें साड़ी मिलेगी।
   तुम्हें घड़ी मिलेगी।
   ....

2. मोहन को किताब दी जाएगी।
मोहन को पेंसिल दी जाएगी।
....

3. मुझे दिल्ली जाना है।
मुझे बंबई जाना है।
....

4. तुम किताब पढ़ो।
तुम अखबार पढ़ो।

नीचे दिए उदाहरण के अनुसार वाक्यों को जोड़ो

> **उदाहरणः** 1. वह चोर है →
> 2. उसे सजा मिलेगी →
> **यदि** वह चोर हुआ **तो** उसे सज़ा मिलेगी।

1. वह बुद्धिमान है।
उसे इनाम मिलेगा

2. वह अध्यापक है।
वह सच बोलेगा।
....

3. वह सज्जन है।
वह मेरी किताब लौटा देगा।
....

4. वह झूठा है।
पकड़ा जाएगा।
....

IV पढ़ो और बताओ

1. श्रीकृष्ण के पांडव-शिविर में पहुँचने पर युधिष्ठिर ने क्या कहा?
2. धर्मराज चिंतित क्यों थे?
3. श्रीकृष्ण दुर्योधन की राजसभा में क्यों गए?
4. युद्ध के परिणाम के बारे में श्रीकृष्ण के क्या विचार थे?
5. पांडवों का क्या प्रस्ताव था?
6. पांडवों के प्रस्ताव के उत्तर में दुर्योधन ने क्या कहा?
7. सभा में श्रीकृष्ण ने ललकार कर क्या कहा?
8. युधिष्ठिर ने कैसे जाना कि शांति का अंतिम प्रयास भी विफल हो गया?
9. सुयोधन को 'दुर्योधन' क्यों कहा जाता है?

V पढ़ो और लिखो

"दुर्योधन की राजसभा में भीष्म, द्रोण, कर्ण, शकुनि आदि अपने-अपने आसनों पर बैठे हुए थे। भावी युद्ध-नीति के विषय में बातचीत हो रही थी। युद्ध के विषय में भीष्म जितने शांत थे, दुर्योधन उतने ही उतावले। दुर्योधन अपनी बात क्रोध से कहते थे। वातावरण गरम हो चुका था।"

VI योग्यता-विस्तार

पाठ में प्रस्तुत संवादों को कहानी के रूप में लिखो।

पाठ 24

आज़ादी की कहानी

संरचना—संकेत

संयुक्त क्रिया (बंद कर दिया)
रंजक क्रिया (बज उठा)

भारत 15 अगस्त, 1947 को आज़ाद हुआ। इस आज़ादी के लिए देशवासियों को लंबे समय तक संघर्ष करना पड़ा। हज़ारों लोग अंग्रेज़ों की गोलियों के शिकार हुए और हज़ारों फाँसी के फंदों पर झूल गए लाखों लोगों ने लाठियाँ खाईं, जेल गए और काले पानी की यातनाएँ सहीं।

19वीं सदी के आरंभ में अंग्रेज़ों ने भारत को धीरे-धीरे अपने शिकंजे में कस लिया था। पराधीनता के कारण हमारा आर्थिक ढाँचा ढह गया। अंग्रेज़ों ने हमारे देश पर अनेक प्रकार के अत्याचार और जुल्म किए। उनसे छुटकारा पाने के लिए भारतवासियों के हृदय में विद्रोह की आग धधकने लगी।

अंग्रेज़ों को देश से बाहर खदेड़ने के लिए 10 मई, 1857 को मेरठ में अंग्रेज़ी सेना के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम का बिगुल बज उठा। इस संग्राम की चिनगारी दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य भारत और बिहार तक फैल गई। मंगल पांडे, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, मुगलों के अंतिम बादशाह बहादुरशाह ज़फर, क्रांतिकारी तात्याँ टोपे, अज़ीमुल्लाह खाँ, बाबू कुँवरसिंह, नाना साहब आदि आज़ादी के दीवाने इस संघर्ष में कूद पड़े।

एक बार तो ब्रिटिश साम्राज्य की नींव ही हिल गई लेकिन यह संघर्ष कामयाब नहीं हो सका। अंग्रेज़ों ने बहादुरशाह ज़फ़र को रंगून की जेल में बंद कर दिया। मंगल पांडे को फाँसी पर लटका दिया तथा लक्ष्मीबाई और वीर कुँवरसिंह युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। अज़ीमुल्ला खाँ, तात्याँ टोपे और नाना साहब ने इस संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

अंग्रेज़ों ने बेरहमी से 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम को कुचल तो दिया, लेकिन इस क्रांति ने संघर्ष के लिए आगे की राह खोल दी। भारत में नई

राष्ट्रीय-चेतना जागी। राजा राममोहन राय, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद तथा स्वामी दयानंद सरस्वती ने सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना जगाई। इससे राष्ट्रीयता, देशभक्ति, हिंदी-प्रेम, नारी-शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि आदि को बढ़ावा मिला। बंकिमचंद चटर्जी द्वारा रचित "वंदेमातरम्" गीत ने देश में नए प्राण फूँक दिए। सारा देश जोश और उमंग से भर उठा।

सन् 1885 में राष्ट्रीय महासभा (काँग्रेस) की स्थापना हुई और उसने स्वाधीनता-संग्राम की बागडोर सँभाली।

सन् 1904-5 में अंग्रेज़ों ने बंगाल को दो भागों में बाँट दिया। "बंग-भंग" का उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों में फूट डालना था। इस घटना से पूरे देश में क्रोध की लहर फैल गई सारे देश ने एकजुट होकर बंग-भंग का विरोध किया। लाल, बाल, पाल (लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक और विपिनचंद्र पाल) के क्रांतिकारी नेतृत्व में इस आंदोलन ने तीव्र रूप धारण कर लिया। स्वतंत्रता-संग्राम ने एक नया मोड़ लिया। लोकमान्य तिलक ने घोषणा की - "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे"।

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया। अंग्रेज़ों ने किसानों और मज़दूरों पर अत्याचार किए और युद्ध के लिए उनसे बेशुमार धन इकट्ठा किया। इस कारण अंग्रेज़ों के प्रति विद्रोह की आग और भी अधिक भड़क उठी। इसी बीच मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका से वापस आए। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने नागरिक अधिकारों के लिए भारतीयों को संगठित कर अहिंसात्मक आंदोलन छेड़ा था। इस संघर्ष में उन्हें सफलता भी मिली और तभी से जनता में वे लोकप्रिय हो गए। उनकी सच्ची सेवा-भावना तथा सत्य-अहिंसा के कारण भारत आने पर उनका अपूर्व स्वागत हुआ। लोग उन्हें अपना नायक मानने लगे। 1917 के 'चंपारन आंदोलन' और गुजरात में 'मजदूर-किसान आंदोलनों'

की सफलता के कारण लोगों ने उन्हें 'महात्मा' कहकर अपनी सच्ची श्रद्धा प्रकट की।

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए गांधी जी ने अहिंसात्मक सत्याग्रह और आंदोलन चलाए। उन्होंने स्वदेशी का प्रचार, खादी का प्रयोग और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। गांधी जी के आह्वान पर हज़ारों लोगों ने सरकारी नौकरियाँ और स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए। वे सभी स्वतंत्रता-संग्राम में शामिल हो गए।

गांधी जी द्वारा चलाए गए अहिंसात्मक आंदोलनों के साथ-साथ सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल, बटुकेश्वर दत्त, राजगुरु आदि ने सशस्त्र-क्रांति पर बल दिया। इससे अंग्रेज़ी राज्य के विरुद्ध भारतीय नवयुवकों में नया जोश पैदा हुआ।

सन् 1930 के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का संकल्प लिया। मार्च 1930 में गांधी जी ने नमक कानून तोड़ने के लिए 'डांडी-यात्रा' की। इसमें हज़ारों लोग शामिल हुए। 1930 का सत्याग्रह आंदोलन कई वर्षों तक चलता रहा।

अंग्रेज़ों के विरुद्ध अंतिम आंदोलन सन् 1942 में शुरू हुआ। इसे "भारत छोड़ो आंदोलन" कहते हैं। इस अवसर पर गाँधी जी ने देशवासियों को संबोधित करते हुए कहा- "मैं आपको एक छोटा-सा मंत्र देता हूँ। वह है- "करो या मरो"। हम तब तक अंग्रेज़ी राज्य के विरुद्ध लड़ते रहेंगे जब तक कि हमें आज़ादी हासिल नहीं हो जाती।"

गाँधी जी की इस बात का जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। लाखों लोग "भारत छोड़ो आंदोलन" में शामिल हो गए। इससे क्रोधित होकर अंग्रेज़ी सरकार ने कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया। सभी बड़े-बड़े नेता गाँधी जी, नेहरू जी, सरदार पटेल, मौलाना आज़ाद आदि जेलों में बंद कर दिए गए।

सुभाषचंद्र बोस ने सिंगापुर में "आज़ाद हिंद-फौज" का गठन किया। उन्होंने बर्मा (म्याँमार) और असम की ओर से आक्रमण किया। उनके दो नारे थे—पहला, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा" और दूसरा—"दिल्ली चलो"।

सन् 1942 के स्वतंत्रता-संग्राम ने ऐसा ज़ोर पकड़ा कि अंग्रेज़ों के लिए अब भारत में शासन करना मुश्किल हो गया। उन्हें भारत को आज़ाद करने की घोषणा करनी पड़ी।

आज़ादी की इस कहानी के साथ एक अंतिम दुखद घटना भी जुड़ी हुई है। अंग्रेज़ों ने जाते-जाते हमारे देश का बँटवारा कर दिया। भारत और पाकिस्तान दो अलग-अलग देश बन गए।

हमें 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिली और 14-15 अगस्त की आधी रात को ठीक 12 बजे दिल्ली के "केंद्रीय असेंबली भवन" (जिसे अब संसद-भवन कहा जाता है) से अंग्रेज़ों का झंडा "यूनियन जैक" उतार दिया गया। उसकी जगह "भारतीय तिरंगा झंडा" लहराने लगा। सन् सैंतालीस के बाद से प्रतिवर्ष 15 अगस्त के दिन दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा-झंडा फहराया जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. असंतोष | पराधीनता | आर्थिक
चिनगारी | क्रांतिकारी | संघर्ष
वंदेमातरम् | नेतृत्व | आंदोलन
स्वतंत्रता | सत्याग्रह | आह्वान
हिंसा | विरुद्ध | अधिवेशन
बँटवारा

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. अंग्रेजो! भारत छोड़ो।
2. तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।
3. दिल्ली चलो।
4. स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम उसे लेकर रहेंगे।

II. पढ़ो और समझो

क.

यातना	=	कष्ट
बर्मा	=	म्याँमार (बर्मा देश का नया नाम)
कामयाब	=	सफल
वीरगति	=	युद्ध में मृत्यु हो जाना
आहुति	=	भेंट, बलिदान
संग्राम	=	युद्ध
हासिल	=	प्राप्त
जुल्म	=	अत्याचार
शिकंजे में कस लेना	=	ज़बरदस्ती अधिकार कर लेना, चाल में फँसा लेना।

ख.

विरोध	×	समर्थन
रहम	×	बेरहम
प्रारंभ	×	समाप्त
दुखद	×	सुखद
स्वदेशी	×	विदेशी
स्वतंत्रता	×	परतंत्रता
आज़ादी	×	गुलामी
हिंसा	×	अहिंसा
सफलता	×	असफलता
संतोष	×	असंतोष
सीमित	×	असीमित
सत्य	×	असत्य

ग. 1. असंतोष की आग धधकने लगी।
असंतोष तेज़ी से **फैलने लगा** ।

2. युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।
   युद्ध में **शहीद हुए** ।
3. "वंदेमातरम्" गीत ने **नए प्राण फूँक दिए**।
   "वंदेमातरम्" गीत से **नया जोश पैदा हुआ**।
4. स्वतंत्रता-संग्राम का **बिगुल बज उठा**।
   आज़ादी की लड़ाई शुरू हो गई ।
5. ब्रिटिश साम्राज्य की **नींव हिल गई**।
   ब्रिटिश साम्राज्य **कमज़ोर पड़ गया**।
6. हम **अंतिम साँस तक** लड़ते रहेंगे।
   हम **मरने तक** लड़ते रहेंगे।

घ. अर्थ → आर्थिक

समाज → सामाजिक

वर्ष → वार्षिक

मास → मासिक

विज्ञान → वैज्ञानिक

इतिहास → ऐतिहासिक

नीति → नैतिक

उद्योग → औद्योगिक

III. संरचना-अभ्यास

उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

क. **उदाहरण :**

स्कूल में ग्यारह बजे घंटी बजी थी

→ स्कूल में ग्यारह बजे घंटी बज उठी।

1. राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राम का बिगुल बजा था।
....

2. सारा देश जोश और उमंग से भरा था।
....

3. अंग्रेज़ों के विरुद्ध असंतोष की आग भड़की थी।
....

4. आग से घास का गट्ठर भभका था।
....

ख. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण : सीटी बजते ही गाड़ी चली।
→ सीटी बजते ही गाड़ी चल पड़ी।

1. झंडी हिलते ही गाड़ी चली।
....

2. जोकर को देखते ही वह हँसा।
....

3. बच्चा दौड़ते ही गिरा।
....

4. मित्र को देखते ही वह बोला।
....

ग. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरणः

वह कच्चा फल खाता है।
→ वह कच्चे फल खा गया।

1. शीला कच्चा केला खाती है।

....

2. रमेश खट्टा आम खाता है।

....

3. मोहन ताजा सेब खाता है।

....

4. महेश्वर मीठा संतरा खाता है

....

घ. **उदाहरणः**

मैंने सुबह का नाश्ता कर लिया।
→ मैंने सुबह का नाश्ता नहीं किया।

1. बच्चे ने खिलौना तोड़ दिया।

....

2. महावीर ने समुद्र लाँघ लिया।

....

3. कार्यक्रम देखने के बाद दर्शक चले गए।

....

4. ठेकेदार ने मज़दूरों को मजदूरी दे दी।

....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. अंग्रज़ों के विरुद्ध भारतीय सेना ने पहला विद्रोह कब किया?

2. "बंग-भंग" का क्या उद्देश्य था?

3. 10 मई, 1857 को मेरठ में क्या हुआ था?

4. प्रथम विश्व युद्ध कब हुआ था?
5. "भारत छोड़ो आंदोलन" का अंग्रेज़ों पर क्या प्रभाव पड़ा?

ख. निम्नलिखित में किस-किस का संबंध **प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम** से नहीं है ? सही (✓) का चिह्न लगाओ :

- मंगल पाण्डे
- लाल-बाल-पाल
- लक्ष्मीबाई
- अज़ीमुल्लाखाँ
- मौलाना आज़ाद
- सुभाष चंद्र बोस
- तात्याँ टोपे
- राजा कुँवर सिंह
- राजा राममोहन राय

2. स्तंभ "क" में प्रसिद्ध सन् दिए गए हैं और "ख" में उनसे संबंधित घटनाएँ; दोनों का क्रम से मिलान करो :

(क)	(ख)
1857	राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना
1885	पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा
1904	भारत-छोड़ो आंदोलन
1930	देश का विभाजन
1942	प्रथम-स्वतंत्रता-संग्राम
1947	बंगाल का विभाजन

3. बताओ ये कथन किस-किस के हैं?

1. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"

2. "स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है"
3. "करो या मरो"
4. "दिल्ली चलो"

V. पढ़ो और लिखो

क. हमें 15 अगस्त, 1947 को आज़ादी मिली।

- अंग्रेज़ों का झंडा उतार दिया गया।
- उसकी जगह भारतीय तिरंगा-झंडा लहराने लगा।
- जवाहरलाल नेहरू का उस समय दिया गया भाषण सदा याद किया जाता है।
- प्रतिवर्ष 15 अगस्त के दिन लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराया जाता है।
- प्रधानमंत्री ध्वज फहराकर देश को संबोधित करते हैं।

ख. प्रत्येक पर दो-दो वाक्य लिखिए :

1. बंगाल का विभाजन
2. भारत-छोड़ो आंदोलन
3. 15 अगस्त, 1947

IV. योग्यता-विस्तार

आज़ादी की कहानी पर पुस्तकालय से कोई पुस्तक लेकर पढ़ो।

पाठ 25

महासेतु का निर्माता

घरों से बाहर बच्चों का समूह,
वर्षा के जल को रोकने का—
रचता है व्यूह!
बच्चों की छोटी-छोटी अंजुलियाँ,
रेत, मिट्टी और बजरी से भरी हैं।
सभी तो कार्यरत हैं
कुछ व्यस्त हैं, सामग्री जुटाने में,
कुछ समझाने में,

और कुछ मिट्टी के कूटने-कुटाने में।
बाँध-बाँधने की लगन लिए ये बालक–
खेल-खेल में समझने लगे,
सेतुबंध की गिलहरी का श्रम
निश्चय ही इन बच्चों में
कोई तो होगा ही कम-से-कम
भविष्य के महासेतु का निर्माता।
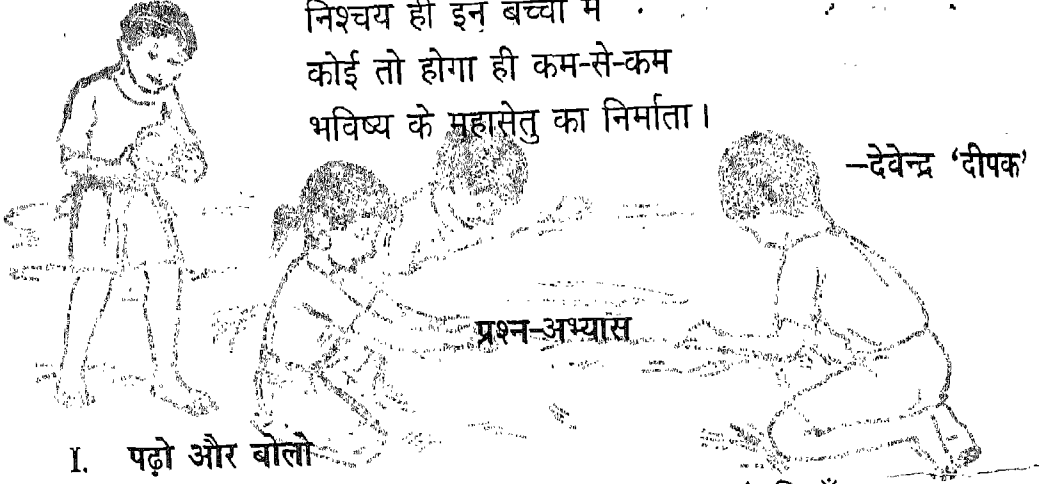
–देवेन्द्र 'दीपक'

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. समूह — व्यूह — अंजुलियाँ
कार्यरत — व्यस्त — सामग्री
बाँध — सेतुबंध — भविष्य
निश्चय — महासेतु — निर्माता

ख. 1. वर्षा के जल को रोकने का–रचता है व्यूह।
2. और कुछ मिट्टी के कूटने-कुटाने में
3. सेतुबंध की गिलहरी का श्रम
4. कोई तो होगा ही कम-से-कम

II पढ़ो और समझो

क. समूह = दल
रचता है व्यूह = योजना बनाता है

अँजुलि	=	दोनों हथेलियों को मिलाकर बनी हुई आकृति या मुद्रा
कार्यरत	=	काम में लगा हुआ
व्यस्त	=	काम में लगा हुआ
भविष्य	=	आने वाला समय
महासेतु	=	महान कार्य, बड़ा पुल

ख. लंका के लिए प्रस्थान करते समय श्रीराम ने रामेश्वरम् में समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया था। इसे "सेतुबंध" रामेश्वरम् कहते हैं। कहा जाता है कि जब यह पुल बनाया जा रहा था, तब एक गिलहरी ने भी उसमें अपना सहयोग दिया था। वह रेत में लोट कर आती थी और उस रेत को पुल पर झाड़ देती थी। इसी को कवि ने "गिलहरी का श्रम" कहा है।

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. बच्चों की छोटी-छोटी अँजुलियाँ,
....

ख. कुछ व्यस्त हैं, सामग्री जुटाने में,
....

ग. बाँध-बाँधने की लगन लिए ये बालक,
....

घ. निश्चय ही इन बच्चों में
....

IV. पढ़ो और बताओ

1. घरों के बाहर बच्चे क्या व्यूह बना रहे थे?

2. बच्चों की अँजुलियों में क्या-क्या था?
3. बच्चे किन कामों में लगे थे?
4. बच्चों की बाँध-बाँधने की लगन की तुलना किससे की गई है?
5. बच्चों का श्रम देखकर कवि क्या आशा करता है?

V. योग्यता-विस्तार

इसी भाव से मिलती-जुलती कविता अपनी मातृभाषा से ढूँढ़कर पढ़ो।

पाठ 26

यात्रा : पूर्वांचल की

संरचना—संकेत

कर्ता–से (चला नहीं जाता)
चाहे–या
के बावजूद

फरवरी का पहला सप्ताह था। मुझे सुबह छह बजे से पहले ही नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचना था। वहाँ से गुवाहाटी जाने वाली 'नार्थ ईस्ट एक्सप्रेस' पकड़नी थी। असम-यात्रा का उत्साह मन में भरा हुआ था इसलिए ठंड के बावजूद भी मैं प्रातः पाँच बजे ही तैयार हो गया। स्टेशन पहुँचा तो गाड़ी प्लेटफार्म पर लग चुकी थी और यात्री अपना-अपना स्थान ग्रहण कर चुके थे। चाहे सर्दी का मौसम हो या गर्मी का, पूर्वांचल जाने वाली गाड़ियों में हमेशा काफी भीड़ होती है। मैं बड़ी मुश्किल से अपनी बर्थ तक पहुँच पाया तथा अपना स्थान ग्रहण कर सका।

गाड़ी ठीक समय पर छूटी। जैसे-जैसे दिल्ली की सीमा दूर होती गई, वैसे-वैसे गाड़ी की रफ़्तार भी बढ़ती गई। अलीगढ़, टुँडला, इटावा, कानपुर फतेहपुर, इलाहाबाद एवं मुगलसराय होते हुए हमारी गाड़ी बिहार पहुँची। अँधेरा हो गया था। पटना पहुँचकर मैंने रात्रि का भोजन किया, फिर अपनी बर्थ पर लेट गया। सुबह छह बजे नींद खुली तो गाड़ी कटिहार स्टेशन पर

खड़ी थी। कटिहार से आगे बढ़ते ही पश्चिमी बंगाल का उत्तरी क्षेत्र शुरू हो गया।

अब हम न्यू जलपाईगुड़ी पहुँच गए थे। वहाँ से हिमालय की शृंखलाएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन सिलीगुड़ी शहर का एक हिस्सा है। सिलीगुड़ी को पूर्वोत्तर भारत का प्रवेश-द्वार कहा जाता है। यहाँ के अनन्नास काफी मीठे होते हैं।

न्यू जलपाईगुड़ी से गाड़ी आगे बढ़ी तो सुपारी, नारियल और केले के

बागानों में बसे गाँव दिखाई देने लगे। बीच-बीच में छोटे-छोटे चौकोर खेतों वाले बड़े-बड़े मैदान भी नज़र आने लगे। न्यू कूचबिहार और अलीपुर-द्वार को पार करने के बाद बाँसों के झुरमुटों की संख्या बढ़ गई। असम के घने जंगलों, छोटी-छोटी पहाड़ियों और सरिताओं के दृश्य रमणीक लग रहे थे।

शाम को चार बजे हमारी गाड़ी न्यू बोंगईगाँव पहुँची। यह असम का पहला बड़ा स्टेशन है। यहाँ एक तेलशोधक कारखाना भी है। गुवाहाटी पहुँचते-पहुँचते रात घिर आई थी। गुवाहाटी पूर्वोत्तर भारत का हृदय कहा जाता है। यह ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा हुआ है। ब्रह्मपुत्र को नदी नहीं, बल्कि "नद" कहते हैं। हमारी गाड़ी ब्रह्मपुत्र-नद को पारकर गुवाहाटी शहर में प्रविष्ट हुई सहयात्री ने बाँई ओर की पहाड़ी की ओर संकेत किया। उसने बताया कि वहाँ कामाख्या देवी का प्रसिद्ध मंदिर है।

गुवाहाटी के आगे छोटी लाइन की रेलगाड़ियाँ चलती हैं। एक लाइन उत्तर की ओर रंगिया लौटकर पूर्व दिशा में चली जाती है और अरुणाचल प्रदेश को जोड़ती है और दूसरी लाइन दक्षिण पूर्व की ओर लुमडिंग जाती है। लुमडिंग से इसकी दो शाखाएँ निकलती हैं। एक शाखा पुनः उत्तर-पूर्व की ओर तिनसुखिया डिब्रूगढ़ चली जाती है। दूसरी शाखा दक्षिण की ओर सिलचर एवं धर्मनगर की ओर मुड़ जाती है। तिनसुखिया—डिब्रूगढ़ लाइन पर चलने वाली गाड़ियाँ मिज़ोरम एवं त्रिपुरा के यात्रियों को ले जाती हैं। मेघालय जाने के लिए गुवाहाटी से ही बस पकड़नी पड़ती है। इन सभी राज्यों के लिए गुवाहाटी से बस-सेवाएँ भी उपलब्ध हैं।

जैसे-जैसे हम पूर्वोत्तर की ओर बढ़ते हैं, सूरज जल्दी निकलता है और जल्दी डूबता है। दूसरे दिन गुवाहाटी से सिलचर जाने वाली गाड़ी में जब मैं सवार हुआ तब शाम के पाँच बज रहे थे। सूर्य अस्त हो चुका था और रात का अँधेरा धीरे-धीरे पूरे शहर पर फैलता जा रहा था। इतनी जल्दी अंधेरा

देखकर मुझे अजीब-सा लग रहा था। हमारी गाड़ी जब शहर से बाहर निकली तो चाँदनी में आसपास का सारा दृश्य बड़ा लुभावना लगा। खिड़की से इस दृश्य को देखते-देखते पता नहीं कब आँख लग गई।

सुबह पाँच बजे जब नींद खुली तो चारों ओर उजाला फैल चुका था। हमारी गाड़ी बाँस के घने जंगलों के बीच से गुज़र रही थी। आठ बजते-बजते गाड़ी मायबाङ पहुँची। जिधर देखो उधर केले के पेड़-ही-पेड़। इसीलिए तो इस इलाके में हाथी बहुत-बड़ी संख्या में पाये जाते हैं। दूर पहाड़ी पर एक खंडहर दिखाई दिया। वह सुनहरी धूप और हरियाली के बीच बहुत ही आकर्षक लग रहा था। पता चला कि मायबाङ किसी समय एक बड़े साम्राज्य की राजधानी थी। ये खंडहर उसी के अवशेष हैं।

मायबाङ से आगे रेलगाड़ी कई सुरंगों से गुजरी। वस्तुतः यह देश का सबसे जटिल रेलमार्ग है। दोपहर के समय गाड़ी लोअर हाफलाङ पहुँची। हाफलाङ उत्तरी कछार ज़िले का मुख्यालय है।

लोअर हाफलाङ पहुँचकर मेरी रेल-यात्रा समाप्त हो गई। यहाँ से जीप द्वारा मैं हाफलाङ पहुँचा। हाफलाङ से कुछ दूरी पर जतिंगा गाँव है। यह गाँव विश्व का आश्चर्यजनक स्थान माना जाता है। यहाँ आकर पक्षी आत्महत्या करते हें। घने कोहरे और रिमझिम वर्षा के कारण यहाँ के लोग आग जलाते हैं। आग से आकर्षित होकर पक्षी वहाँ पहुँचते हैं और आग में कूद पड़ते हैं। अभी तक यह गुत्थी नहीं सुलझ पाई कि पक्षी इसी इलाके में ऐसा क्यों करते हैं?

दूसरे दिन सुबह मैं सिलचर के लिए रवाना हुआ। वहाँ पहुँचकर पता चला कि मिज़ोरम जाने के लिए यहीं से बस पकड़नी पड़ती है। हाफलाङ और सिलचर के बीच में या तो बाँसों के जंगल दिखाई देते हैं या सीढ़ीनुमा खेत। यहाँ का जीवन बाँस पर आधारित है। बाँस से मकान, छोटे पुल, चटाइयाँ,

टोकरियाँ, थैले, पंखे, फर्नीचर, बाल्टी, भगौने, गिलास आदि अनेक उपयोगी चीज़ें बनाई जाती हैं। बाँस का उपयोग पाइप की तरह भी होता है। बाँस की मुलायम जड़ें और कलियाँ खाने के काम में भी आती हैं।

रात में मैंने सिलचर में ही विश्राम किया। दूसरे दिन मैं हवाई जहाज से कलकत्ते के लिए रवाना हुआ। कलकत्ते से ट्रेन पकड़कर मुझे दिल्ली लौटना था। मैं लौट तो आया, पर पूर्वांचल की मधुर स्मृति आज भी मेरे मन में ज्यों-की-त्यों बनी हुई है।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

(क)

सप्ताह	उत्साह	रफ़्तार
अनन्नास	आकर्षित	एक्सप्रेस
रमणीक	हरियाली	शोधक
स्मृति	पूर्वांचल	पूर्वोत्तर
खंडहर	साम्राज्य	सीढ़ीनुमा

(ख) सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. ब्रह्मपुत्र को नदी नहीं बल्कि 'नद' कहते हैं।
2. जैसे-जैसे पूर्वोत्तर की ओर बढ़ते हैं, सूर्यास्त का समय कम होता जाता है।
3. जिधर देखो उधर केले के पेड़-ही-पेड़।
4. जहाँ तक दृष्टि जाती है या तो बाँसों के जंगल दिखाई देते हैं अथवा सीढ़ीनुमा खेत।

II. पढ़ो और समझो

(क)

तेलशोधक = तेल को शुद्ध या साफ़ करने वाला
रमणीक = सुंदर, मन को अच्छा लगने वाला
प्रविष्ट होना = घुसना, प्रवेश करना
खंडहर = किसी पुराने या टूट-फूटे भवन का अंश
लुभावना = मन को अच्छा लगने वाला, सुंदर
स्मृति = याद
जटिल = उलझा हुआ, टेढ़ा-मेढ़ा, कठिन
सहयात्री = साथ में यात्रा करने वाला

अवशेष = शेष या बचा हुआ भाग
साम्राज्य = विशाल राज्य
भू-भाग = भूमि या ज़मीन का हिस्सा

(ख) 1. बाँस की मुलायम जड़ें **और** कलियाँ खाने के काम में आती हैं।
बाँस की मुलायम जड़ें **तथा** कलियाँ खाने के काम में लाईं जाती हैं।
बाँस की मुलायम जड़ें **एवं** कलियाँ खाने के काम में आती हैं।

2. बाँसों के जंगल दिखाई देते हैं **या** सीढ़ीनुमा खेत।
बाँसों के जंगल दिखते हैं **अथवा** सीढ़ीनुमा खेत।
बाँसों के जंगल दिखाई पड़ते हैं **या फिर** सीढ़ीनुमा खेत।

3. **जिधर** देखो **उधर** केले के पेड़-ही-पेड़।
जिस ओर देखो **उस ओर** केले के पेड़-ही-पेड़।
जहाँ देखो **वहाँ** केले के पेड़-ही-पेड़।

4. मैं बड़ी **मुश्किल** से अपनी बर्थ तक पहुँच पाया।
मैं बड़ी **परेशानी** से अपनी बर्थ तक पहुँच सका।
मैं बड़ी **कठिनाई** से अपनी बर्थ तक पहुँच गया।

(ग) 1. सर्द → सर्दी
गर्म → गर्मी
नर्म → नर्मी

2. आराम → आरामदायक
लाभ → लाभदायक
कष्ट → कष्टदायक

3. बल × निर्बल
भय × निर्भय
दोष × निर्दोष

(घ) मोहन देख नहीं पाता → मोहन देख नहीं सकता।
राधा लिख नहीं पाती → राधा लिख नहीं सकती।
लक्ष्या पढ़ नहीं पाता → लक्ष्या पढ़ नहीं सकता।
सोनल बोल नहीं पाती → सोनल बोल नहीं सकती।

III संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :** गर्मी हो या सर्दी, गाड़ियों में हमेशा भीड़ होती है।
> → **चाहे** गर्मी हो **या** सर्दी, गाड़ियों में हमेशा भीड़ होती ही है।

1. सर्दी हो या गर्मी, सूर्य हमेशा समय पर निकलता है।
....
2. रमेश हो या मोहन, दोनों हमेशा टेनिस खेलते हैं।
....
3. गोपाल हो या सुरेश घर में हमेशा पढ़ते रहते हैं।
....
4. वर्षा हो या सूखा, अस्पतालों में हमेशा भीड़ मिलती है।
....

ख.

> **उदाहरण :** तुम मेरे मना करने पर भी वहाँ क्यों गए?
> → तुम मेरे मना करने के **बावजूद** वहाँ क्यों गए?

1. लोगों के भड़काने पर भी वह गुस्सा क्यों नहीं हुआ?
....
2. बुखार होने पर भी भाईसाहब ने दवा क्यों नहीं खायी?
....

3. रास्ता जाम न होने पर भी वह समय पर क्यों नहीं पहुँचा?

....

4. ठंड न होने पर भी महेश जल्दी तैयार क्यों नहीं हुआ?

....

ग.

उदाहरण : मैं अब और नहीं **खाऊँगा** →**मुझसे** अब और नहीं **खाया जाता**।

1. हम अब और नहीं चलेंगे।

....

2. पिताजी अब और दूध नहीं पिएँगे।

....

3. हम अब और नहीं सोएँगे।

....

4. मैं अब और नहीं बैठूँगा।

....

घ.

उदाहरण : मैं पहाड़ पर नहीं चढ़ **सकता** → मुझसे पहाड़ पर नहीं **चढ़ा जाता**।

1. सेठ जी पैदल नहीं चल सकते।

....

2. मैं जल्दी नहीं उठ सकता।

....

3. हम नंगे पाँव नहीं चल सकते।

....

4. मैं तुम्हारी यह हालत नहीं देख सकता।

   ....

5. कैमीला ज्यादा देर तक चुप नहीं रह सकती।

   ....

IV. पढ़ो और बताओ

1. न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन से आगे बढ़ने पर लेखक ने क्या दृश्य देखा?
2. पूर्वांचल के सातों राज्यों के नाम बताओ।
3. मायबाङ की क्या विशेषता है?
4. "यहाँ का जीवन बाँस पर आधारित है"—ऐसा क्यों कहा गया है?
5. गुवाहाटी से छोटी लाइन कहाँ-कहाँ जाती है?
6. जतिंगा गाँव को आश्चर्यजनक स्थान क्यों माना जाता है?

V. पढ़ो और लिखो

क. मायबाङ से आगे रेलगाड़ी कई सुरंगों से गुज़री। वस्तुतः यह देश का सबसे जटिल रेलमार्ग है। दोपहर के समय जब गाड़ी लोअर हाफलाङ पहुँची, तब तक हम कई सुरंगें पार कर चुके थे। अब हम उत्तरी कछार ज़िले में प्रवेश कर चुके थे। हाफलाङ उत्तरी कछार ज़िले का मुख्यालय है।

ख. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करोः
आकर्षित, स्मृति, खंडहर, उत्साह, साम्राज्य

VI. योग्यता-विस्तार

तुमने अपने माता-पिता के साथ यदि कोई यात्रा की हो तो अपने साथियों में उसकी चर्चा करो।

पाठ 27

हमारे अपने मेहमान

(दूरदर्शन परिसंवाद)

संयोजक : सुरेश झा

सुरेशः भारत-संघ का एक छोटा-सा राज्य गोवा! हरे-भरे पर्वत और कलकल करती नदियाँ! एक ओर नारियल, सुपारी के बगीचे, दूसरी ओर विशाल एवं प्राचीन गिरिजाघर और मंदिर। धरती के पाँव पखारता सागर-तट और वास्को-डि-गामा की मंजिल! यही तो है गोवा का परिचय।

गोवा के पणजी दूरदर्शन केंद्र पर आज हम जिन मेहमानों का स्वागत कर रहे हैं, वे इन दिनों गोवा घूमने आए हुए हैं। ये सभी दूर-दूर के देशों के वासी हैं। यों तो भारतवासी ही लगते हैं, पर हैं ये विदेशी। मैं एक-एक करके इनका परिचय आपसे करवा रहा हूँ। आप हैं—श्री अनिरुद्ध जी—मॉरीशस निवासी (हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं)। आप हैं—कुमारी गिरिजा जी, ये फीजी की रहने वाली हैं (नमस्ते करती हैं) और आप हैं—सूरीनाम के श्री जुबराज जी (नमस्कार करते हैं)। आप सभी अपने-अपने देश में हिंदी के शिक्षक हैं। पिछले एक वर्ष से भारत में हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं। इस समय गोवा में छुट्टियाँ बिताने आए हैं।

हमने भी इस अवसर का लाभ उठाया। सोचा कि ये लोग हमारे प्रदेश को तो देखें ही, अपने-अपने देशों का परिचय भी हमारे दर्शकों को दें।

आप तीनों महानुभावों का गोवा दूरदर्शन केंद्र की ओर से हार्दिक स्वागत है। (आयोजक तीनों की ओर नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़ता है)

सुरेशः हाँ, तो अनिरुद्धजी! आप मॉरीशस के रहने वाले हैं। अपने देश के बारे में हमारे दर्शकों को कुछ बताइए।

अनिरुद्धः हमारा देश मॉरीशस हिंद महासागर में स्थित एक छोटा-सा टापू है। यहाँ की राजधानी पोर्ट-लुई है। यहाँ पर थोड़ी-सी वर्षा होने के बाद ही आसमान में इंद्रधनुष बन जाता है। इसीलिए हमारे देश को 'इंद्रधनुष का देश' भी कहते हैं। मॉरिशस में मुख्यतः दो ऋतुएँ हैं—सर्दी तथा गर्मी नवंबर से अप्रैल तक लगातार गर्मी रहती है। दिसंबर तथा जनवरी यहाँ के सबसे गर्म महीने हैं। मई से अक्तूबर तक सर्दी का मौसम रहता है। जुलाई और अगस्त में सबसे अधिक ठंड रहती है।

सुरेशः ठीक है अनिरुद्ध जी यह तो हुई मौसम की जानकारी। अब आप अपने देश की कुछ और भी विशेषताएँ हमें बताइए।

अनिरुद्धः (मुस्कराते हैं) आप लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे पूर्वज भारत, चीन, पाकिस्तान, अफ्रीका, फ्राँस तथा इंग्लैंड से आए थे। लेकिन इनमें भारतियों की संख्या सबसे अधिक है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग अपनी-अपनी भाषा बोलते हैं। पढ़े-लिखे लोग फ्रेंच बोलते हैं और सरकारी भाषा अंग्रेज़ी है।

सुरेशः अच्छा अनिरुद्ध जी आपने तो हमें बहुत अच्छी जानकारी दी। अब, वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य के विषय में भी बताइए।

अनिरुद्धः आप लोगों ने सुना ही होगा—वहाँ के समुद्र तटों का सौंदर्य! समुद्रतट के पास ही घना जंगल है। देश के दक्षिण ओर एक पहाड़ी झील है। यहाँ पर एक अद्‌भुत स्थान है—एक ही जगह पर सात रंग की मिट्टी। जमीन का यह हिस्सा बंजर है। परंतु इसके

चारों तरफ हरियाली है। हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि यहाँ अभी तक प्रदूषण की समस्या नहीं है।

सुरेशः धन्यवाद अनिरुद्ध जी। गिरिजा जी, अब आप भी अपने देश के बारे में कुछ बताइए।

गिरिजाः (मुस्कराते हुए) हाँ-हाँ, क्यों नहीं? मेरा देश फीजी तो एक द्वीप-समूह है। अगर उपमा दी जाए तो कहा जा सकता है जैसे सागर पर अनेक छोटे-बड़े मोती बिखेर दिए गए हों। गोवा और मॉरीशस की तरह यह भी अधिकतर पहाड़ी प्रदेश है। यहाँ पर वर्षा अधिक होती है और नदियाँ भी बहुत-सी हैं। चारों तरफ घने जंगल हैं। मेरा देश प्रशांत महासागर का सबसे सुंदर देश है।

सुरेशः धन्यवाद गिरिजा जी! दर्शको! अभी हम सबने गिरिजा जी से उनके देश फीजी के बारे में सुना।

सुरेशः अच्छा, जुबराज जी! अब आप भी सूरीनाम के बारे में कुछ कहिए।

जुबराजः मेरा देश सूरीनाम स्वतंत्रता से पहले डच-गयाना कहलाता था। यहाँ पर भी घने जंगल हैं। इसलिए वर्षा अधिक होती है। अटलांटिक महासागर की चंचल लहरें हमारे देश के चरण पखारती हैं। यहाँ की भौगोलिक स्थिति के बारे में तो आप भूगोल की पुस्तक में भी पढ़ सकते हैं, इसलिए मैं आपको एक छोटी-सी कथा सुनाता हूँ:

कांजी नाम का एक गाँव था। उस गाँव में परशुराम नाम का एक लड़का रहता था। वह लड़का सुनीता नाम की एक लड़की से बहुत प्यार करता था। वे दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते

थे। अक्सर दोनों साथ-साथ रहते थे। एक दिन वे दोनों घूमते-घूमते एक पेड़ की छाया में बैठ गए और बातें करने लगे। उसी पेड़ के ऊपर एक किसान बैठा था। वह पेड़ के ऊपर से अपनी खोई हुई गाय को ढूँढ़ रहा था। अचानक किसान को सुनाई पड़ा—"सुनीता जब मैं तुम्हारी आँखों में झाँकता हूँ, तो मुझे सारी दुनिया दिखाई देती है।" किसान परशुराम की यह बात सुनते ही पेड़ से नीचे उतर आया। वह परशुराम से कहने लगा—"बेटा! क्या सचमुच तुझे इस लड़की की आँखों में सारी दुनिया दिखाई देती है?" परशुराम ने कहा—"हाँ बाबा! मुझे पूरी दुनिया दिखती है।" किसान खुश होकर तुरंत बोल पड़ा—"तो ज़रा मेरी खोई हुई गाय को देखकर बताओ कि वह इस समय कहाँ पर है?" (सभी लोग हँसते हैं)

सुरेशः गिरिजा जी, मैं चाहता हूँ कि आप हमारे दर्शकों को कुछ और भी बताएँ। भारत से इन तीनों देशों की काफी दूरी है फिर भी क्या इनमें कुछ समानताएँ भी हैं?

गिरिजाः (हँसकर) हाँ सुरेश भाई! हमारे बीच भौगोलिक दूरियाँ हैं और थोड़ी-बहुत असमानताएँ भी हैं फिर भी हमारे देशों को भारत से जोड़ने वाला एक ही प्रमुख तत्व है और वह है—हमारा भारतवंशी होना। तीनों ही देशों के पूर्वज अनेक वर्षों पहले भारत से ही वहाँ पहुँचे थे।

सुरेशः अनिरुद्ध जी, हमारे-आपके बीच में क्या और भी कोई समानता है?

अनिरुद्धः (मुस्कराते हुए) जी हाँ सुरेश जी! हमारे-आपके बीच में सबसे बड़ी समानता भाषा की है। हम और आप दोनों ही हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं।

सुरेशः जुबराज जी, आप इस बारे में क्या सोचते हैं?

जुबराजः हम और आप इस समय जो हिंदी बोल रहे हैं, वही हमारे यहाँ के स्कूलों में भी पढ़ाई जाती है। पत्र-पत्रिकाएँ भी हिंदी में ही छपती हैं।

सुरेशः हमारे कुछ और भी पड़ोसी देश हैं जिनमें भारत-वंशी रहते हैं। वे भी हिंदी बोलते हैं।

जुबराजः जी हाँ! त्रिनिदाद और गयाना में भी भारत के लोगों की काफी संख्या है। सूरीनाम के अनेक प्रवासी भारतीय तो अब हॉलैंड में बस गए हैं। ये लोग भी हिंदी का प्रयोग करते हैं।

सुरेशः जुबराज जी, हम लोगों के बीच में क्या और भी कोई समानता है?

जुबराजः जी हाँ सुरेश जी! हमारे पूर्वज नए देशों में जाकर भी भारतीय त्योहार मनाते रहे। आज भी हम लोग होली के अवसर पर झाँझ, मंजीरा और ढोलक के साथ "फगुआ" गाते हैं। दीपावली और कार्तिक स्नान भी यहाँ की तरह ही मनाते हैं। हमारे और आपके यहाँ के शादी-विवाह के रीति-रिवाज़ भी एक-जैसे हैं।

अनिरुद्धः जुबराज जी, आप ठीक कह रहे हैं। मॉरीशस में ये सभी त्योहार मनाए जाते हैं।

जुबराजः अनिरुद्ध जी! तुलसीदास ज़ी का 'रामचरितमानस' भी तो हमें आपस में जोड़ता है।

सुरेशः जुबराज जी, आपने बहुत ठीक कहा। राम-कथा तो इंडोनेशिया, जावा, सुमात्रा, थाईलैंड, बाली आदि द्वीपों तक भी पहुँच चुकी है।
(सभी एक स्वर में) जी हाँ! जी हाँ!

सुरेशः आप लोगों से बातें तो बहुत करनी थीं, लेकिन परिचर्चा का समय

पूरा होने वाला है। संकेत भी मिल चुका है। इसलिए अब इस प्रसंग को हम यहीं समाप्त करते हैं। आप सबको गोवा दूरदर्शन केंद्र की ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद!

हमारे दर्शकों की ओर से भी आप सभी को धन्यवाद और शुभकामनाएँ।

(कार्यक्रम समाप्त)

प्रश्न-अभ्यास

पढ़ो और बोलो

(क)

महाद्वीप	दूरदर्शन	संघ
परिसंवाद	समृद्धि	शताब्दी
प्रशिक्षण	महानुभाव	संस्कृति
परीक्षा	हार्दिक	व्यवहार
धूम-धाम		

(ख) सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. आप हैं श्री अनिरुद्ध– मॉरीशस निवासी।
2. आप भी कुछ बताइए गिरिजा जी, अपने देश के बारे में।
3. और कोई समानता का तत्व? आप बताइए, अनिरुद्धजी।
4. आपके देशवासियों के लिए हमारी शुभकामनाएँ।
5. बहुत-बहुत धन्यवाद!

II पढ़ो और समझो

(क)

परिसंवाद = आपस की बातचीत
संयोजक = किसी भी कार्यक्रम का संयोजन करने वाला
पखारना = धोना
अभिवादन = नमस्कार, नमस्ते
अध्ययन = पढ़ाई
महानुभाव = आदरणीय व्यक्ति
समृद्धि = आर्थिक उन्नति, खुशहाली
फगुआ = होली के अवसर पर गाए जाने वाला लोकगीत
झाँझ = डफली जैसा वाद्य
मंजीरा = एक प्रकार की धातु का बना हुआ वाद्य, जो कि जोड़े में बजाया जाता है।
कार्तिक नहान = कार्तिक माह में पवित्र नदी में स्नान करना।
पूर्वज = पुरखे
छोर = किनारा
पीढ़ी = वंश-परंपरा की पहले या बाद वाली कड़ी

ख. वासी – निवासी
वासी – प्रवासी
देशी – विदेशी

ग. दक्षिण → दक्षिणी
भूगोल → भौगोलिक
गोआ → गोआनी

घ. महाद्वीप – उपमहाद्वीप
सागर – महासागर
चर्चा – परिचर्चा
संवाद – परिसंवाद

ङ 1. **हरे-भरे** पर्वत हैं।
2. **कल-कल करती** नदियाँ हैं।
3. **ऊँचे-ऊँचे** मंदिर हैं।
4. **धरती के पाँव पखारते** सागर–तट हैं।

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाओ :

उदाहरण :	मोहन सोहन से छोटा है (बड़ा) सोहन मोहन से बड़ा है।

1. आम अमरूद से मंहगा है।
....................................(सस्ता)
2. सीता शीला से मोटी है।
....................................(पतली)
3. दिल्ली शहर चंडीगढ़ से पुराना है।
....................................(नया)
4. हिमालय विंध्याचल से ऊँचा है।
....................................(नीचा)

ख. सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरो :
जानती, मालूम, आती, जानता, पता, आता।
1. राधा को कार चलाना....................है।

2. राघव को हिंदी.....................है।
3. रमेश मेरे घर का पता...................है।
4. वेंकटेश को डॉक्टर का नाम...............है।
5. मुझे.......................है कि आप कहाँ गए थे।
6. दीपा टाइप करना......................है।

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. इंद्रधनुष का देश किसे कहा जाता है?
2. फीजी की क्या विशेषताएँ हैं?
3. भाषा के अतिरिक्त और कौन से समान तत्व हैं जो सूरीनाम, मॉरीशस और फीजी को भारत से जोड़ते हैं?
4. सूरीनाम की कहानी अपने शब्दों में सुनाओ।
5. मॉरीशस के मौसम, जलवायु और प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन करो।

ख. दिए गए शब्दों को सही स्थान पर भरो :
दर्शकों, छोर, डच-गयाना, परिच्र्चा, प्रवासी
1. सूरीनाम दक्षिणी अमरीका महाद्वीप के उत्तरी..................पर स्थित है।
2. संयोजक ने......................से विदेशी मेहमानों का परिचय कराया।
3. ....का समय पूरा होने वाला है।
4. सूरीनाम के अनेक...............भारतीय अब हॉलैंड में हैं।
5. सूरीनाम स्वतंत्रता से पहले.................कहलाता था।

V. पढ़ो और लिखो

1. भारत हमारे पूर्वजों की भी जन्मभूमि है।

2. फीजी प्रशांत महासागर के दक्षिणी भाग में स्थित है।
3. त्रिनिदाद में भारतवंशी हिंदी बोलते हैं।
4. हमारे पूर्वज नए देशों में जाकर भी भारतीय त्योहार मनाते रहे।

VI योग्यता-विस्तार

अपने पुस्तकालय से मॉरीशस, सूरीनाम और फीजी के विषय में पुस्तकें लेकर पढ़ो।

पाठ 28

दूर-संचार के साधन

संरचना-संकेत

ना होगा (जाना होगा) -सक, आज्ञार्थक

पुराने ज़माने में संदेश भेजने के अनेक साधन थे। दूत, दूती आदि के अलावा यह काम पशु-पक्षियों से भी लिया जाता था। इस काम के लिए कबूतरों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता था। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद वे सही

जगह पर सही आदमी तक संदेश पहुँचा देते थे। संदेश भेजने के लिए कभी-कभी घोड़ों और ऊँटों का प्रयोग भी किया जाता था।

इस व्यवस्था की एक बड़ी विशेषता यह थी कि मार्ग में 100-125 किलोमीटर की दूरी पर पड़ाव बने होते थे। घोड़ा एक स्थान से चलकर लगभग एक पड़ाव की दूरी तय करता था। वहाँ से वह डाक दूसरे घोड़े के द्वारा अगले पड़ाव तक भेजी जाती थी। इस प्रकार रास्ते में जगह-जगह पर घोड़े और घुड़सवार बदलते जाते थे और डाक अपने स्थान पर पहुँच जाती थी। मध्यकाल में संदेश लाने और ले जाने वाले व्यक्ति को 'हरकारा' कहा जाता था। इस समय तो वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के कारण यातायात के अनेक साधनों का आविष्कार हो गया है इसलिए अत्यधिक दूर स्थानों पर भी संदेश भेजना अब सरल हो गया है।

प्रत्येक व्यक्ति अपना संदेश शीघ्र पहुँचाना चाहता है। अब डाक-व्यवस्था द्वारा जल्दी संदेश भेजना संभव हो गया है। रेल और हवाई जहाज़ से डाक एक स्थान से दूसरे स्थान पर बहुत जल्दी पहुँच जाती है। अब तो संदेश भेजने के लिए पोस्टकार्ड या अंतर्देशीय पत्र आदि लिखकर पत्र-पेटिका (लैटर-बॉक्स) में डालिए, बस चार-पाँच दिनों में आपका संदेश लिखे हुए पते पर पहुँच जाएगा। पत्र को सुरक्षित पहुँचाने के लिए पंजीकरण (रजिस्ट्री) की व्यवस्था है। संदेश को जल्दी पहुँचाने के लिए तीव्रगामी-डाक (स्पीड पोस्ट) और कूरियर-सर्विस भी हाज़िर है। यदि संदेश और भी जल्दी भेजना हो तो तार, टेलैक्स और फ़ैक्स आपकी सेवा में उपस्थित हैं। तार व्यवस्था के बारे में तो आप जानते ही हैं। आपने पुलिस वालों के हाथ में एक छोटा-सा उपकरण देखा होगा। इसे बेतार का तार (वायरलैस सैट) कहते हैं। इसके द्वारा भी संदेश का आदान-प्रदान होता है। इसी के विकसित रूप टेलैक्स और फ़ैक्स हैं। टेलैक्स द्वारा संदेश एक जगह टाइप किया जाता है और दूसरी जगह वहाँ

रखी मशीन पर अपने-आप टाइप होकर निकलता जाता है। फ़ैक्स मशीन के द्वारा लिखा या छपा हुआ संदेश ही नहीं बल्कि उस पर छपी तस्वीर तक प्राप्तकर्ता को ज्यों-की-त्यों और तत्काल प्राप्त हो जाती है। समाचार-पत्रों और कार्यालयों में इनका बहुत उपयोग होता है। समाचारपत्र आज दूर-संचार के सशक्त माध्यम बन गए हैं। हमारे देश में समाचारपत्रों का बहुत विस्तार हुआ है। ये रोज़ाना देश-विदेश की ताज़ा खबरें लेकर हाज़िर रहते हैं।

दूरभाष (टेलीफोन) के आविष्कार ने देश और काल की दूरी खत्म कर दी है। आप नंबर मिलाइए और सीधे बात कर लीजिए। यदि घर में दूरभाष की व्यवस्था नहीं है तो निकट के दूरभाष-केंद्र, बस-स्टेंड, रेलवे स्टेशन और डाकघर में भी यह सुविधा उपलब्ध है। अब तो स्थान-स्थान पर खुले एस.टी. डी. केंद्रों से भी बात कर सकते हैं। अभी भारत में यह सुविधा प्रायः नगर और महानगरों के निवासियों को ही मिल पाई है। धीरे-धीरे यह सुविधा दूर-दराज़ के गाँवों तक भी पहुँच रही है।

रेडियो और दूरदर्शन जन-संचार के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इनसे हम विभिन्न प्रकार के कार्य—जैसे; वार्ताएँ, परिचर्चा, साक्षात्कार, कहानी, नाटक, संगीत, विज्ञापन आदि सुनते और देखते हैं। हम इनसे आनंद प्राप्त करते हैं और जानकारी भी हासिल करते हैं। दूरदर्शन पर तो हम वाचकों, अभिनेताओं, दृश्यों और घटनाओं को अपनी आँखों से देख भी सकते हैं। यह सुख रेडियो से संभव नहीं है। इन दोनों दूर-संचार-माध्यमों का हमारे जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। अब वे केवल मनोरंजन के ही साधन नहीं रहे, बल्कि शिक्षा के प्रभावी माध्यम भी सिद्ध हो रहे हैं। दूरदर्शन पर विद्यार्थी विभिन्न विषयों के बारे में घर बैठे ही आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। प्रयोगशाला में गए बिना विज्ञान के प्रयोग सीख सकते हैं। प्रसिद्ध इमारतों, किलों, पर्वतों तथा समुद्री जीव-जंतुओं को देख सकते हैं। दूर-दराज़ के क्षेत्रों में होने वाले
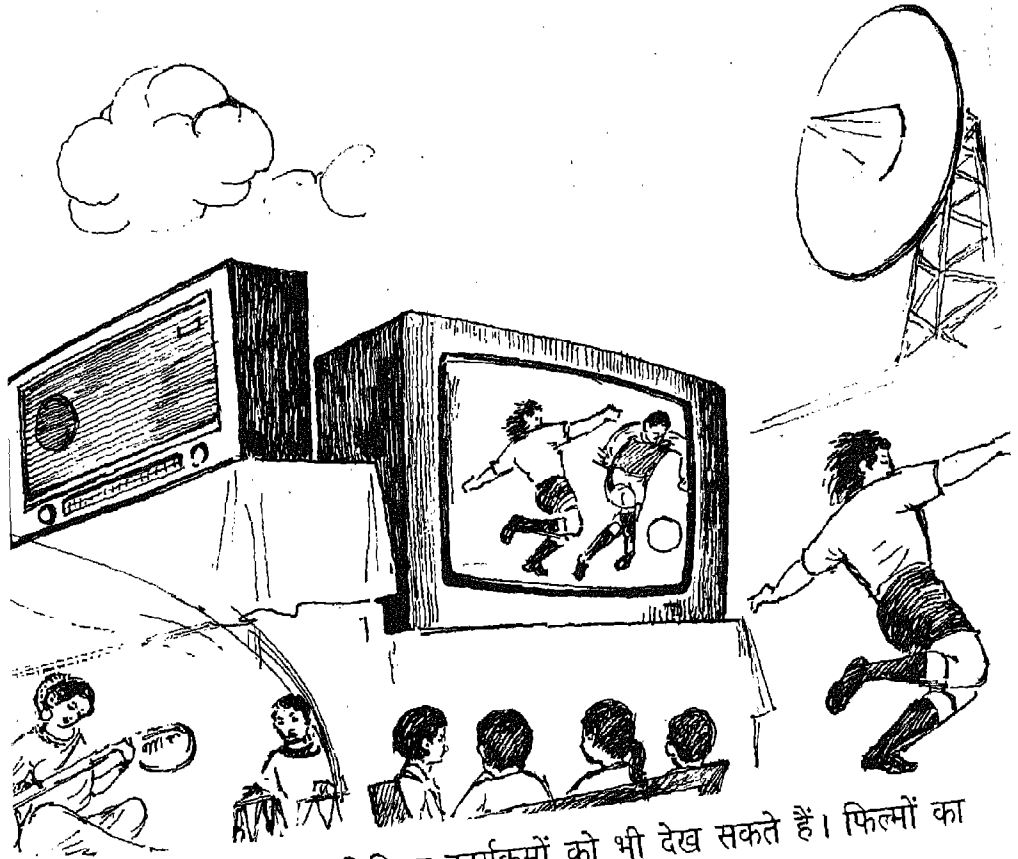
खेल-कूद, सभा आदि के विभिन्न कार्यक्रमों को भी देख सकते हैं। फिल्मों का आनंद तो लेते ही हैं।

आज यह भी संभव हो गया है कि अस्पताल के बंद कमरे में होने वाले ऑपरेशन के चित्र दूरदर्शन पर देखे जाते हैं। सबसे आश्चर्यजनक घटना थी—पहली बार दूरदर्शन पर चंद्रमा की सतह के चित्रों का दिखाया जाना। रूस ने अपना एक उपग्रह चंद्रमा की ओर भेजा था। उसमें एक ऐसा कैमरा लगा दिया गया था, जिसने लगभग चार लाख किलोमीटर की दूरी से वहाँ के चित्र पृथ्वी पर भेजे थे। यही चित्र दूरदर्शन पर दिखाए गए थे।

इतना ही नहीं, अब तो यह भी संभव हो गया है कि दूरदर्शन की भाँति दूरभाष पर भी बोलने और सुनने वाले एक दूसरे का चेहरा और मुख-मुद्राएँ देख सकते हैं।

आपने देखा! हम संचार के साधनों के क्षेत्र में कितना आगे बढ़ गए हैं! किंतु यह विकास अभी रुका नहीं है, ज़ारी है।

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क.	संदेश	प्रशिक्षण	प्रशिक्षित
	व्यवस्था	पड़ाव	वैज्ञानिक
	आविष्कार	अंतर्देशीय	पंजीकरण
	तीव्रगामी	उपकरण	कार्यालय
	महत्त्वपूर्ण	साक्षात्कार	आश्चर्यजनक
	उपग्रह	मुद्राएँ	पृथ्वी

II. पढ़ो और समझो

क.	प्रशिक्षित करना	=	विशेष शिक्षा देना, सिखाना
	पड़ाव	=	रास्ते में ठहरने का स्थान
	घुड़सवार	=	घोड़े की सवारी करने वाला
	आविष्कार	=	खोज
	व्यवस्था	=	इंतज़ाम, प्रबंध
	आदान-प्रदान	=	लेना-देना।
	तत्काल	=	एकदम, तुरंत, उसी समय

निरंतर = लगातार, बिना रुके
मुख-मुद्राएँ = भावों के अनुसार चेहरे के उतार-चढ़ाव
सशक्त = शक्तिशाली, मज़बूत
दूर-दराज़ = बहुत-दूर

ख. पुराना × नया
व्यवस्था × अव्यवस्था
उपयोग × दुरुपयोग
अंदर × बाहर
संभव × असंभव
सुविधा × असुविधा
सुरक्षित × असुरक्षित

ग. विज्ञान → वैज्ञानिक
तकनीक → तकनीकी
प्रभाव → प्रभावी
सुरक्षा → सुरक्षित
प्रशिक्षण → प्रशिक्षित
क्षेत्र → क्षेत्रीय

घ. 1. कबूतरों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता था।
कबूतरों को विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाता था।
2. संदेश भेजने के लिए जानवरों का प्रयोग किया जाता था।
संदेश भेजने का काम जानवर करते थे।
3. प्रत्येक व्यक्ति अपना संदेश शीघ्र पहुँचाना चाहता है।
प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसका संदेश शीघ्र पहुँचे।

4. आप नंबर मिलाइए और सीधे बात कर लीजिए।
   आप नंबर मिलाकर सीधे बात कर लें।
5. इनसे हम आनंद प्राप्त करते है।
   इनसे हमें आनंद मिलता है।

III. संरचना-अभ्यास

(क) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
राम बाज़ार जाएगा →
→ राम को बाज़ार जाना होगा।

1. मरीज़ दवा पिएगा।
   ....
2. हम देर तक काम करेंगे।
   ....
3. राधा भाभी जल्दी उठेंगीं।
   ....
4. आज हम जल्दी जाएँगे।
   ....

(ख) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
तुम आइसक्रीम खा सकते हो →
→ क्या तुम आइसक्रीम खा सकोगे?

1. आप बाज़ार जा सकते हैं?
   ....

2. तुम ऑफिस आ सकते हो?

....

3. बच्चे पार्क में खेल सकते हैं?

....

4. रागिनी बस से दिल्ली जा सकती है?

....

5. मरीज़ कल घर आ सकता है?

....

(ग) उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

> **उदाहरण :**
> मैं रूसी पढ़ लूँगा।
> → मैं रूसी **पढ़ सकूँगा** ।

1. मैं काफी पी लूँगा।

....

2. मैं साइकिल चला लूँगा।

....

3. मोहन तेज दौड़ लेगा।

....

4. पद्मा कपड़े धो लेगी।

....

5. मैं नदी में तैर लूँगा।

....

(घ) "आप" का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को उदाहरण के अनुसार बदलो :

उदाहरण :
तुम बाज़ार से सब्ज़ी ले आओ →
आप बाज़ार से सब्ज़ी ला दीजिए (लाइए)।

1. तुम मिठाई खाओ।
   ....
2. तुम अखबार पढ़ो।
   ....
3. तुम नाश्ता करो।
   ....
4. तुम कमरे में बैठो।
   ....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. पुराने जमाने में संदेश कैसे भेजा जाता था?
   2. घोड़ों द्वारा संदेश भेजने की क्या व्यवस्था थी?
   3. आज के युग में संदेश भेजना आसान क्यों हो गया है?
   4. बेतार के तार की क्या उपयोगिता है?
   5. दूरभाष का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?

(ख) 1. "क" स्तंभ के शब्दों/पदबंधों का "ख" स्तंभ में दिए गए वाक्यों के साथ मिलान करो :

(क)	(ख)
अ. रेडियो और दूरदर्शन	संदेश को जल्दी पहुँचाने का माध्यम है।
ब. समाचारपत्र	संदेश पहुँचाने वाला आदमी है।
स. पंजीकरण	दूर संचार के महत्वपूर्ण साधन हैं।
द. हरकारा	पत्र को सुरक्षित पहुँचाने की व्यवस्था है।
ङ. तीव्रगामी डाक	जन-संचार का सशक्त माध्यम है।

ग. दिए गए शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरो :

हरकारा, डाक-व्यवस्था, कबूतर, फ़ैक्स, प्रयोगशाला

अ. पहले संदेश भेजने का काम·········भी किया करते थे।

ब. संदेश भेजने वाले व्यक्ति को···············कहा जाता है।

स. ···············ने संदेश भेजने के काम को आसान कर दिया है।

द. विज्ञान के प्रयोग···············में किए जाते हैं।

ङ. संदेश को तुरंत पहुँचाने का माध्यम···············है।

घ. दिए गए परसर्गों की सहायता से अनुच्छेद पूरा करो। एक परसर्ग का प्रयोग एक से अधिक बार भी किया जा सकता है:

तक, का, से, में, को, के, पर, के लिए

पुराने ज़माने·······संदेश भेजने·········काम कबूतरों·······लिया जाता था। इस काम के·······कबूतरों·········विशेषरूप·········प्रशिक्षित किया जाता था। इससे पहले किसी आदमी·······भेज कर संदेश पहुँचाया जाता था। अब तो वैज्ञानिक विकास के कारण यातायात··········साधनों··········आविष्कार हो गया है। आज डाक एक स्थान······दूसरे स्थान··········बहुत जल्दी पहुँच जाती है।

V. पढ़ो और लिखो

रेडियो और दूरदर्शन जन-संचार के महत्वपूर्ण साधन हैं। इनमें हम विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम-समाचार, वार्ताएँ, परिचर्चा, साक्षात्कार, कहानी नाटक, संगीत, विज्ञापन आदि सुनते और देखते हैं। इनसे हम आनंद प्राप्त करते हैं और जानकारी भी हासिल करते हैं।

VI. योग्यता-विस्तार

1. अपने विज्ञान के अध्यापक से "टेलैक्स" और "फ़ैक्स" द्वारा संदेश भेजने की प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करो।
2. पोस्ट-ऑफ़िस में जाकर मनीआर्डर का फ़ार्म भरो और अपने अध्यापक को लाकर दिखाओ।

पाठ 29

ऐसा था दारा

संरचना -संकेत

अगर ...... तो
ना - चाहिए
कर्ता + से (कि-पढ़े)
(आप करें)

(दिल्ली का लाल किला। शाहजहाँ का दरबार। कुछ दरबारी और मनसबदार बैठे हैं। इनमें जसवंत सिंह और जयसिंह भी हैं। कुछ मौलवी और पंडित हैं। शाहजहाँ की दाहिनी तरफ दारा बैठा है।)

शाहजहाँ : (जसवंत सिंह से) जसवंत सिंह! सुना है, जानवरों के मारने पर कुछ हिंदू नाराज़ हैं?

जसवंत सिंह : जहाँपनाह, कुछ पशु-पक्षी ऐसे हैं, जिन्हें हिंदू पूजते हैं। वे चाहते हैं कि उनका वध न किया जाए।

मौलवी : ऐसा कैसे हो सकता है जहाँपनाह!

दारा : इस्लाम उस काम को उचित नहीं मानता जिससे दूसरों की भावनाओं को ठेस पहुँचे।

मौलवी : जिसे हुकूमत ने उचित समझा है तो उसे अनुचित कैसे कह सकते हैं?

शाहजहाँ : लेकिन क्या हुकूमत अपने फैसले पर फिर से गौर नहीं कर सकती?

दारा : जी हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ। खुदा की बनाई इस दुनिया की हर चीज़ अनमोल है। ये चहचहाती चिड़ियाँ,

ये खिले हुए फूल, ये उछलते-कूदते जानवर! सही नज़र से देखिए, तो सबमें खुदा का ही नूर दिखाई देता है।

मौलवी : जहाँपनाह, मैं साहबज़ादे की समझ की तारीफ़ करता हूँ। लेकिन जरूरत पड़ने पर कभी-कभी ऐसे फ़ैसले भी लेने पड़ते हैं जिनसे दूसरों को तकलीफ़ हो सकती है।

दारा : हमारे लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपनी प्रजा को तकलीफ़ न होने दें। सारी प्रजा को एक मानकर चलें, चाहे हिंदू हो या मुसलमान। हुकूमत की तरफ से किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचाई जाए। हमारे दादा-परदादा के भी यही विचार थे।

शाहजहाँ : शाबाश शहज़ादे! हमें खुशी है कि तुम्हारे दिल में जनता का इतना ख़्याल है। हमारा फ़ैसला है कि आज के बाद उन जानवरों और पक्षियों को न मारा जाए, जिनका हिंदू आदर करते हैं।

(दरबान का प्रवेश)

दरबान : जहाँपनाह, बनारस के कवींद्र आचार्य कुछ लोगों के साथ दरबार में पेश होने की इज़ाज़त चाहते हैं।

शाहजहाँ : इजाज़त है। उन्हें अदब के साथ ले आओ।

दरबान : जो हुक्म जहाँपनाह।

(दरबान जाता है। कवींद्र आचार्य आते हैं। साथ में चार-पाँच पंडित भी हैं।)

कवींद्र आचार्य : सम्राट की जय हो। जहाँपनाह, आपकी अदालत में हमें हमेशा न्याय मिला है। हम एक प्रार्थना लेकर आए हैं।

शाहजहाँ : कहिए, आप क्या कहना चाहते हैं आचार्य?

कवींद्र आचार्य : महाराज, काशी एक महत्वपूर्ण तीर्थ है। वैसे तो इस देश में सैकड़ों तीर्थ हैं। परंतु जब से हुकूमत की ओर से तीर्थयात्रा पर कर लगाया गया है, तब से हमें बहुत परेशानी हो रही है।

शाहजहाँ : इससे आप जैसे लोगों को कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए। यह पैसा शाही खज़ाने में जमा होता है। इससे जनता की भलाई के काम किए जाते हैं।

कवींद्र आचार्य : तीर्थयात्रा भी तो अपने में भलाई और पुण्य का ही काम है जहाँपनाह! पुण्य के काम पर कर नहीं लगाना चाहिए।

मौलवी : तीर्थयात्रा भलाई का काम कैसे है?

दारा : मैं बताता हूँ—ऐसे ही जैसे काबा जाना। जिस तरह आपके लिए काबा है, उसी तरह हिंदुओं के लिए काशी है।

शाहजहाँ : हम खुश हुए शहज़ादे! तुम हिंदू-मज़हब के बारे में बहुत-कुछ जानते हो। लगता है, तुम्हें बहुत अच्छी तालीम मिल रही है।

दारा : यह आपकी ही मेहरबानी है अब्बा हुज़ूर! आपने पंडित शिवकुमार शास्त्री जैसे विद्वान को मेरी तालीम के लिए रखा। उनसे मैंने 'गीता' और 'योगवासिष्ठ' पढ़ा। आजकल मैं कुछ उपनिषदों का अनुवाद कर रहा हूँ। हिंदू-मज़हब सचमुच अनोखा है!

शाहजहाँ : बहुत खूब! बहुत खूब! फिर हमारे मज़हब और हिंदू-मज़हब में फ़र्क क्या है?

दारा : कोई खास नहीं अब्बा हुज़ूर! दोनों मज़हबों की बहुत-सी बातें मिलती-जुलती हैं। बस, इबादत का तरीका अलग-अलग है।

शाहजहाँ : इस तीर्थयात्रा-कर के बारे में तुम्हारी क्या राय है?

दारा : मेरी राय बड़ी साफ़ है। हुज़ूर, जनता को जिस काम से तकलीफ़ हो या उनके विश्वास को ठेस पहुँचे, वह काम नहीं करना चाहिए।

शाहजहाँ : हम तुम्हारे इस विचार की तारीफ़ करते हैं। यह ऐलान कर दिया जाए कि आज से तीर्थयात्रा पर कोई कर नहीं लगेगा।

कवींद्र आचार्य : सम्राट की जय हो!

सभी : जहाँपनाह का इकबाल बुलंद हो!

(सभी का प्रस्थान)

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

क. ज़ाहिर — विद्वान — पंडित
तकलीफ़ — उपनिषद् — कवींद्र
तारीफ़ — योगवासिष्ठ — बुलंद
हुज़ूर — आचार्य — सल्तनत
इजाज़त — तीर्थयात्रा — पुण्य

ख. सही अनुतान के साथ पढ़ो :

1. ऐसा कैसे हो सकता है जहाँपनाह?
2. शाबाश शहजादे!
3. इजाज़त है। उन्हें अदब के साथ ले जाओ।
4. जो हुक्म जहाँपनाह।
5. सम्राट की जय हो!
6. बहुत खूब, बहुत ख़ूब!
7. जहाँपनाह का इक़बाल बुलंद हो।

II. पढ़ो और समझो

क. हुकूमत = शासन
जहाँपनाह = महाराजा (जहाँ=संसार, पनाह=शरण),
संसार को शरण देने वाला (ईश्वर/राजा)
तकलीफ = कष्ट
हुक्म = आदेश
तालीम = शिक्षा
इबादत = पूजा
मज़हब = धर्म

ख. तारीफ़ करना
तकलीफ़ देना
इज्ज़त करना
फ़ैसला करना
प्रस्थान करना

ग. दादा हुजूर

साहबज़ादे
आचार्य
अब्बा हुज़ूर

घ. मुझे खुशी है → हमें खुशी है।
मैं फ़ैसला देता हूँ → हम फ़ैसला देते हैं।
मैं तारीफ करता हूँ → हम तारीफ़ करते हैं।

ड. भला → भलाई
बुरा → बुराई
अच्छा → अच्छाई
साफ़ → सफ़ाई

III. संरचना-अभ्यास

क. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलो :

उदाहरण :
तुम यह दरवाज़ा नहीं खोल सकते →
(क) तुम यह दरवाज़ा नहीं खोल सकोगे।
(ख) तुमसे यह दरवाजा नहीं खुलेगा।

1. तुम यह कार नहीं चला सकते।
   (क) ....
   (ख) ....
2. शीला खाना नहीं बना सकती।
   (क) ....
   (ख) ....

3. मोहन यह पेड़ नहीं काट सकता।
   (क) ....
   (ख) ....
4. तुम यह कपड़ा नहीं धो सकती।
   (क) ....
   (ख) ....

(ख)

उदाहरण :
तुम यह काम करो
→ आप यह काम न करें।

1. तुम यह किताब दो।
   ....
2. तुम घर जाओ।
   ....
3. तुम मेरे घर आओ।
   ....
4. तुम यह चित्र देखो।
   ....

ग.

उदाहरण :
तुम अब घर जाओ
→ तुम्हें अब घर जाना चाहिये।

1. तुम अब दिल्ली जाओ।
   ....
2. तुम अब अच्छी किताब पढ़ो।
   ....

3. तुम अब मेला देखो।

....

4. तुम अब पहला पाठ पढ़ो।

....

घ.

उदाहरण :
मोहन पढ़ना नहीं चाहता
→मोहन से कहो कि वह **पढ़े**।

1. पिताजी दवा नहीं खाना चाहते।

....

2. राकेश दिल्ली नहीं जाना चाहता।

....

3. रागिनी परीक्षा की तैयारी नहीं करना चाहती।

....

4. श्याम सुबह व्यायाम नहीं करना चाहता।

....

ङ.

उदाहरण :
शायद बस देर में मिले, आप टैक्सी से आ जाइए।
→ अगर बस देर में मिले तो आप टैक्सी से आ जाइए।

1. शायद बारिश हो। आप छाता ले लीजिए।

....

2. शायद लड्डू बासी मिलें। आप बर्फ़ी ले आइएगा।

....

3. शायद आज छुट्टी हो। मैं सिनेमा जाऊँगा।

....

4. शायद आज आँधी आए। तुम बाहर मत निकलना।
....

IV. पढ़ो और बताओ

क. 1. जानवरों के मारने पर हिंदू क्यों नाराज़ थे?
2. खुदा का नूर कहाँ-कहाँ दिखाई देता है?
3. शाहजहाँ ने दारा की बात को सुनकर क्या फ़ैसला दिया?
4. कवींद्र आचार्य सम्राट के पास कौन-सी प्रार्थना लेकर पहुँचे?
5. प्रजा के बारे में दारा के क्या विचार थे ?

ख. 1. सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाओ :
शाहजहाँ ने तीर्थ यात्रा कर हटा दिया, क्योंकि :
अ. वे कवींद्र आचार्य की बात मानते थे।
ब. वे हिंदू थे।
स. वे मौलवी की बात से असहमत थे।
द. वे दारा के विचारों से प्रभावित थे।

ग. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से खाली-स्थान भरो।
(न्याय, पुण्य, वध, इबादत)
अ. हिंदू चाहते थे कि जानवरों का......न किया जाए।
ब. शाहजहाँ की अदालत में सबको.........मिलता था।
स. तीर्थ यात्रा.........का काम होता है।
द. हर मज़हब में............का तरीका अलग-अलग है।

V. पढ़ो और लिखो

कवींद्र, योगवासिष्ठ, तीर्थयात्रा, पुण्य, इजाज़त, जहाँपनाह, प्रस्थान, उपनिषद्, आचार्य, विद्वान।

VI. योग्यता-विस्तार

क. प्रस्तुत पाठ को अपने शब्दों में कहानी के रूप में लिखो और सुनाओ।

ख. दारा के बारे में अपने इतिहास-अध्यापक की सहायता से कुछ और जानकारी प्राप्त करो।

पाठ 30

पूर्ण प्रकाश नहीं मानूँगा

मैंने बारंबार कहा है,
एक नहीं सौ बार कहा है,
एक फूल के खिल जाने को
मैं मधुमास नहीं मानूँगा।
ये कैसे बादल बरसे हैं,
सागर सरसे, गागर तरसे।
उस पानी की क्या कीमत है,
जो प्यासे के होंठ न परसे।
हर प्यासा पौधा लहराए
वह ही वर्षा-ऋतु कहलाए,
एक प्यास के बुझ जाने को,
सब की प्यास नहीं मानूँगा।।
कैसे झूठी खुशी मनाऊँ,
जबकि उदासी गई न सर से।
पाँव स्वतंत्र नहीं होते हैं,
बेड़ी के कट जाने भर से।
खुशियाँ लहराती हों ऊपर,
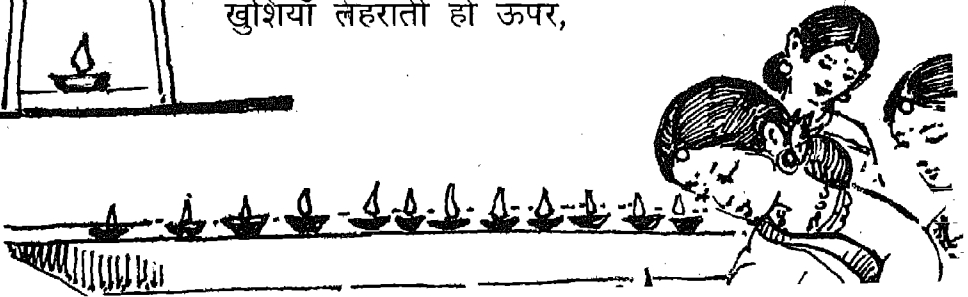
सुलगा हो मन अंदर-अंदर,
एक महल के सज जाने को,
मैं उल्लास नहीं मानूँगा।।
खुशबू तो मन की होती है,
मन से ही सूँघी जाती है।
केवल वस्त्र बदल देने से,
वह दुर्गंध नहीं जाती है।
द्वारे-द्वारे दीप जलाए,
दीपावली वही कहलाए,
एक दीप के जल जाने को,
पूर्ण प्रकाश नहीं मानूँगा।

–मधुर शास्त्री

प्रश्न-अभ्यास

I. पढ़ो और बोलो

बारंबार	प्यास	दीपावली
वर्षा-ऋतु	वस्त्र	गागर
दुर्गंध	सागर	खुशबू
मधुमास	उल्लास	प्रकाश

II. पढ़ो और समझो

क. बारंबार = बार-बार
मधुमास = बसंत ऋतु

सरसना = जल से भरना, शोभित होना, प्रसथ्न्न होना।
तरसना = किसी वस्तु को पाने के लिए बेचैन होना
परसना = छूना, स्पर्श करना
बेड़ी = बंधन
खुशबू = सुगंध
दुर्गंध = बदबू
द्वारे-द्वारे = प्रत्येक दरवाज़े पर
पूर्ण प्रकाश = सब ओर जगमग उजाला

ख. 1. एक फूल के खिल जाने को
मैं मधुमास नहीं मानूँगा।
2. उस पानी की क्या कीमत है
जो प्यासे के होंठ न परसे।
3. पाँव स्वतंत्र नहीं होते हैं
बेड़ी के कट जाने भर से।
4. द्वारे-द्वारे दीप जलाए
दीपावली वही कहलाए,

III. पढ़ो और पंक्ति पूरी करो

क. 1. हर प्यासा पौधा लहराए
....
2. ....

सुलगा हो मन अंदर-अंदर
3. मैंने बारंबार कहा है,
....

ख. नीचे दी हुई पंक्तियों में से सही को छाँट कर पंक्ति पूरी करो :

1. घर में घी के दीप जलाऊँ
   ....

   क. रंगभरी पिचकारी लाऊँ
   ख. बहना से राखी बँधवाऊँ
   ग. उछलूँ, कूदूँ, नाचूँ, गाऊँ
   घ. आखों से आँसू बरसाऊँ

2. लड्डू एक खिला देने को
   ....

   क. मैं मेहमानी नहीं मानूँगा
   ख. मैं जलपान नहीं मानूँगा
   ग. मैं गुणगान नहीं मानूँगा
   घ. मैं उपहार नहीं मानूँगा

IV. पढ़ो और बताओ

1. कवि ने बारंबार क्या कहा है?
2. किस पानी की कीमत नहीं है?
3. उल्लास कब माना जा सकता है?
4. कवि के अनुसार सच्ची दीपावली कब कहलाती है?
5. "पूर्ण प्रकाश" का आशय क्या है? सही उत्तर चुनो :
   क. सब ओर मिठाई बँट रही हो।
   ख. सब ओर शोर गूँज रहा हो।
   ग. सब ओर जगमग उजाला हो।
   घ. सब ओर पटाखे छूट रहे हों।

V. योग्यता-विस्तार

क. इस कविता को याद करो और प्रार्थना-सभा में लय के साथ सुनाओ।

ख. दीपावली या ईद से संबंधित कोई कविता याद करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

अ

अंजुलि	दोनों हाथों को मिलाकर बनी हुई आकृति
अंतर्ध्यान होना	दृष्टि से ओझल हो जाना
अकस्मात्	अचानक
अगवानी	स्वागत करना
अतिथिशाला	अतिथि या मेहमानों को ठहराने का स्थान
अतिशयोक्ति	किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना
अद्भुत	अनोखा
अधेड़	ढलती उम्र का
अध्ययन	पढ़ाई
अनमनी	उदास
अनहित	बुरा चाहने वाला, बुराई
अनुपम	जिसकी कोई उपमा न दी जा सके
अनुमति	इजाज़त, स्वीकृति
अनुरोध	निवेदन, प्रार्थना
अब्बा	पिता
अभियान	किसी विशेष उद्देश्य से किया जाने वाला प्रयास
अभिवादन	नमस्कार, नमस्ते
अरि	दुश्मन, शत्रु
अवरोध	बाधा
अविराम	बिना रुके
असंभव	जो न हो सकता हो

आ

आँख लगना (मुहावरा)	नींद आना, प्यार हो जाना, किसी वस्तु पर दृष्टि केंद्रित होना

आग बबूला होना (मुहावरा)	अत्यधिक क्रोध करना
आग्रह	अनुरोध, निवेदन
आजीवन	जीवन-भर
आत्म-केंद्रित होना	केवल अपने बारे में सोचना
आदान-प्रदान	लेन-देन
आबादी	जनसंख्या
आभार	एहसान, धन्यवाद
आयुर्वेद	चिकित्साशास्त्र
आयोजक	आयोजन करने वाला
आविष्कार	खोज
आशय	मतलब, अर्थ
आशा फलित	आशा पूरी होना
आश्चर्य का ठिकाना न रहना (मुहावरा)	बहुत हैरानी होना
आहुति	भेंट, बलिदान
औरों के हित	दूसरों के लिए, दूसरों की भलाई

इ

इंतज़ार	प्रतीक्षा
इजाज़त	आज्ञा
इनाम	पुरस्कार
इबादत	पूजा
इरादा	निश्चय

उ

उतावला	जल्दी करने वाला, हड़बड़ी मचाने वाला
उत्तीर्ण होना	पास होना, सफल होना
उत्थान	ऊँचा उठना, उन्नति

उत्सुक	बहुत इच्छुक
उधेड़-बुन	सोच-विचार
उल्लास	खुशी, प्रसन्नता

ए

एक ही साँस में कहना	बिना रुके कहना

क

कढ़ी	बाहर निकली, बेसन से बना खाद्य-पदार्थ
कद	शरीर की लंबाई
कब्ज़ा करना	हथिया लेना
करवाल	तलवार
करिश्मा	चमत्कार
कलगी	पगड़ी पर ऊपर की ओर खड़ा पंख, तुर्रा
काफ़िला	दल, जत्था, समूह
कामयाब	सफल
कार्यरत	काम में लगा हुआ
कार्यवाही	सभा में किए गए विचारों का संक्षिप्त विवरण
कार्यवृत्त	सभा की कार्यवाही का संक्षिप्त विवरण
कार्यसूची	सभा में विचार किए जाने वाले विषयों की सूची
काष्ठ	लकड़ी
किस्सा	कहानी, कथा
किस्सा गढ़ना	झूठी बात कहना
कुंज	झुरमुट
कुम्हलाना	मुरझाना
कोशिश	प्रयास
कौशल	चतुराई, कुशलता
क्षमता	सामर्थ्य, शक्ति

ख

खन	घायल

ग

गरिमा	गौरव, महानता
गिड़गिड़ाना	विनती करना
गिरि	पर्वत
गुत्थी	समस्या
गुरुदक्षिणा	अध्ययन की समाप्ति पर गुरु को दी जाने वाली भेंट
गुस्से से लाल होना	अधिक क्रोधित हो जाना
गौण	कम महत्त्व का

घ

घुड़सवार	घोड़े की सवारी करने वाला व्यक्ति

च

चकित	हैरान
चर्चा	बातचीत
चाह	इच्छा
चिकित्सा	इलाज
चुकना	समाप्त होना
चुनौती	ललकार
चुल्लूभर पानी में डूब मरना	बहुत शर्मिंदा होना
चौकन्ना	होशियार
चौकड़ी भरना	पशुओं की तेज़ चाल

छ

छितरे	फैले हुए, दूर-दूर स्थित
छोर	सिरा

ज

जड़मति	मूर्ख
जन-समूह	लोगों का समूह
जहाँपनाह	महाराजा, बादशाह, सम्राट
जादू चलना (मुहावरा)	बात का असर होना
जान में जान आना(मुहावरा)	घबराहट दूर होना
ज़ायकेदार	स्वादिष्ट
जुल्म	अत्याचार
ज़ेवर	आभूषण
जोखिम	खतरा
ज्योतिषाचार्य	ज्योतिष का विद्वान

झ

झंझट	मुसीबत
झिझकना	संकोच करना
झुँझलाहट	दुखी और क्रोधित होकर बात करना
झुरमुट	झाड़ियों और पेड़-पौधों का समूह
झूमना	आनंद में प्रसन्न होना

ट

टकटकी लगाना	बिना पलक झपकाए लगातार देखना
टुकड़ी	सैनिकों का दल

ड

डाली	टहनी

ढ

ढाल	तलवार, भाले आदि शस्त्रों के वार से बचने का एक साधन

त

तकलीफ़	कष्ट
तकल्लुफ	शिष्टाचार, दिखावा, संकोच
तज देना	त्याग देना
तत्काल	एकदम, तुरंत
तथास्तु	ऐसा ही हो
तन	शरीर
तपाक से	झट से, तुरंत
तबीयत	स्वास्थ्य, हालचाल
तरकीब	उपाय
तरसना	किसी वस्तु को पाने के लिए बेचैन होना
तलाश	खोज
ताना मरना	उलाहना देना
ताप	शरीर की गर्मी
तारीफ़	प्रशंसा, बड़ाई
तालीम	शिक्षा
तीमारदारी	रोगियों की सेवा
तुंग	ऊँचा

थ

थमाना	हाथ में देना

द

दंग रह जाना (मुहावरा)	चकित रह जाना

दक्ष	कुशल
दम घुटना (मुहावरा)	बेचैन होना
दुर्गंध	बदबू
दूर-दराज़	बहुत-दूर
दूषित करना	गंदा करना, बिगाड़ना
दूसरी दुनिया में रहना	कल्पना के संसार में रहना
दृढ़ता	मज़बूती
दैव	ईश्वर
द्वारपाल	दरवाज़े पर पहरा देने वाला
द्वारे-द्वारे	प्रत्येक दरवाज़े पर

ध

धन्यवाद ज्ञापन	धन्यवाद देना, धन्यवाद प्रकट करना
धब्बा	निशान, दाग़
ध्वज	झंडा
ध्वजारोहण	झंडा फहराना
धूल में मिलना (मुहावरा)	नष्ट होना

न

नज़र	दृष्टि
नटी	नाटक करने वाली अभिनेत्री
नद	नदी, बड़ा जल-स्रोत
नव-निर्वाचित	नए चुने हुए
नर-संहार	मनुष्यों का वध
नसीब	किस्मत, भाग्य
नामोनिशान न होना (मुहावरा)	बिल्कुल मिट जाना
निढाल	शिथिल, मरा हुआ-सा

निरंतर	लगातार
निराला	दूसरों से भिन्न, विशेष,
निर्भीक	जिसे भय न हो, निडर
निषंग	तरकश
नैन	आँखें, नेत्र

प

पंचाँग	ज्योतिष की वह पुस्तक जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण आदि लिखे रहते हैं।
पंछी	पक्षी
पंजीकरण	नाम दर्ज़ करना
पखारना	धोना
पड़ाव	ठहरने का स्थान
पथ्य	रोगी की स्थिति के अनुकूल दिया जाने वाला हल्का और पाचक भोजन
परजीवी	दूसरों के रक्त-माँस पर जीने वाले जीवाणु
परवाह	फ़िक्र, चिंता
परसना	छूना, स्पर्श करना
परहेज़	रोगी द्वारा हानिकारक वस्तुओं को न खाना, बचाव
पराजय	हार
परिसंवाद	आपस में बातचीत
परिसर	अहाता, क्षेत्र
पर्यटक	यात्री
पर्व	त्योहार
पर्वतारोहण	पहाड़ पर चढ़ना
पश्चात्ताप	पछतावा
पाथेय	सफ़र में खाने-पीने की सामग्री

पाला पड़ना	मुकाबला होना, सामना होना, बर्फ गिरना
पीढ़ी	वंशपरंपरा की पहले या बाद वाली कड़ी
पुतली फिरना	दृष्टि मुड़ना
पूर्ण प्रकाश	सब ओर जगमग उजाला
पूर्वज	पुरखे
प्रकट होना	दिखाई पड़ना
प्रक्षेपास्त्र	रॉकेट, दूर तक आक्रमण करने वाला हथियार
प्रणाली	तरीका, ढंग
प्रतिदिन	रोज़
प्रयास	कोशिश
प्रशिक्षित करना	शिक्षा देना, सिखाना
प्रसिद्ध	मशहूर
प्रस्ताव	सभा के सामने विचार के लिए रखी गई बात

ब

बक-बक करना	बेकार की बातें करना, अधिक बोलना
बड़बोली	बढ़चढ़ कर बात करने वाली
बतियाना	बातें करना
बदन	शरीर
बर्फीला	बर्फ जैसा ठंडा
बलिदान	निछावर, न्यौछावर
बसीकरण मंत्र	वशीकरण मंत्र, ऐसा मंत्र जिससे किसी को अपने वश में किया जा सके।
बाग	घोड़े की लगाम
बारंबार	बार-बार
बारिश	वर्षा
बीहड़	ऊबड़-खाबड़

बुद्धि पर परदा पड़ना (मुहावरा)	सही बात भी समझ में न आना
बेड़ी	बंधन, जंजीर
बेहद	जरूरत से ज्यादा
ब्रह्मराक्षस	वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु के कारण राक्षस या प्रेत हो गया हो।

भ

भयभीत	डरा हुआ
भविष्य	आने वाला समय
भव्य	विशाल, बहुत-बड़ा
भाल	माथा, ललाट
भाला	बरछा, तीखी नोक वाला एक हथियार
भावमुद्राएँ	भावों के अनुसार चेहरे के उतार-चढ़ाव

म

मंगलमय	शुभ
मज़हब	धर्म
मझधार	धारा के बीच में
मझधार में बढ़ना	खतरों के बीच बढ़ना
मटमैला	मिट्टी के रंग का
मधुमास	वसंत ऋतु
मनोरम	सुंदर
ममता	माँ-जैसा स्नेह-भाव, स्नेह
मरीज़	रोगी
मशहूर	प्रसिद्ध
महानुभाव	आदरणीय व्यक्ति
महासेतु	बड़ा पुल

माल हड़पना (मुहावरा)	दूसरों की संपत्ति पर जबरदस्ती अधिकार कर लेना
मासूम	भोला
मुँह में पानी आना (मुहावरा)	खाने की इच्छा होना, लालच
मुखिया	प्रधान, मुख्य-व्यक्ति
मुरीद	चेला, अनुयायी, भक्त
मुलाकात	भेंट
मुस्तैदी	तत्परता, चुस्ती
मुहूर्त	ज्योतिष के अनुसार शुभ कार्य के लिए निर्धारित समय
मृगशावक	हिरन का बच्चा
मेघालय	भारत के एक राज्य का नाम, मेघ + आलय = बादलों का घर
मैका (मायका)	माता-पिता का घर, पीहर
मैत्री	दोस्ती
मोर्चा	वह जगह जहाँ से युद्ध लड़ा जाए

य

यातना	कष्ट

र

रस्म	रीति, प्रथा
रोगाणु	रोग फैलाने वाले कीटाणु

ल

लक्षण	रोगसूचक चिह्न
लगातार	निरंतर
लचक कर चलना	लँगड़ा कर चलना
ललकार	मुकाबला करने के लिए चुनौती देना

लोभ	लालच

व

वज्रमय बादल-सा	बिजली की कड़क से भरे भयानक बादल
वफ़ादारी	निष्ठा, स्वामिभक्ति
वार	हमला
वास्ता होना	संबंध होना
विकराल	भयानक, डरावना
विचित्र	अनोखा
विधाता बाम होना (मुहावरा)	भाग्य विपरीत होना
विपदा	विपत्ति, संकट
विवरण	वर्णन, लेखा-जोखा
विवेक	समझ, भले-बुरे में भेद करने की क्षमता
वीरगति	युद्ध में मृत्यु हो जाना
वैयाकरण	व्याकरण का विद्वान्
व्यग्रता	अकुलाहट, बेचैनी
व्यवसाय	रोज़गार, धंधा
व्यवस्था	इंतज़ाम, प्रबंध
व्यवस्थापक	इंतजाम करने वाला, प्रबंधक
व्यवहार	उपयोग, प्रयोग
व्यस्त	काम में लगा हुआ

श

शक	संदेह
शिकंजा	पकड़
शिकन	सिलवट, चेहरे पर चिंता का भाव
शिकार बनना (मुहावरा)	धोखा खा जाना
शिखर	चोटी

शौर्य	शूरता, वीरता
श्रम	मेहनत
श्रमदान	बिना पैसा लिए कार्य करना

स

संगीतज्ञ	संगीत का जानकार
संग्राम	युद्ध
संपदा	सम्पत्ति
संपन्न	पूर्ण, समाप्त, समृद्ध
संशोधन	सुधार
सकपकाना	घबराना
सकल	समस्त, संपूर्ण
सजीला	सुंदर
सतर्क	सावधान, तर्क सहित
सदी	शताब्दी (सौ-वर्ष)
सनेह	स्नेह, प्यार
सबक	पाठ
समंदर	समुद्र, सागर
समतल	जिसकी सतह या तल बराबर हो
समवेत स्वर में	मिलकर एक आवाज़ में
समाधि	ध्यान में मग्न होने की क्रिया
समूह	दल
समृद्धि	आर्थिक उन्नति, खुशहाली, संपन्नता
सरपट दौड़ना	तेज भागना
सरसना	जल से भरना, शोभित होना, प्रसन्न होना
सर्वोत्तम	सबसे अच्छा
सलामी	विशेष अभिवादन

सलौना	सुंदर
सशक्त	शक्तिशाली, मजबूत
सह-अस्तित्व	साथ-साथ रहना, मिलकर काम करना
साहसी	हिम्मत रखने वाला, दिलेर
सिंगारदानी	शृंगार-सामग्री रखने की पेटी
सुजान	ज्ञानी, विद्वान
सौभाग्यशाली	अच्छे भाग्य वाला
स्रोत	सोता, झरना
स्वच्छंद	आज़ाद

ह

हड़पना	किसी वस्तु को गलत तरीके से ले लेना या हथिया लेना
हय	घोड़ा
हाथ मलना (मुहावरा)	पछताना
हाथी-पाँव	एक बीमारी, जिसमें रोगी के पैर फूलकर बहुत मोटे हो जाते हैं। ये बीमारी मच्छरों से फैलती है।
हादसा	दुर्घटना
हासिल	प्राप्त
हित	भला चाहने वाला, हितैषी, भलाई
हुकूमत	शासन
हुक्म	आदेश, आज्ञा